lsUkcks lsd

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ dk =Sekfld cqysfVu

vad 48] l[;k 3] tqykbZ&flrEcj] 2009

'kkjhfjd f'k{kk] LokLF; vkSj dq'kyrk Dyc

lsUkckslsd

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ dk =Sekfld cqysfVu

vad 48] la[;k 3] tqykbZ&flrEcj] 2009

ijke'kZnk=h lfefr

fouhr tks'kh] Hkk-iz-ls
अध्यक्ष एवं सचिव

,e-lh- 'kekZ
परीक्षा नियंत्रक

fp=ys[kk xq:efr
निदेशक (अकादमिक)

ihre flag
विभागाध्यक्ष (एडुसेट)

lEiknd h; eaMy

MkO lk/kuk ijk'kj
शिक्षा अधिकारी

vy fgyky vgen
सहायक शिक्षा अधिकारी

सेनबोसेक में प्रकाशित किसी लेखक लेख/योगदान में व्यक्त किए गए विचार बोर्ड के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 'शिक्षा केन्द्र' 2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली–110092 द्वारा प्रकाशित और चंदू प्रेस, डी–97, शकरपुर, दिल्ली–110092, दूरभाष : 22424396, 22526936 में मुद्रित।

v/;{k dh dye l-------

सी.बी.एस.ई. द्वारा समय–समय पर उठाये गये कदमों के संबंध में पूरे देश में दौरा करने के एक सिलसिले में मैं छात्रों के साथ मुलाकात करता रहा हूं । मैं ''इन्टरऐक्ट विद द चेयरमैन'' क्षेत्र (डोमन) के तहत वेबसाइट पर पूछे गए कुछ प्रश्नों का उत्तर भी देता रहता हूं । इन्हीं मुलाकातों के आधार पर बच्चों तथा शारीरिक शिक्षा के बारे में मेरे विचार और भी ठोस हो गये हैं । मुझे दुःख होता है कि शारीरिक शिक्षा, खेल–कूद तथा खेलों की उपेक्षा की जा रही है और उन्हें विद्यालय पाठ्यचर्या में हाशिये पर रख दिया गया है । जब मैं अपने बचपन की तुलना आज के छात्रों से करता हूं तो मुझे विद्यालय में बाल–सुलभ क्रीड़ाओं तथा शारीरिक क्रियाकलापों से प्राप्त उस आत्म विभोर करने वाले आनंद की याद आ रही है जबकि आज के सर्वोत्तम विद्यालय भी बच्चों को खेलने अथवा शारीरिक स्वस्थता कार्यकलापों तथा खेल–कूद में शामिल होने का पर्याप्त अवसर नहीं देते हैं ।

सीबीएसई ने विद्यालयों में 'हैल्थ एवं वेलनेस क्लब' स्थापित करने के लिए व ा 2006 में एक परामर्शी का अनुसरण करते हुए अपने ''व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम'' के अंतर्गत वर्ष 2008 में pkj LokLF; eSuqvy जारी किए थे । मैनुअल स्वास्थ्य को समग्र रूप से लेते हैं और पाठ्यचर्या शिक्षण में औपचारिक व अनौपचारिक उपागामों सहित स्वास्थ्य के विकास के लिए सभी शैक्षिक अवसरों को उपयोग में लाने की वकालत करते हैं । एक सुरक्षित विद्यालयी वातावरण प्रदान करना स्वास्थ्य संबंधी खतरों से बचने के लिए एक कार्यकलाप उन्मुखी स्वास्थ्य शिक्षा पाठ्यचर्या, शारीरिक स्वस्थता कार्यकलाप तथा खेलकूद सुनिश्चित करना, विद्यालय कैन्टीन में पो ाक अल्पाहार उपलब्ध कराना, प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा सेवाओं तक पहुंच और समेकित पारिवारिक तथा सामुदायिक गतिविधियां सुनिश्चित करना और कर्मचारी स्वास्थ्य विकास नीति आदि व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के कुछ प्रमुख उद्देश्य हैं ।

एक स्वास्थ्य प्रोत्साहक विद्यालय को विद्यालय/सामुदायिक प्रोजेक्ट के साथ स्वास्थ्य शिक्षा तथा विद्यालय स्वास्थ्य सेवाओं के लिए प्रेरक स्वस्थ्य वातावरण प्रदान करने और शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन, सामाजिक सहायता तथा मानसिक स्वास्थ्य विकास के लिए बाह्य अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है ।

'स्कूल हैल्थ एवं वैलनेस क्लब' विद्यालय स्वास्थ्य विकास का केन्द्रीय बिन्दु बन सकता है जो सम्पूर्ण विद्यालयी वातावरण को शामिल करेगा और विद्यालय परिसर कार्यकलाप बन जाएगा ।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने विद्यालयों को हैल्थकार्ड आरंभ करने की सलाह भी दी है जो छात्रों की स्वास्थ्य रूपरेखा को दर्ज करेगा । हैल्थ कार्ड स्कूली शिक्षा के दौरान बच्चे के समस्त स्वास्थ्य के लिए एक प्रभावी मानीटरन एवं प्रतिपुष्टि प्रणाली का विकास करता है । व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य मैनुअल pkj [k.Mksa में है। पहला मैनुअल खण्ड–1 विद्यालय स्वास्थ्य से संबद्ध सभी साझेदारों (स्टेकहोलडर) को संबोधित है । अन्य तीन मैनुअल शिक्षकों के लिए कार्यकलाप आधारित मैनुअल हैं। खण्ड 2 शिक्षक कार्यकलाप मैनुअल है जिसमें प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–5) के लिए कार्यकलाप शामिल हैं, खण्ड–3 उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–7) के लिए शिक्षक मैनुअल है तथा खण्ड 5 माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12) के लिए शिक्षक मैनुअल है । कार्यकलाप छह भिन्न–भिन्न विषयों के संबंध में हैं – अपने शरीर को जानना, खाद्य एवं पोषण, वैयक्तिक एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्यकारिता, शारीरिक स्वस्थता, उत्तरदायी एवं सुरक्षित रहना और व्यवहार एवं जीवन कौशल । मापदण्डों एवं कार्यकलापों का उद्देश्य बच्चे के उपयुक्त परिवर्धन के लिए आयु एवं विकास के अलग–अलग पहलुओं पर फोकस करना है ।

हम सब अवगत हैं कि शारीरिक शिक्षा स्वास्थ्य, उपयुक्तता एवं कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है । यह बच्चों को सार्मथ्यवान, मन तथा शरीर दोनों की समस्याओं का सामना करने में समर्थ तथा गतिशील बनाये रखती है । यह सक्रिय जीवन जीने के लिए एवं अपने सर्वोत्तम पोषण एवं हित के लिए आधार प्रदान करती है जो जीवन भर जारी रहता है । शारीरिक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों के लाभ शारीरिक लाभों में परिवर्तित हो जाते हैं जैसे – सम्पूर्ण शरीर का विकास, समन्वय एवं तंत्रिका विज्ञान संबंधी संयोजन, आक्सीजन ग्रहण करने में बढ़ोतरी, संचित वसा कम होना तथा मोटापा दूर होना, हड्डियों का मजबूत होना तथा यह सुनिश्चित होना कि शरीर के सभी अंग दक्षता से काम करें। शारीरिक उपयुक्तता के परिणामस्वरूप सकारात्मक आत्म–सम्मान विकसित होने, व्यक्तित्व तथा अस्तित्व की भावना और उन्नत संबंध जैसे तंत्रिका विज्ञान संबंधी सामाजिक तथा भावनात्मक लाभ होते हैं । यह खेद का विषय है कि हम बच्चों के अतिसंवेदनशील वर्षो के दौरान उनमें शारीरिक स्वस्थता की आदतों को नहीं डाल पा रहे हैं ।

इसी भावना के अनुरूप केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने प्राथमिक स्तर पर पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए शारीरिक शिक्षा कार्ड भी जारी किए थे । ये विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया को मजबूत करने के प्रमुख साधन हैं । इनका प्रयोग बच्चों को प्रथामिक स्तर पर समावेशी तथा रूचिकर अनुभव प्रदान करने तथा उनके विशेषतया फुरती, संतुलन, समन्वय, गति तथा शक्ति पर सकेन्द्रित खेलों तथा क्रियाकलापों में सघन रूप से व्यस्त रहने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए किया जा सकता है । प्रत्येक शारीरिक शिक्षा कार्ड एक विशेष प्रतिपादित क्रियाकलाप को समर्पित है जिसका लक्ष्य कक्षा 1–3 के लिए फुरती, संतुलन तथा समन्वय और कक्षा 4 तथा 5 के लिए फुरती, संतुलन, समन्वय, गति तथा शक्ति विकसित करना है । ये विशेषतायें इस सहायक शिक्षण सामग्री को विशिष्ट बनाती हैं तथा अपने सहभागियों को आश्वस्त करती हैं कि यदि इन कार्डो का प्रभावी रूप से प्रयोग किया गया तो इस पाठ्यचर्या क्षेत्र की कार्रवाई से व्यवहारिक रूपान्तरण को प्रेरित करने वाले वांछित परिणाम प्राप्त होंगे ।

प्रत्येक कार्ड का लक्ष्य कक्षा के छात्रों के लिए चयनित खेल/क्रियाकलाप में शामिल संबंधित कक्षा के सभी छात्रों के लिए आवश्यक अनिवार्य सूचना उपलब्ध कराना है । कार्ड का शीर्षक विशेष क्रियाकलाप द्वारा फोकस की जाने वाली क्षमताओं, आयोजित किये जाने वाले क्रियाकलाप, क्रियाकलापों को आयोजित करने की प्रक्रिया, आवश्यक उपस्कर, सुरक्षा के लिए उठाये गये कदम और विकसित किये जाने वाले कौशलों का विशेष रूप से उल्लेख करता है । वर्तमान पाठ्यचर्या के साथ क्रियाकलाप को सहयोजित करने के अलावा अन्य विद्यालयी विषयों के साथ सहयोजन या मिश्रित पाठ्यचर्या सहयोजन तथा स्व–मूल्यांकन की प्रक्रिया का भी इसमें विवरण दिया गया है ।

सीबीएसई ने शारीरिक शिक्षा कार्ड को कार्यान्वित करने के लिए एक 'शिक्षक नियमावली' का भी प्रकाशन किया है जो शारीरिक क्रियाकलापों का आयोजन करने तथा इसके पाठों की रचना करने के लिए शिक्षकों की सहायता करेगा। शिक्षक नियमावली में विशिष्ट रूप से समर्थ बच्चों के लिए क्रियाकलाप आयोजित करने के अलावा शारीरिक शिक्षा में उनके निर्धारण के संबंध में एक अनुभाग भी है । मैं आशा करता हूं कि जिन विद्यालयों ने अपने यहां 'हैल्थ एण्ड वैलनेस क्लब' स्थापित किये हैं वे शारीरिक शिक्षा कार्ड का भी उपयोग करेंगे तथा इसका लाभ उठायेंगे ताकि विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र पूरे जीवन चुस्त और शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहें ।

fouhr tk'kh

lfpo ,oa v/;{k

QhMcd Qkje

प्रिय महोदय,

नमस्कार,

मैं तम्बाकू–मुक्त विद्यालय सुनिश्चित करने हेतु दिशा–निर्देश जारी करने के लिए बोर्ड को बधाई देना चाहता हूं। ;g okLro gh e ,d ,lh fuHkhd igy g] tk lekt l u'khy inkFkk d lou dh cjkb;k dk mUeyu dju d fy, vR;f/kd enn djxhA विद्यालय के छात्रों के मध्य जागरूकता न केवल इस बुराई को जड़ से नष्ट करेगी, बल्कि इससे उनके अभिभावकों पर भी बेहतर प्रभाव पड़ेगा। हम इस बात को विद्यालयों और कॉलेजों में युवाओं में नशीले पदार्थों के सेवन के विरूद्ध कार्य करने के अपने 30 वर्षों के अनुभव से पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं।

हम नियमित रूप से नशीले पदार्थों के सेवन के विरूद्ध विद्यालयों और कॉलेजों में नियमित रूप से मल्टीमीडिया स्लाइड–शो, प्रदर्शनियां आयोजित करते हैं तथा वहां पर मुद्रित सामग्री वितरित करते है और व्याख्यानों की श्रृंखला, पैनल चर्चा, पोस्टर, प्रदर्शनियां एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करते हैं।

इस परोपकारी कार्य के लिए आपकी ओर से सकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा में,

धन्यवाद

भवदीय,
डा0 पुष्पिंदर सिंह,
प्रभारी, मुख्य कार्यालय,
मॉडल टाउन एक्सटेंशन,
लुधियाना, पंजाब

प्रिय डा0 साधना,

नमस्कार।

मेरा नाम डा0 राजरत्नम अबेल है और में वर्ष 2005 में क्रिश्चन मेडिकल कॉलेज, वेल्लूर से सेवानिवृत्त हुआ हूं और वर्तमान में एक लोक स्वास्थ्य परामर्शक हूं। मेरे कार्य के भाग के रूप में, मैं प्रजनन स्वास्थ्य पर पाठ्यचर्या तैयार करने के लिए एक दल के साथ कार्य कर रहा हूं। यहां पर शायद ही ऐसा कोई दस्तावेज है जो स्वास्थ्य संबंधी विषयों से पर्याप्त रूप से संबंधित हो। इस प्रक्रिया में मैंने एईपी पर आपकी नियमावली का अवलोकन किया। e|> bl fu;ekoyh u cgr gh iHkkfor fd;kA ;g vR;r mRd"V dk;Z gA e mu leLr i;klk vkj mle yxu oky le; dh dYiuk dj ldrk g tk vkiu bl r;kj dju e yxk;k gkxkA di;k bl cgrjhu dk;Z d fy, ejh gn; l c/kkbZ Lohdkj dhft,A

मेरा पहला निवेदन यह है कि क्या आपके द्वारा तैयार किए गए दस्तावेज के सेट की हार्ड प्रति प्राप्त करना संभव है? क्या इस सामग्री के सर्वाधिकार पूर्णतः सुरक्षित हैं अथवा क्या हम इससे सहायता ले सकते हैं और इसका प्रयोग कर सकते हैं? यदि इसके सर्वाधिकार सुरक्षित हैं, तो मैं इसका सम्मान करता हूं और मैं इसकी कार्यविधि को अपने श्रोताओं की सुविधा के अनुसार विभिन्न कथाओं और परिस्थितियों के अनुसार अपनाउंगा।

इस संबंध में अपने स्वयं के निजी कार्य का उल्लेख भी करूंगा। वर्ष 2004 में, हमने तमिलनाडु और पांडिचेरी में युवाओं के लिए एक परामर्श–कार्य किया जिसमें लगभग 250 व्यक्तियों को शामिल किया गया था। तीन दिन की समाप्ति के पश्चात, जो आवश्यकता उभरकर सामने आई वह प्रजनन स्वास्थ्य पर समग्र शैक्षणिक सामग्री को उपलब्ध कराने से संबंधित थी। अतः हमने तमिलनाडु में किशोर शिक्षा पर एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की। इसका व्यापक रूप से स्वागत किया गया तथा इसी प्रकार की अंग्रेजी पुस्तिका निकालने की मांग भी की गई। मैं उस पुस्तिका को संलग्न कर रहा हूं। इसमें चित्रों तथा रेखाचित्रों को निकाल दिया गया है। मैंने जो भी कार्य किया है, वह आपके द्वारा किए गए कार्य की तुलना में कुछ भी नहीं हैं

मैं आपको अपनी शुभकामनाएं देना चाहता हूं क्योंकि आप युवाओं को उनके जीवन के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र में शिक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। आपकी सफलता एचआईवी/एड्स की वृद्धि को नियंत्रित करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देगी

सादर,

भवदीय,
डा0 राजरत्नम अबेल, एमबीबीएस,
एमपीएच, पीएच.डी.
चेन्नई।

प्रिय महोदय,

''तम्बाकूमुक्त विद्यालय संबंधी दिशा–निर्देशों'' के कार्यान्वयन पर सीबीएसई से संबद्ध विद्यालयों को अनुदेश जारी करने के लिए आपको अपना धन्यवाद प्रेषित करना मेरे लिए निसंदेह ही गौरव की बात है। यह प्रयास सरकार की तम्बाकू नियंत्रण पहलों को समर्थन प्रदान करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होंगे। तम्बाकू एक ऐसा गंभीर संकट है जिसका सामना न केवल हमारा देश बल्कि समूचा संसार कर रहा है तथा इससे लड़ने के लिए सार्वभौमिक तौर पर प्रयास किए जा रहे हैं और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन टोबैको कंट्रोल (एफसीटीसी) के रूप में एक वैश्विक संधि का गठन भी किया है, जिसके 168 देश हस्ताक्षरकर्ता हैं।

आपने अपने पत्र में ''स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने वाले विद्यालयों'' का उल्लेख भी किया था।

मैं स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय में राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम तथा तथा राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम को देखता हूं।

मैं ''स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने वाले विद्यालयों'' की अवधारणा के विवरणों की जानकारी प्राप्त करने के लिए अत्यंत उत्सुक हूं क्योंकि यह विषय इन दोनों ही कार्यक्रमें के लिए प्रासंगिक है।

सादर,

भवदीया,
डा0 जगदीश कौर,
मुख्य चिकित्सा अधिकारी,
स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय,
नई दिल्ली.

[kyk dh Hkkfr gh viu fo"k;k dk v/;;u dj & lHkh dN [kyk e gh lekfgr g

lJh fp=y[kk x:efr

एक दिन दो टीमें केरल में एक स्कूल में राष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता का मैच खेल रही थीं। अचानक ही वहां बहुत तेज वर्षा आने लगी, जैसाकि केरल की बारिश के बारे में जाना ही जाता है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं है कि मैं अपने जीवन में पहली बार फुटबॉल का पूरा मैच देख रही थी क्योंकि मुझे खेलों से कुछ विशेष लगाव नहीं है तथा मैंने खेलों के प्रति अपने लगाव को उस समय तक क्रिकेट मैच देखने से अधिक विस्तारित नहीं किया था। यही वजह थी कि मैंने सोचा कि ये बालक खेल समाप्त कर देंगे और बारिश से ओट पाने के लिए इधर–उधर भागेंगे। परंतु मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वे उसी उत्साह के साथ लगातार खेलते रहे और बॉल को गोल–पोस्ट तक पहुंचाने के लिए मेहनत करते रहे। जिस प्रकार से वे बिना किसी रूकावट के खेल रहे थे, ऐसा प्रतीत होता था कि आसमान बिलकुल साफ है। अचानक मुझे ज्ञान की प्राप्ति हुई। मैंने सोचा कि मैं स्वामी विवेकानन्द की इस बात को यथार्थ मान लूं कि 'कोई व्यक्ति भागवत गीता पढ़ने के स्थान पर फुटबॉल खेलकर स्वर्ग पहुंच सकता है।' जिस अनुशासन, दृढ़–निश्चय, एकाग्रता, उद्देश्य की भावना के साथ छात्र गोल की ओर बॉल को ले जा रहे थे, वह उस पवित्रता से कम नहीं थी, जिसका प्रयोग महान संत लोग अपनी आत्माओं को जागृत करने के लिए किया करते हैं।

वे बालक, जो खेलों में उत्कृष्टता हासिल कर लेते हैं परंतु शिक्षण के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते, इसकी वजह यह नहीं है कि उनकी मानसिक क्षमता में कोई कमी है। इसका कारण केवल यही है कि खेलों में उनकी प्रतिभा को वैकल्पिक शिक्षण कार्यनीतियों को विकसित करने के लिए तराशा नहीं गया। मानव जब सोचते हैं और कल्पना करते हैं, तो वे ज्ञान का निर्माण करते हैं तथा जब उनकी स्मरण–शक्ति में जानकारी भण्डारित करने की बात आती है, तो शिक्षण प्रक्रियाओं में उनकी वैयक्तिक रूचियों का अभाव नहीं होता है। अतः सहायकों के रूप में शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे उन पद्धतियों के माध्यम से अरूचिकर लगने वाले पाठों को सीखने के लिए छात्रों को सही मार्ग दिखाएं जो सफलतापूर्वक उनकी रूचियों के मुताबिक कार्य कर सकें।

एक गणित का अध्यापक खेलों के क्रियाकलापों के माध्यम से गणित की अवधारणों को एकीकृत कर सकता है। एक प्राथमिक स्तर का शिक्षक बालकों को खेल के मैदान में ले जाकर तथा उन्हें आलू एकत्र करने का खेल खिलाकर अथवा क्रिकेट का मैच दिखाकर/खिलाकर उन्हें गिनती करना, मन ही मन में जोड़ना–घटाना, विशेष सवाल और अन्य अनेक बातें सिखा सकता है। जब बालक छह और चार को जोड़ता है अथवा यह परिकलन करता है कि जीत के लिए कितने रन चाहिए, तो वह कक्षा की चारदीवारी के भीतर गणित के अध्यापकों द्वारा सिखाए जाने वाले कठोर एवं भ्रम पैदा करने वाले सिद्धांतों का सहारा नहीं लेता। जो बात एक खेल के रूप में आरंभ होती है, वह जीवन की ऐसी राह बन जाती है, जिसके माध्यम से बालक धीरे–धीरे अपनी चिंतन–शक्ति को मजबूत बनाता है।

अंकगणित परिकलन में सिद्धहस्त वह होता है, जिसके पास वे अंक उसके प्रिय मित्र की भांति निकट होते हैं जिसके साथ वह कोई भी कार्य करते हुए भय का अनुभव नहीं करता है, तथा उनके द्वारा धारण किए गए सुंदर प्रतिरूपों को देख सकता है और उनकी सराहना कर सकता है। चूंकि इससे वास्तव में ही प्रेरणाप्रद तर्कशक्ति की नींव मजबूत होती है और पहेलियों के माध्यम से खेल ही खेल में बालक का परिचय अंकों से होता है, वह अपने स्वयं के समाधानों का पता लगाने के आनंद का अनुभव लेने में समर्थ होता है और वह नई समस्याओं से दूर भागने के स्थान पर, जिसे भय कहा जाता है, उनका किसी चुनौती की भांति सामना करने में सफल रहता है।

चाहे यह अंक हों अथवा ज्यामिति हो अथवा क्षेत्रमिति हो, बालक को बाहर ले जाइए। मुझे एक स्कूल का किस्सा याद है जहां एक खेल के कार्यकलाप को करने के लिए बालकों को एक अंडाकार परिधि के भीतर खड़े होकर अभ्यास करना होता था। कक्षा XI के छात्र गणित के अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त किया करते थे, जो उन्हें भूमि पर अंडाकार आकृति तैयार करने के लिए उसके बिंदु–पथ की अवधारणा के विषय में समझाया करते थे।

इस सूक्ति का स्मरण कीजिए, ''सारा दिन काम करने और खेल के लिए समय न निकाल पाने के कारण जैक एक नीरस बालक बन गया।'' मैं इससे एक कदम आगे जाउंगी तथा कहूंगी, ''काम के बीच में थोडा खेल नहीं, बल्कि अपने काम को ही खेल की भांति आनंददायक बनाइए।''

ऐसे एकीकरण सभी विषयों के लिए संभव हैं। शारीरिक शिक्षा तथा योग के कार्यकलाप विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान से इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि यह एक शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह आवश्यकता होने पर शारीरिक शिक्षा अथवा योग के अध्यापक के साथ सहयोजित होते हुए एक एकीकृत शिक्षण प्रदान करने का प्रयास करे। जब प्रातःकाल में सूर्य नमस्कार किया जाता है, तो यह केवल हमारी त्वचा द्वारा विटामिन–डी का निर्माण करने के लिए सहायता प्रदान करने वाली प्रक्रिया होती है। मुख्य बात यह है कि यह क्रिया दिन के विशेष समय, वर्ष तथा उस स्थान के अक्षांतर से संबंधित है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य से लेकर कैंसर के निवारण तक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, किसी भी व्यक्ति को इस बात के लिए प्रेरित करने के लिए पर्याप्त है कि उसे सूर्य को नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए तथा चारदीवारी में ही घुटकर नहीं रहना चाहिए। इस प्रकार की अनुभवजन्य शिक्षा से ज्ञान प्राप्त होता है। समान मात्रा में मानसिक लाभ के साथ सम्मिश्रित होकर शारीरिक लाभ निश्चित रूप से एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मस्तिष्क को सुनिश्चित करता है। ऐसा नहीं है कि इनमें से कोई बात दूसरे से पूर्व घटित होती है। यह प्रक्रिया साथ–साथ चलने वाली है। यह कहा गया है कि नया खेल ''सुडूको'' अल्जीमर जैसे रोग को भी दूर करने के लिए मस्तिष्क का एक अच्छा अभ्यास है।

इन सभी बातों के लिए अध्यापक द्वारा गहन आयोजना की आवश्यकता होती है ताकि वह एक अवधारणा के साथ किसी खेल को उपयुक्त रूप से समीप रख सके, मानसिक अवबोधन के साथ सहयोजित करने के लिए शारीरिक कार्यकलाप को उपयुक्त रूप से तैयार कर सके। शारीरिक शिक्षा के अध्यापकों के साथ निरंतर संपर्क बनाकर, विभिन्न कक्षाओं के लिए

उनकी पाठ्यचर्या का अवलोकन करके, क्रियाकलापों का सहयोजन करते हुए संभवतः शैक्षिक संदर्श के रूप में व्यावहारिक विकास को एक नया आयाम प्रदान किया जा सकता है।

शिक्षा का लक्ष्य :

मैं साहस, ताकत, सदाचार और महान लक्ष्यों के प्रति कार्य करने में स्वयं को भूलने की सामर्थ्य विकसित करने का प्रयास करूंगा। यह साक्षरता से अधिक महत्वपूर्ण है; शैक्षणिक शिक्षण इस वृहद छोर की ओर कदम बढ़ाने का मात्र एक जरिया है।

महात्मा गांधी

Hkkjrh; fo|ky;ksa esa 'kkjhfjd f'k{kk

uhfyek d- dkejk

iLrkouk

शारीरिक शिक्षा को एक ऐसे योजनाबद्ध, श्रृंखलाबद्ध शिक्षक के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो आजीवन शारीरिक कार्यकलाप को प्रोत्साहित करती है। इसे बुनियादी संचलन कौशलों, खेल कौशलों तथा शारीरिक स्वस्थता को विकसित करने के साथ–साथ मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक योग्यताओं में वृद्धि करने के लिए तैयार किया जाता है। शारीरिक शिक्षा समग्र शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है जिसका उद्देश्य ऐसे शारीरिक कार्यकलापों का प्रयोग करते हुए शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक दृष्टि से स्वस्थ नागरिक तैयार करना है, जिनका चयन और योजना विशिष्ट परिणामों को हासिल करने के लिए तैयार की जाती है। अतः हम कह सकते हैं कि ''एक शारीरिक रूप से शिक्षित'' व्यक्ति वह है जो शारीरिक दृष्टि से भी साक्षर है।'' बालकों के गणित और भाषा में साक्षर बनने की आवश्यकता के साथ ही हम यह भी चाहते हैं कि बालक शारीरिक साक्षरता भी विकसित करें। एक शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में शारीरिक क्रियाकलाप (जैसाकि अन्य किसी पाठ्यचर्या संबंधी शिक्षण के साथ है) के शिक्षण प्रक्रिया के बाहर शारीरिक क्रियाकलाप से भिन्न रूप में पहचाने जाने की आवश्यकता है।

गिलिस्पी (2005) इस बात पर विश्वास करते हैं कि शारीरिक शिक्षा, खेल तथा संचलन के अन्य रूपों के उद्देश्य तथा उनकी क्षमता तथा शारीरिक क्रियाकलाप से उनके संबंध और किसी विद्यालय की संरचना में क्या शारीरिक क्रियाकलाप संचालित किए जा सकते हैं, इनकी संबंधित तथ्यों को समझने की आवश्यकता है। बालकों में उनकी शारीरिक क्षमता को ग्रहण करने की इच्छा को विकसित करने तथा उनके द्वारा उनके शरीर का अनेक प्रकार से प्रयोग करने के अनेक तरीकों का आनंद लेने के लिए शारीरिक शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है।

शारीरिक शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्य समय और स्थान की आवश्यकताओं के आधार पर भिन्न–भिन्न हैं। अधिकांश आधुनिक विद्यालय विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल, क्षमता, मूल्य तथा वयस्कपन में एक स्वस्थ जीवन–शैली बनाए रखने के लिए उत्साह उपलब्ध कराते हैं। कार्यक्रम में शामिल क्रियाकलाप शारीरिक स्वस्थता को प्रोत्साहित करने, नियमों, अवधारणाओं और कार्यनीतियों की जानकारी और समझ को आत्मसात करने तथा प्रतिस्पर्धात्मक क्रियाकलापों की व्यापक विविधता में छात्रों को एक दल के भाग के अथवा एक व्यक्ति–विशेष के रूप में कार्य करना, सिखाने के लिए तैयार किए गए हैं। विद्यार्थी प्रतिस्पर्धात्मक कार्यकलापों की व्यापक श्रृंखला में या तो किसी दल के भाग के रूप में अथवा व्यक्तिगत रूप से कार्य करना सीखते हैं। इष्टतम शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम एक स्वस्थ जीवन–शैली के भाग के रूप में शारीरिक कार्यकलापों के प्रति आजीवन प्रतिबद्धता को संपोषित नहीं करता है। शारीरिक शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव ओलिम्पिक,

राष्ट्रमंडल खेलों तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेलों में हमारे देश के प्रदर्शन से स्पष्ट हो जाता है। अब हम शारीरिक शिक्षा के लाभों के बारे में समझेंगे।

'kkjhfjd f'k{kk d: 'kkjhfjd YkkHk

- यह उच्च रक्तचाप, रक्त में उच्च कैलेस्ट्रॉल, मोटापे आदि जैसी अपकर्षक बीमारियों के बचाव में सहायता करती है।
- यह ऊर्जा के व्यय में वृद्धि करती है तथा ऊर्जा के संतुलन में सुधार लाती है।
- यह बालक के विकास एवं स्वस्थता को लाभान्वित करती है।
- यह बालक को लचीला, सक्रिय और आत्मविश्वासी बनाती है।
- यह बालिकाओं में हड्डियों के विकास में वृद्धि करती है।

'kkjhfjd f'k{kk d: eukoSKkfud@lkekftd ykHk

- यह मनोवैज्ञानिक तथा साथ ही सामाजिक, दोनों ही दृष्टि से व्यक्ति के जीवन में विकास लाती है।
- यह क्रोध, आक्रामण और प्रसन्नता को अभिव्यक्त करने का एक साधन है जोकि स्वयं के अन्वेषण तथा साथ ही सामाजिक सहायताकर्ता के अन्वेषण के लिए एक मार्ग है।
- बालक की वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रभाविता को महसूस किया जाना बड़े पैमाने पर शारीरिक शिक्षा अनुभव के अंतर्गत मिले मार्गदर्शन पर निर्भर करता है।
- यह अंतरवैयक्तिक संबंधों में सुधार लाती है।
- यह संवेदी कौशलों में सुधार लाती है।
- यह बालक की ध्यान देने की अवधि में सुधार लाती है।
- यह सहयोगी शिक्षण कार्यनीतियों तथा दल कार्य को आत्मसात कराती है।
- यह शक्ति तथा स्पष्ट चिंतन में वृद्धि करती है।

'kkjhfjd f'k{kk d ekufld@ckf)d YkkHk

- जैसाकि हम जानते हैं एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। शारीरिक शिक्षा श्रेष्ठ स्वास्थ्य प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है जिससे बालक का मानसिक स्वास्थ्य विकसित होता है।

- यह बालक के धैर्य के स्तर में वृद्धि करती है।

- यह किसी व्यक्ति की प्रकृति को शांत बनाती है।

- यह बालक को सही दिशा में ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करती है क्योंकि ऊर्जा सही दिशा में प्रवाहित होती है।

- बालक के शैक्षणिक प्राप्ति स्तर में वृद्धि करती है।

- यह बालक को शिक्षण अनुभव उपलब्ध कराती है जो निर्णायक चिंतन कौशलों के लिए अनिवार्य होता है जिससे त्वरित पूछताछ की भावना संपोषित होती है तथा समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करने की योग्यता विकसित होती है।

'kkjhfjd f'k{kk d HkkoukRed YkkHk

- यह बालक को भावनात्मक रूप से संतुलित बनाती है।

- यह आक्रोश को कम करती है।

- यह बालकों को उनके व्यक्तित्व से बाहर निकालती है तथा उन्हें अधिक आत्मविश्वासी बनाती है।

- यह बालक की दृष्टि में भी सुधार लाती है क्योंकि वे कम्प्यूटरों पर कम समय व्यतीत करेंगे।

- यह सकारात्मक आदतों को स्थापित करती है।

- यह चिंता, घबराहट, तनाव, दबाव को कम करती है।

'kkjhfjd f'k{kk d ek/;e l Hkk"k.k dk'ky lo/ku

- शारीरिक शिक्षा परिवेश बालकों को भाषा अवधारणाओं को समझने तथा उपयुक्त स्तरों का प्रयोग करने में सहायता करता है, यहां तक कि उन्हें भी जो देर से बोलने अथवा भाषा संप्रेषण करते हैं।

- यह बालकों को विभिन्न अवधारणाओं को सीखने का प्राकृतिक अवसर उपलब्ध कराती है जैसे आसपास, ऊपर और नीचे, आगे और पीछे, आदि ।

- भाषा कौशलों को आसानी के साथ शारीरिक शिक्षा कक्षाओं में कार्यान्वित किया जा सकता है, इसमें सिखाए जा रहे शारीरिक कौशलों को समाप्त करने की आवश्यकता भी नहीं है।

- यह चिंता, घबराहट, तनाव और दबाव को कम करती है तथा वयस्कों में होने वाले स्वाभिमान संबंधी परिवर्तनों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

fu"d"k

बालक के सामाजिक, शारीरिक और नैसर्गिक विकास में शारीरिक शिक्षा की सकारात्मक भूमिका पर प्रश्न उठे हैं। शारीरिक शिक्षा शिक्षण अनुभव समस्या निवारण, स्व–अभिव्यक्ति तथा सामाजीकरण के लिए अनूठा अवसर भी प्रदान करता है (ग्रबर, 1986)। बालक अनेक प्रकार के उपकरणों की सहायता से सीखते हैं (उदाहरण के लिए दृश्य, श्रव्य, मौखिक, शारीरिक)। शारीरिक भाषा के माध्यम से शैक्षणिक अवधारणाओं का शिक्षण बालक की गतिबोधक बौद्धिकता को परिपुष्ट करता है। शोधों ने यह दर्शाया है कि दैनिक शारीरिक कार्यकलाप में शामिल बालक उत्कृष्ट संवेदी स्वस्थता, शैक्षणिक प्रदर्शन तथा विद्यालय के प्रति सकारात्मक अभिरूचि दिखाते हैं (सिल्वर, 1983)। इन बालकों को सामान्यतः कम समस्याएं होती हैं तथा उनके मस्तिष्क खुले होते हैं जो शिक्षक को ग्रहण करने के प्रति अधिक सतर्क होते हैं।

LokLF; Dyc vkSj 'kkjhfjd f'k{kk

vfuy ;nqoa'kh

शारीरिक शिक्षा मानव शरीर के बारे में तथा मानव के स्वास्थ्य एवं आत्मा को बेहतर बनाए रखने के लिए अपेक्षित प्रासंगिक अभ्यासों, क्रियाकलापों, प्रशिक्षण क्रीड़ाओं और खेलों के विषय में ज्ञान की जीवन–धारा का नाम है। ऐसे युवा सुशिक्षित स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं के दल द्वारा स्वास्थ्य क्लबों का गठन किया जाता है जो अच्छे स्वास्थ्य के आधारभूत सिद्धांतों को जानते हैं तथा जिन्हें जनता के बीच बेहतर स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता का सृजन करने के लिए तैनात किया जाता है। पिछली सहस्राब्दि में यूनीसेफ ने ''सभी के लिए स्वास्थ्य'' मिशन निर्धारित किया था, जिसके परिणामस्वरूप बेहतर स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता का प्रचार–प्रसार करने के लिए बड़ी संख्या में स्वास्थ्य क्लबों की स्थापना हुई।

LokLF; dk okLrfod vFkZ

इसके अनेक उत्तर हैं। लेकिन, साधारण से उत्तर है कि स्वास्थ्य मानव के मस्तिष्क से आरंभ होता है और वहीं समाप्त होता है तथा इसके बीच में आंतरिक और बाहरी, दोनों ही प्रकार के पर्यावरण विद्यमान होते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में हुई नवीनतम खोजों द्वारा यह पता चला है कि अधिकांश मानवीय रोगों का कारण मनःकायिक अस्वस्थता होता है।

भविष्य के बारे में मानव की अनौचित्यपूर्ण चिंताओं तथा उसके अतीत से जुड़ी दर्दनाक स्मृतियों की वजह से मानव का स्वास्थ्य तेज़ी से खराब होता जा रहा है। हम अपने वर्तमान के जीवन का आनंद उठाने में बुरी तरह असफल हो रहे हैं तथा इसके स्थान पर हम अपने जीवन के नकारात्मक पहलुओं पर ही निरंतर विचार करते रहते हैं। यही हमारे शरीर में अस्वस्थता की शुरूआत है जो विभिन्न रोगों के रूप में प्रकट होती है।

जब आप निरंतर नकारात्मक बातें सोचने के माध्यम से स्वयं को कमजोर बनाते हैं, तो वास्तव में ही, विभिन्न रोगों के रूप में हम अपने शत्रुओं को अपने शरीर के कमजोर प्रतिरक्षण के परिवेश में हमला करने के लिए आमंत्रित करते हैं जिसके कारण हमें अनावश्यक रूप से रोग का सामना करना पड़ता है।

LokLF; Dycksa esa 'kkjhfjd f'k{kk dh Hkwfedk

स्वास्थ्य क्लब के सदस्यों को प्रासंगिक सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के साथ सज्जित करना बेहतर मानव स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता का सृजन करने के संदर्भ में व्यावहारिक सफलता हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शारीरिक शिक्षा में अनेक विषयक्षेत्र शामिल होते हैं जैसे, खेल और क्रीड़ाएं, व्यायाम, योग, कसरत, शारीरिक एवं मानसिक क्रियाकलाप आदि। शारीरिक शिक्षा के ये सभी महत्वपूर्ण विषयक्षेत्र आश्चर्यजनक रूप से हमें व्यावहारिक दृष्टि से खेल भावना, जीत की भावना, यथाशीघ्र जीतने की भावना, स्वस्थ

मस्तिष्क के साथ स्वस्थ शरीर का निर्माण, अनुशासन, यर्थातता और हमारे जीवन की अनिश्चितताओं के बारे में हमें सिखाते हैं।

i;koj.k ij LokLF; Dyck dk iHkko

स्व–प्रेरित, स्वस्थ, युवा तथा शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से शिक्षित नौजवान छात्रों से मिलकर बने बेहतर स्वास्थ्य क्लब एक नए विश्व का सृजन कर सकते हैं क्योंकि जनता के मध्य समग्र दृष्टि से ठोस और बेहतर स्वास्थ्य रखने के बारे में अधिक सटीक जागरूकता निश्चित रूप से जनता के बीच एक प्रदूषण–रहित आंतरिक पर्यावरण का सृजन कर सकती है, जोकि निश्चित तौर पर विश्व में बाहरी पर्यावरण पर अत्यंत सकारात्मक प्रभाव डालेगा।

turk d fy, LokLF; Dyck d tkx:drk dk;Øe

स्वास्थ्य क्लबों के उत्साही सदस्य प्राकृतिक रूप से बेहतर स्वास्थ्य बनाए रखने तथा तम्बाकू उत्पादों, मद्यपान, नशीले पदार्थों आदि जैसे हानिकारक तत्वों के बारे में जागरूकता का सृजन करते हैं। स्वास्थ्य क्लब लोगों को मसालेदार, तेलयुक्त और तला हुआ भोजन लेने के हानिकारक प्रभावों के बारे में भी जागरूक बनाते हैं। स्वास्थ्य क्लब हमें सिंथेटिक दूध तथा उन हानिकारक रसायनों के प्रयोग के बारे में भी अवगत कराते हैं जिन्हें आजकल किसानों द्वारा शीघ्र पैसा बनाने के लिए अपने उत्पादों की चमक और आकार में वृद्धि करने के प्रयोजन से फलों और सब्जियों में प्रयोग किया जा रहा है। कार्यकर्ता लोगों को उनके दैनिक जीवन में पॉलीथीन के प्रयोग के बारे में भी जागरूक बना सकते हैं। वे कैंसर तथा एड्स जैसे घातक रोगों के निवारण एवं उपचार के लिए जागरूकता कार्यक्रम भी संचालित कर सकते हैं।

पाठ्यचर्या का अर्थ केवल शैक्षणिक विषय ही नहीं है जिन्हें विद्यालयों में पढ़ाया जाता है परंतु इसमें शामिल है अनुभव की समग्रता जिसे पूर्णतः उन विविध क्रियाकलापों के माध्यम से ग्रहण करती है, जो विद्यालय के भीतर कक्षाओं में, खेल के मैदान में, पुस्तकालय में, प्रयोगशाला में और शिक्षकों एवं छात्रों के बीच हाने वाले अनेक औपचारिक संपर्कों द्वारा क्रियान्वित होते हैं।

LokLF; dk ikRlkfgr djr fo|ky;

'kfe"Bk lu

विद्यालय सामुदायिक स्वास्थ्य में परिवर्तन का एक शक्तिशाली अभिकर्ता है। स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रम पारंपरिक कक्षाओं में प्रदान की जाने वाली शिक्षा की तुलना में विद्यार्थियों के लिए अधिक अवसर उपलब्ध कराते हैं। स्वास्थोनुमुखी क्रीड़ाओं, प्रतिस्पर्धाओं, स्वच्छता आदि को शामिल करके पाठ्यचर्या संव्यवहार की आयोजना मनोरंजन तरीके से की जा सकती है।

विद्यालय के बालक अत्यधिक ऊर्जा से ओत–प्रोत होते हैं जोकि शैक्षणिक दबाव व मांगों के कारण प्रायः अछूती और उनमें भीतर ही निहित रह जाती हैं। उन्हें अन्य सहयोजित क्रियाकलापों में शामिल किया जाना चाहिए जिनमें शैक्षणिक चिंता के साथ–साथ स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा जैसे शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों के भाग भी अवश्य शामिल हों। विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा सामान्यतः अत्यंत कम अथवा शून्य अभिनवता के साथ अत्यंत नीरस होती है। अभिनव विचार उस समय सामने आते हैं जब बालक सामूहिक चर्चाओं में तथा अन्य विचार–विमर्श वाले सत्रों में भाग लेते हैं। ''शारीरिक एवं मानसिक कुशलता'' विद्यालयों में संचालित किए जाने वाले क्रियाकलापों के केन्द्र में होनी चाहिए क्योंकि व्यवहार का निर्माण करने में विद्यालयी शिक्षा अत्यंत निर्णायक सिद्ध हुई है, जोकि विद्यार्थियों के जीवन में बहुत समय तक जारी रहती है।

शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता से संबंधित विषय अपने शरीर को जानना, भोजन और पोषण, वैयक्तिक एवं पर्यावरणीय स्वच्छता, शारीरिक स्वस्थता एवं वैयक्तिक निखार और सज्जा हो सकते हैं। सीबीएसई ने चार खण्डों में पहले ही व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य नियमावली प्रकाशित की है। नियमावली का प्रयोग विद्यालयों में स्वास्थ्य एवं अन्य जीवन कौशल संबंधी क्रियाकलापों के लिए संसाधन सामग्री के रूप में किया जा सकता है।

बालक ऐसे कार्यक्रमों में अपने साथियों, भाई–बहनों, अभिभावकों और व्यापक समुदाय को शामिल कर सकते हैं। इनमें स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी तथा क्रॉसवर्ड पहेलियां, ''स्वस्थ कक्षा पुरस्कार'', सार्वजनिक जागरूकता अभियान, घरों को साफ–सुथरा रखने के लिए पड़ोस के परिवारों को बताना और उनकी सहायता करना, पोस्टर निर्माण, स्वास्थ्य–कार्डों का अनुरक्षण, सलाद तैयार करना और भोजन–चार्ट बनाने की प्रतियोगिताएं भी हो सकती हैं।

विद्यालय में किसी दिन की शुरूआत किसी स्फूर्ति देने वाले शारीरिक क्रियाकलाप से करना शिक्षा की प्रक्रिया को छात्रों तथा साथ ही शिक्षकों के लिए किसी उत्सव को मनाने से कम नहीं होता है। ऐसा करने का एक तरीका प्रत्येक सुबह आधे घंटे की ''एक्सडांसिंग'' (व्यायाम और नृत्य) करना है जिसके पश्चात छोटी अवधि की प्रार्थना सभा रखी जाएगी। एक्सडांसिंग में, संगीत की लय पर (क) एरोबिक्स, (ख) मास ड्रिल, (ग) योग अभ्यास और (घ) यूरीद्मिक्स की क्रिया करते हैं। यह क्रिया प्रत्येक बालक के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है।

व्यायाम के लिए हल्का–फुल्का नृत्य करना शरीर और मस्तिष्क के लिए बहुत लाभदायक है। ''एक्सडांसिंग'' अस्थि–संधियों को नुकसान पहुंचाए बगैर हड्डियों और मांस–पेशियों को मजबूत बनाती है। यह शारीरिक गठन में सुधार लाती है; आत्मविश्वास निर्माण में सहायता करती है; शारीरिक शक्ति एवं लचीलेपन में वृद्धि करती है। यह मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अस्थि–छिद्रिलता, निराशा और धमनी–संबंधी रोगों जैसी व्याधियों को समाप्त करती है।

एक्सडांसिंग विशेष रूप से उच्च प्राथमिक स्तरों पर गणितीय अवधारणाओं को तेजी से सीखने के लिए एक रूचिप्रद एवं प्रभावी पद्धति है। नृत्य व्यायाम के माध्यम से पहाड़े, जोड़, घटा और भाग को आसानी के साथ सीखा जा सकता है। आकृतियों की अवधारणाओं को समझते हुए उनके तालिकाबद्ध रूप लाभदायक होते हैं। नृत्य में व्यावहारिक अनुभव हासिल करने के माध्यम से बालक शारीरिक जागरूकता, अंतरिक्ष, दिशाएं, दूरी, संबंधों, समय और ऊर्जा के अवयवों का अन्वेषण करने, पहचान करने, संयोजन बनाने तथा उनकी तुलना करने के प्रति निपुण होते हैं। आसान खेलों, व्यायामों तथा इनके अन्य रूपों के माध्यम से छात्र आंख, कान, मस्तिष्क और शरीर के बीच लयबद्ध एकता विकसित करने के उद्देश्य से संगीत एवं शारीरिक संचलन को संयोजित करना सीखते हैं।

संगीत अच्छा महसूस करने तथा मजबूत लयबद्ध भावना के प्रति योगदान प्रदान करती है तथा वस्तुतः हृदय में एक मधुर गीत छोड़ जाती है।

> इसके समस्त रूपों में नृत्य को समस्त उत्कृष्ट शिक्षा की पाठ्यचर्या से निकाला नहीं जा सकता है; विचारों के साथ, शब्दों के साथ नृत्य किया जा सकता है, तथा वस्तुतः मैं इसमें यह जोड़ना चाहूंगा कि व्यक्ति को अपनी कलम के साथ भी नृत्य करने में समर्थ होना चाहिए।

fo|ky;k e LokLF; ,o d'kyrk Dyc rFkk 'kkjhfjd f'k{kk dh Hkfedk

Jherh lhrky{eh

iLrkouk

हम किस प्रकार का विचित्र जीवन जी रहे है! टी.एस. ईलियट ने अपनी कृति ''द वेस्टलैंड'' में आधुनिक जीवन की आलोचना की है जोकि मूल्यों से रहित है तथा ''जीवन में मृत्यु'' के समान है। वह संदर्भ जिसमें उन्होंने यह कहा है कि ''लंदन का पुल गिर रहा है'' आज के उस आधुनिक मानव की जीवन–यापन की परिस्थितियों से अत्यंत मेल खाता है, जोकि बेचैनी, तनाव और एकाकीपन से ग्रस्त है। दिन–प्रति–दिन हमारा अस्तित्व अनेक प्रकार की जटिलताओं से घिरता जा रहा है और इस प्रकार, व्यक्ति अपनी दैनिक आर्थिक समस्याओं के साथ निरंतर व्यस्त होता जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, आधुनिक व्यक्ति अपने शरीर के रख–रखाव और देखभाल के लिए समय नहीं निकाल पाता है। हमारी शारीरिक शक्ति के अत्यधिक महत्व को ध्यान में रखते हुए सीबीएसई में पाठ्यचर्या योजनाकारों ने विद्यालयों के लिए यह अनिवार्य बना दिया है कि वे प्राथमिक कक्षाओं से आरंभ करते हुए वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक शारीरिक शिक्षा को व्यवहार रूप में अपनाएं।

'k{kf.kd lLFkkvk e 'kkjhfjd f'k{kk

शारीरिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को वयस्क अवस्था में स्वस्थ जीवन–शैली बनाए रखने के उत्साह के साथ–साथ ज्ञान, कौशलों, क्षमताओं और मूल्यों से सज्जित करना है। कुछ विद्यालय शारीरिक शिक्षा को उनके छात्रों में मोटापे की शिकायत को दूर करने के भाग के रूप में ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में शामिल कार्यकलाप शारीरिक स्वस्थता को प्रोत्साहित करने, संवेदी कौशलों का विकास करने तथा नियमों, अवधारणाओं और कार्य–नीतियों को समझने और विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी क्रियाकलापों की एक व्यापक श्रृंखला में एक दल के भाग के रूप में अथवा एक व्यक्ति–विशेष के रूप में कार्य करना सिखाने के लिए तैयार किए गए हैं।

'kkjhfjd f'k{kk d mn~n';

शारीरिक शिक्षा तथा खेलों में, शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के अलावा, व्यक्ति दल के कार्य, क्रीड़ाओं एवं खेलों के माध्यम से सहयोग के महत्व को भी महसूस करता है। शारीरिक शिक्षा हमें नेतृत्व और आत्म–विश्वास की विशेषताओं के बारे में भी सिखाती है। यह छात्रों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पहल करने के महत्व से भी परिचित कराती है। शारीरिक शिक्षा तथा खेल हमें एकता और एकीकरण के लाभों के बारे में भी बताते हैं तथा जैसाकि अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं से स्पष्ट होता है, यह एकता की भावना किसी देश तक ही सीमित नहीं रहती है, परंतु यह समस्त विश्व में फैल जाती है।

'kkjhfjd f'k{kk & jk"V dh lsok

शारीरिक शिक्षा विद्यार्थियों की कई प्रकार से सहायता करती है। यह विद्यार्थियों को उनकी सफलताओं से सबक लेना तथा और अधिक परिश्रम करके पुनः प्रयास करना सिखाती है। यह सफलता हासिल करने के लिए उनके मध्य जोश उत्पन्न करती है। अच्छा स्वास्थ्य, सहनशीलता, साहस, आत्मविश्वास आदि जैसे मूल्यों को परिपुष्ट करती है। एक स्वस्थ व्यक्ति हर उस चुनौती का सामना करने के लिए सदैव तैयार रहता है, जो उसका जीवन उसके समक्ष प्रस्तुत करता है। बदलते समय के प्रति स्वयं को अनुकूल बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक, दोनों ही दृष्टि से पर्याप्त मजबूत होना आवश्यक है। यह मजबूत शरीर के साथ व्यक्ति की देशभक्ति से ओत–प्रोत आत्मा और बलिदान ही हैं, जिससे देश मजबूत और समृद्ध बन सकता है।

न खरीदे गए स्वास्थ्य के लिए मैदानों मे शिकार करना बेहतर है, बजाए इसके कि किसी घृणित शिकार के लिए चिकित्सक को फीस दी जाए,
समझदार लोग उपचार के लिए किसी कवायद पर निर्भर होते हैं; ईश्वर कोई ऐसी कृति नहीं तैयार करता जिसमें मानव सुधार कर सके।

जॉन ड्राउन

fo|ky;ksa esa LokLF; ,oa dq'kyrk Dyc dh Hkwfedk

fp=k ukdjk

स्वास्थ्य वह स्थिति है (मानसिक एवं शारीरिक) जिसमें व्यक्ति–विशेष कार्यात्मक रूप से आंतरिक दृष्टि से शरीर के हिस्सों से तथा बाहरी दृष्टि से उसके परिवेश के साथ अच्छी प्रकार से समायोजित हो। एक वृहद परिप्रेक्ष्य में, शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा पारस्परिक रूप से एक–दूसरे पर निर्भर है।

LokLF; Dyc rFkk 'kkjhfjd f'k{kk dk mn~ns';

विद्यालयों में स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लब किसी व्यक्ति और समुदाय से संबंधित आदतों, अभिवृत्ति और ज्ञान को अनुकूल रूप से प्रभावित कर सकते हैं। ये क्लब इष्टतम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए हमारे व्यवहार को आशोधित कर सकते हैं। शारीरिक शिक्षा शारीरिक स्वस्थता प्रदान करने का कार्य करती है, जो स्वस्थता का एक महत्वपूर्ण अवयव है। विद्यालय भी क्लबों की शुरूआत कर सकते हैं, जैसे नृत्य क्लब, एरोबिक क्लब, योग, तैराकी, मोटापा दूर करने, वजन बढ़ाने वाले क्लब, व्यजंन क्लब, हास्य क्लब, पोषक–तत्व शिक्षा क्लब आदि।

शारीरिक शिक्षा शारीरिक व्यायाम के लिए अवसर उपलब्ध कराकर स्वास्थ्य एवं कुशल क्लबों के कार्यकलापों को सहायता उपलब्ध कराती है, जो ''अच्छा महसूस करने'' वाले हार्मोन को उत्सर्जित करने वाले हाइपोथैल्मस एवं पीयूष ग्रंथियों को सक्रिय करता है। इन हार्मोन में दर्द को कम करने तथा स्वस्थ होने की भावना लाने की क्षमता भी होती है।

कुशलता का स्वस्थ रहने के लिए सतत एवं जानबूझकर किए गए प्रयासों तथा स्वस्थता के लिए उच्चतम क्षमता हासिल करने के रूप में भी परिभाषित किया गया है।

सात साधारण जीवन–शैली संबंधी आदतें कुशलता के प्रति उल्लेखनीय रूप से योगदान करती हैं।

- प्रत्येक रात्रि 7–8 घंटे सोना
- प्रत्येक दिन नाश्ता करना
- भोजनों के बीच के अंतराल में कुछ न खाना
- मिठाइयों एवे वसायुक्त भोजन से दूर रहना
- शरीर का वजन व्यवस्थित बनाए रखना।

LokLF; e|nnk d fy, dk;uhfr;k

समन्वित विद्यालय कुशलता कार्यक्रम

fuokj.k d fy, dk;uhfr;k

परिवार/समुदाय भागीदारी

प्रबंधन और सहायता प्रणालियां

स्वास्थ्य सेवाएं

शारीरिक शिक्षा

विद्यालय, परिवार और समुदाय के प्रयास

d|'kyrk

स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य

पोषण–संबंधी सेवाएं

शारीरिक शिक्षा और कियाकलाप

स्वस्थ विद्यालय परिवेश

स्वास्थ्य शिक्षा

स्वस्थ विद्यालय परिवेश

कार्मिकों के लिए स्वास्थ्य संवर्धन

अपनी दैनिक कैलॉरी आवश्यकताओं को आंकलित करने के लिए एक सटीक तरीका हैरिस बेनेडिक्ट सूत्र है, जहां हम पहले बीएमआर निकालते हैं तथा उसके बाद उसे क्रियाकलाप कारक से गुणा करते हैं।

चयापचयी दर हर व्यक्ति में भिन्न–भिन्न होती है। कुछ व्यक्तियों में चयापचयी दर की दर तीव्र होती है, जबकि अन्य में यह दर मंद होती है।

efgykvk@ckfydkvk d fy, vkdyu dl dj

बीएमआर – 655 + (0.6 x किलो में वजन) + (1.8 x सेंमी. में कद) - (4.7 x वर्ष में आयु)

अपनी कुल दैनिक कैलोरी का आकलन करने के लिए, अब उपयुक्त क्रियाकलाप कारक से अपने बीएमआर को निम्नानुसार गुणा करें :–

- यदि आप गृह–प्रेमी हैं – कम अथवा शून्य व्यायाम

कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.2

- यदि आप हैं – हल्के–फुल्के सक्रिय (हल्का व्यायाम/खेल 1–3 दिन/सप्ताह)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.375

- यदि आप सौम्य रूप से सक्रिय हैं (समुचित व्यायाम/खेल 3–5 दिन/सप्ताह)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.725

- यदि आप अत्यंत सक्रिय हैं (कठोर दैनिक व्यायाम/खेल एवं शारीरिक कार्य प्रशिक्षण)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.9

विद्यालयों में कुशलता क्लब छात्रों में स्वस्थता आदतें आत्मसात करा सकते हैं तथा स्वस्थ पोषण प्रणाली की शुरूआत कर सकते हैं। विद्यालय नृत्य क्लब, एरोबिक्स, योग, तैराकी क्लब, कुशलता व्यंजन क्लब आदि शुरू कर सकते हैं।

कुशलता क्लब अधिकतम स्वास्थ्य के लिए अपना ध्यान निम्न पर केन्द्रित कर सकते है।

i|:"kk d\ fy, vkdyu d\l\ dj\

बीएमआर – 66 + (13.7 x किलो में वजन) + (5 x सेंमी. में कद) - (6.8 x वर्ष में आयु)

अपनी कुल दैनिक कैलोरी का आकलन करने के लिए, अब उपयुक्त क्रियाकलाप कारक से अपने बीएमआर को निम्नानुसार गुणा करें :–

- यदि आप निष्क्रिय हैं – कम अथवा शून्य व्यायाम
  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.2

- यदि आप हल्के–फुल्के सक्रिय हैं (हल्का व्यायाम/खेल 1–3 दिन/सप्ताह)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.375

- यदि आप सौम्य रूप से सक्रिय हैं (समुचित व्यायाम/खेल 3–5 दिन/सप्ताह)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.55

- यदि आप अत्यंत सक्रिय हैं (कठोर दैनिक व्यायाम/खेल 6–7 दिन/सप्ताह)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.725

- यदि आप अत्यधिक सक्रिय हैं (अत्यंत कठोर दैनिक व्यायाम/खेल एवं शारीरिक कार्य अथवा 2 x दिन प्रशिक्षण)

  कैलोरी आकलन = बीएमआर x 1.9

ejh ,Mys ls eykdkr

dlVu ¼vkb,u½ ohd oek ¼lokfuoRRk½

मेरी एक लंबे समय से दिली इच्छा थी कि मैं अंटार्टिका की यात्रा करूं, जोकि एक ऐसा महाद्वीप है जिसे अन्य सभी महाद्वीपों की तुलना में सर्वाधिक ठंडा, शुष्क, हवादार और अत्यंत दुर्गम माना जाता है। मेरा यह स्वप्न उस समय साकार हुआ जब मुझे अंटार्टिका जाने वाले छठे भारतीय वैज्ञानिक अभियान (1986–87) में नौसेना की टुकड़ी के एक सदस्य के रूप में चुने जाने का समाचार मिला। अभियान में मेरा मुख्य काम हवाई प्रचालनों के लिए मौसम–विज्ञानी सहायता उपलब्ध कराना तथा अंटार्टिका में और उसके मार्ग के दौरान मौसमी एवं सामुद्रिक आंकड़े संग्रहित करना था।

अभियान दल ने स्वीडन के पोत ''एमवी थूलेलैंड'' पर 26 नवम्बर 1986 को गोवा से प्रस्थान किया तथा 24 दिसम्बर 1986 को वह अंटार्टिका पहुंचा। पोत को ओल्ड लाज़ारेव (सोवियत) स्टेशन के निकट 'फास्ट आइस' पर सुरक्षित खड़ा कर लिया गया, जोकि दक्षिण गंगोत्री से लगभग 20 नॉटिकल मील की दूरी पर स्थित है (70 अंश 05' द0, 012 अंश पू0)। यह एक अविस्मरणीय दृश्य था। हम एक बिलकुल अलग ही दुनिया में थे जो श्वेत संगमरमर से बनी हुई थी। यह मानो आदिकाल के स्वर्ग के समान था। मैं वहां पर कुछेक छोटी एडेले पेंग्विनों को देखकर आश्चर्यचकित रह गया जो संभवतः हम लोगों को ही देखने के लिए एकत्र हुई थीं। मैं उस मौके का इंतजार कर रहा था जब मैं उनके पास जाऊं तथा उन दूसरे ग्रह के छोटे विचित्र प्राणियों से हाथ मिलाऊं। मुझे यह अवसर उस समय प्राप्त हुआ जब हमें समूह बनाकर 'फास्ट आइस' पर चलने की अनुमति मिली। हमारे जोश ने संभवतः इन पक्षियों को नाराज़ कर दिया तथा वे वहां से भाग गए। उनकी यह बात मेरे लिए बिलकुल भिन्न अनुभव था क्योंकि मुझे बताया गया था कि एडेले पैंग्विन बहुत ही मैत्री भाव रखने वाले पक्षी होते हैं तथा वे पीढ़ियों से अंटार्टिका आने वाले अतिथियों का मनोरंजन करते हैं।

उड़ान प्रचालनों के आरंभ होने तथा दक्षिण गंगोत्री एवं मैत्री स्टेशनों (शिरमाशर हिल्स – 70 अंश 45'52'' द0, 011 अंश 44'30'' पू0) पर कार्मिकों एवं सामान को पहुंचाने के साथ ही हम अगले दो दिन तक बहुत ही व्यस्त रहे। एक दिन पोत के मुख्य अधिकारी श्री गनर, जोकि एक पक्षीविज्ञानी भी हैं, ने मुझे बताया कि ओल्ड लाज़ारेव (सोवियत) स्टेशन के बहुत निकट 50–60 एडेले पेंग्विन का एक छोटा अड़डा है तथा उसके साथ कुछ घंटे व्यतीत करना एक अविस्मरणीय अनुभव होगा। उसी दिन अपना निर्दिष्ट कार्य समाप्त करके मैं अपने केबिन–साथी श्री नागरथ, जोकि भारतीय मौसम–विज्ञान विभाग, नई दिल्ली में एक वैज्ञानिक हैं, के साथ उस अड्डे की ओर चल पड़ा।

एक आधे घंटे के भीतर हम उस स्थान पर पहुंच गए तथा हमने असावधानी से उस अड्डे में अफरातफरी का माहौल पैदा कर दिया। पक्षी जोर–जोर से चीखने लगे और इधर–उधर भागने लगे। मैंने श्री नागरथ को पक्षियों का पीछा करने से रोक दिया और हम उस अड्डे के पास बैठ गए। पक्षियों ने भागना बंद कर दिया तथा वे उत्सुकता से हमें देखने लगे। मैंने अपनी ठेठ हरियाणवी में उनसे बात की, ''देखो नन्हे दोस्तों, हम 11,000 किमी. की लंबी दूरी

तय करके दूर भारत से तुम्हें ही मिलने आए हैं। हम तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगे।'' उन्होने शायद मेरे बात समझ ली और उनमें से एक पक्षी वापस लौटने लगा। वह एक नर था और उस झुंड का नेता था (जैसाकि मुझे बाद में पता चला)। पहले तो उसने उनकी सीमा का उल्लंघन करने के लिए मुझे डांटा–डपटा परंतु कुछ ही समय बाद वह मुस्कुराने लगा। वह कंकड़ों के सबसे बड़े ढेर तक गया और वहां बैठ गया।

अन्य एडेले पेंग्विनों ने भी अपने घोसलों में लौटना शुरू कर दिया (जोकि कंकड़ों के ढेर थे) तथा आधे घंटे के भीतर अड्डे के भीतर सामान्य स्थिति बहाल हो गई। मुझे यह समझते ज्यादा समय नहीं लगा कि अड्डे में पेंग्विन की हैसियत उसके द्वारा जमा किए गए कंकड़ों की संख्या से सीधे–सीधे जुड़ी हुई थी। नर पेंग्विन सामान्यतः ज्यादा कंकड़ रखते हैं तथा उन्हें अधिक सम्मान दिया जाता है। हालांकि ये कंकड़ इन पक्षियों द्वारा घोसले बनाने के लिए एकत्र किए गए थे, परंतु इसके साथ–साथ ये उनकी समृद्धि और हैसियत का संकेत भी थे। कुछ पक्षी दूसरों के घोंसलों से कंकड़ भी चुराते थे, जिसके परिणामस्वरूप पक्षियों के दो झुंडों के बीच लड़ाई भी हो जाती थी। सामान्यतः नेता द्वारा वहां सामान्य स्थिति बहाल कर दी जाती थी तथा कंकड़ों को उनके वैध मालिकों को लौटा दिया जाता था।

यह कभी न समाप्त होने वाला अनोखा खेल था तथा उसका प्रत्येक क्षण रोमांचित करने वाला था। कुछ घंटों के पश्चात, पक्षियों ने हमे अपने समूह का ही एक भाग समझना शुरू कर दिया तथा उनमें से कुछ ने हमारे साथ ही हमारा रात्रि–भोजन खाया, जो हमने उस अड्डे में ही किया था। जब मैं बर्फ की चादर पर सीधे लेटा हुआ था, तो उनमें से दो पक्षियों ने मेरी जेब से मेरा बटुआ और रूमाल निकालने का प्रयास भी किया। मैंने उन्हें डांटा। उन्होंने अपने हाथों को मेरे आवेरकोट पर रगड़कर मुझसे माफी मांगी। एक दूसरी घटना में, मैंने दो पेंग्विनों के झगड़े की मध्यस्थता भी की। मैंने 'क' का 'ख' से संबंधित कंकड़ों को उसे वापस लौटाने के लिए कहा। 'क' ने उसे कंकड़ लौटा दिए तथा उसने मेरी गोद में छलांग लगाकर मुझे धन्यवाद दिया और मेरी जेब से पेन निकालने लगा।

अब प्रातः के चार बज चुके थे तथा हमें कुछ देर नींद लेने के लिए अपने पोत पर वापस लौटना था, ताकि हम अगले दिन के कार्य के लिए तरोताजा हो सकें। हमने एडेले के साथ लगभग आठ घंटे बिताए थे, परंतु ये हमें केवल कुछ ही मिनट प्रतीत हो रहे थे। यह एक ऐसी रात थी (संभवतः ध्रुवीय ग्रीष्म का दिन था), जिसे मैं कभी नहीं भुला सकता हूं। जब हम उनसे विदा हो रहे थे, तो मेरे मन–मस्तिष्क में यह बात कौंध रही थी कि उनसे यह मेरी आखिरी मुलाकात होगी। उन्होंने शायद मेरी उदासी को भांप लिया था। उनमें से दो पेंग्विन अड्डे से बाहर हमें विदा करने निकलीं। वे हमारे साथ–साथ चलती रहीं तथा हमारे रास्ते में आकर हमें रोकने का प्रयास करती रहीं। मेरी आंखों में आंसू थे। हमने उन दोनों को विदा होते समय दिए जाने वाले उपहार के रूप में एक–एक पेन भेंट किया। उन्होंने उन पेनों को अपने डैनों से उठाया और अनमने मन से वापस लौट गईं। सत्रह साल के बाद भी मेरे लिए उस रात को भूल पाना संभव नहीं हो सका है। ईश्वर तुम्हें सदैव प्रसन्न रखे नन्हीं एडेले।

अक्तूबर 73 में कमीशनप्राप्त कैप्टन (आईएन) वी.के. वर्मा (सेवानिवृत्त) ने मौसम–विज्ञान एवं समुद्र–विज्ञान में विशेषज्ञता हासिल की । अंटार्टिका के छठे भारतीय वैज्ञानिक अभियान (1984–87) में भाग लेकर उन्होंने ऐसे केवल 300 भारतीयों में से एक होने की उपलब्धि हासिल की, जिन्हें अंटार्टिका जाने का गौरव प्राप्त है। प्राचार्य, सैनिक स्कूल कुंजपुरा तथा सैनिक स्कूल, नागरोता, जम्मू की सेवा अवधि सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात वे वर्तमान में मोतीलाल नेहरू खेल विद्यालय, राई, सोनीपत में प्राचार्य एवं निदेशक के बतौर कार्य कर रहे हैं। सीबीएसई शिक्षक – 2007 पुरस्कार विजेता श्री वर्मा वर्तमान में भारतीय पब्लिक स्कूल कांफ्रेंस (आईपीएससी) के अध्यक्ष है। इस लेख में वे अंटार्टिका दौरे के अद्‌भुत अनुभव का वर्णन कर रहे हैं।

क्रियाकलापों का अभाव प्रत्येक मानव की बेहतर स्थिति को नुकसान पहुंचाता है, जबकि संचलन एवं सैद्धांतिक शारीरिक व्यायाम इसे सुरक्षित करता है तथा संरक्षित करता है।

प्लेटो

nlj i/kkukpk; D;k dgr g--------

LokLF; ,o d'kyrk Dyc rFkk 'kkjhfjd f'k{kk

''बेहतर स्वास्थ्य'' समूचे विश्व में एक प्रमुख मुद्दो बन गया है। भारतीय विचारधारा स्वास्थ्य को निम्नलिखित सूक्ति में समाहित करती है

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भ्रदाणि पश्यंतु, मा कश्चिद् दुखः भाग भवेत''।

विद्यालयी शिक्षा के विशेष संदर्भ में शारीरिक शिक्षा स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लबों की अवधारणा की उत्पत्ति के पीछे प्रमुख उद्देश्य है। वर्तमान परिदृश्य में, जहां जीवन अनियोजित क्रियाकलापों से भरा हुआ है, लोग जीवन–कल्याण के महत्व को भूल गए हैं। वर्तमान जीवन–शैली के साथ स्वास्थ्य क्लबों की शुरूआत एक स्वागतयोग्य अवधारणा है।

अच्छे स्वास्थ्य को 'kjhj] efLr"d ,o vkRek d i.k leUo; के रूप में परिभाषित किया गया है।

Hkkouk,

vk/;kfRedrk LokLF; efLr"d

vkRek 'kjhj

fofHkUu vo;oks dk vr%dj.k

वर्तमान परिदृश्य में, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को साधनों के संदर्भ में किनारों के रूप में महत्व दिया जा सकता है, जहां शारीरिक शिक्षा साधन है तथा स्वस्थ व्यक्तित्व किनारा है।

स्वास्थ्य से हमारा आशय न केवल एक स्वस्थ शरीर होता है, बल्कि एक मानसिक रूप से संतुलित व्यक्तित्व भी होता है, जोकि संवेदात्मक रूप से स्थायी एक सांस्कृतिक दृष्टि से परिपुष्ट पहलुओं के साथ उसमें चार चांद लगाता है।

शारीरिक शिक्षा तथा स्वास्थ्य क्लबों की उपयोगिता केवल उनमें सक्रिय भागीदारी करने के माध्यम से ही समझी जा सकती है, जो निश्चित रूप से एक स्वस्थ समाज का सृजन करने में सहायता करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप जिम्मेदार नागरिक पैदा होगें क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही बेहतर कार्य कर सकते हैं तथा प्रगतिशील राष्ट्र की ओर कदम बढ़ा सकते हैं।

Jherh jkto'ojh Ikor
प्रधानाचार्य
ग्वालियर ग्लोरी हाईस्कूल
नीमचदोहा, शिवपुरी लिंक रोड, ग्वालियर

i;koj.k lj{k.k vkj vif'k"V e dVkrh

आज उभरती हुई प्रौद्योगिकियां बढ़ी हुई उत्पादकता, बढ़ी हुई कार्यकुशलता और घटे हुए प्रदूषण प्रदान करती हैं। लेकिन, ऐसे पदार्थों के बढ़ते हुए प्रयोग, जो आवश्यक नहीं हैं तथा केवल प्रयोगकर्ता के उच्च स्तरों को ही प्रदर्शित करते हैं, के परिणामस्वरूप देश में अपशिष्टों की अत्यधिक मात्रा का संचयन हो गया है।

अपशिष्ट कटौती तकनीकों तथा नई प्रदूषण–विरोधी प्रौद्योगिकियों के अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। उद्योगों द्वारा अपशिष्ट कटौती के उपायों के कार्यान्वयन के अलावा, व्यक्ति–विशेष भी अनेक स्तरों पर पर्यावरण के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इन बातों के बीच प्रत्यक्ष विवाद विद्यमान है कि पर्यावरण गुणवत्ता तथा उनकी आरामदेह जीवन–शैली के संदर्भ में लोगों द्वारा क्या अपेक्षित है। लोग स्वच्छ हवा चाहते हैं परंतु बड़ी कारों को चलाना नहीं छोड़ते। वे अनपयुक्त उपकरणों का चलाने के लिए सस्ती बिजली चाहते हें। जोखिमपूर्ण अपशिष्ट को खाली भूमि पर संचयित कर देना आर्थिक दृष्टि से व्यवहार्य समझा जाता है। समृद्ध समाजों में रहने वाले लोगों की जीवन–शैली तथा मनोवृत्ति में बदलाव आवश्यक है।

भारत ने भी परमाणु बम के विस्फोट के लिए भारी कीमत चुकाई है, जैसाकि संयुक्त राष्ट्र के उदाहरण से देखा जा सकता है। प्रदूषण अथवा अपशिष्ट के किसी रूप को कम करना ही हमारे कोमल पर्यावरण को क्षतिग्रस्त होने से बचाने का एकमात्र तरीका है। अपशिष्ट में कमी करना आर्थिक दृष्टि से भी औचित्यपूण है।

Jherh ,l- tqutk
प्रधानाचार्य
डी.ए.वी. सेंटनरी पब्लिक स्कूल, रोहतक

LokLF; Dyc

स्वास्थ्य क्लब विद्यालय में छात्रों का ऐसा पारस्परिक संयोजन है जो उन सभी बातों का ध्यान रखता है, जो समग्र बेहतर स्वास्थ्य (मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक एवं सामाजिक) हासिल करने के लिए तरीकों को सुझाने तथा छात्रों द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों को सुझाने के लिए व्यवहार में लाई जाती हैं।

LokLF; Dyc d dN fØ;kdyki fo|y; e LoPN i;koj.k dk ikRlkfgr dju d fy, Hkh lpkfyr fd, tk ldr gA

- जागरूकता अभियान जिनमें छात्रों को स्वच्छता के प्रति संवेदनशील बनाया जाता है।

- विद्यालयों में वृक्षारोपण क्योंकि वृक्ष आक्सीजन छोड़कर और कार्बनडाइआक्साइड ग्रहण करके स्वच्छ हवा निर्मित करते हैं

- छात्रों को 3–आर (पुनःप्रयोग (रीयूज), पुनःचक्रण (रीसाइकल) और पुनःउत्पादन (रीजेनेरेट) के लिए प्रोत्साहित करना।

- विद्यालयों में प्लास्टिक उत्पादों को प्रतिबंधित करना।

- समुचित स्वच्छता और साफ–सफाई के बारे में ज्ञान देना।

jktho jtu /kj
प्रधानाचार्य, प्रागज्योतिष स्कूल,
एनएच–37, गुवाहाटी, असम

nlj f'k{kd D;k dgrs g--------

LokLF; Dyc vkj 'kkjhfjd f'k{kk

आदि मानव एक ऐसे परिवेश में रहता था, जिसमें शारीरिक क्रियाकलाप तथा उससे संशक्त संचालन कौशल अनिवार्य होते थे, विशेष रूप जीवित रहने के लिए अन्य जानवरों के साथ प्रतिस्पर्धा। पूर्व के मानवों की शारीरिक रूप से सक्रिय जीवनशैली हृदय–संवहनी स्थायित्व अवयवों को दुरूस्त रखने तथा मानव–शरीर की ऊर्जा की खपत को संतुलित रखने के लिए महत्वपूर्ण हुआ करती थी। बाद में, अभ्यास के द्वारा विकसित किए गए संवेदी कौशल प्रौद्योगिक समाज में सफलता और उत्तरजीविता के महत्वपूर्ण घटक बन गए। औद्योगिक एवं उत्तर–औद्योगिक समाजों में, शारीरिक क्रियाकलाप की भूमिका एकदम भिन्न हो गई है, जिसमें शारीरिक विशेषज्ञता के कतिपय क्षेत्रों में ही कुशलता विद्यमान रह गई है (उदाहरण के लिए प्रक्षेपकों के साथ सटीकता, मांसपेशियों की ताकत, आदि), जिसके परिणामस्वरूप जीवित रहने के लिए लंबे समय तक शारीरिक क्रियाकलापों का प्रयोग करना महत्वपूर्ण हो गया है। घर में बैठे रहने की जीवन–शैली की ओर अंतरण तथा खान–पान संबंधी परिवर्तनों के संयुक्त प्रभावों के परिणामस्वरूप अनेक जीवन–शैली संबंधी व्याधियों उत्पन्न हो गई हैं, जैसे धमनी रोग, तनाव और अधिक वजन/मोटापे से संबंधित जटिलताएं। हालांकि धमनी–संबंधी हृदय रोग से जुड़ी मृत्यु–दर में गिरावट आई है, जिसका मुख्य कारण जैव–चिकित्सा की प्रगति है, मोटापे से जुड़ी दीर्घकालिक बीमारियों में, जैसे अस्थि रोग और मधुमेह आदि, शारीरिक क्रियाकलापों में कमी एवं कैलोरी (ऊर्जा) के उपभोग में वृद्धि होने के कारण अत्यधिक वृद्धि हुई है।

स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लबों का उद्देश्य किशोर शिक्षा और स्वास्थ्यवर्धन पर परामर्शी कार्यनीतियों को विकसित करना तथा कार्यक्रम समन्वय के पर्यवेक्षण के अंतर्गत परिवर्तन के अभिकर्ता बनने के लिए छात्रों को अधिकार प्रदान करना, क्षेत्रीय पहलुओं का सम्मान करने और छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए छात्रों को अधिकार प्रदान करने के लिए आवश्यकताओं पर चर्चा करना एवं कार्यनीतिक कार्रवाइयों की योजना बनाना तथा परिवर्तन के अभिकर्ता बनने के लिए युवा भारतीयों, शिक्षकों और छात्रों को शक्तियां प्रदान करके पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर देश की क्षमता में वृद्धि करना है।

भारत में माध्यमिक स्कूल स्तर पर शारीरिक शिक्षा पर वर्ष 1970 तक एक औपचारिक, अनुशासनिक शिक्षण पद्धति का वर्चस्व रहा जिसे एनसीसी और एनएसएस कहा जाता है। लेकिन, प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर, औपचारिकता, अन्वेषण, शिक्षण, अधिगम पर्यावरण और वैयक्तिक शिक्षण के प्रति बदलाव संगीत, कला एवं शारीरिक शिक्षा के रूप में उभरना शुरू हो गया। धीरे–धीरे मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ तथा सातवें दशक के पश्चात, बहस तो जारी रही, परंतु शारीरिक शिक्षा में वर्तमान दृष्टिकोणों ने वैयक्तिक विभेदों, वैयक्तिक शिक्षण और समस्या निवारण अनुभवों के सम्मान पर बल देना शुरू कर दिया। क्रीड़ाओं, खेल तथा शिक्षण एवं अधिगम के क्षेत्रों में अभी काफी कार्य करना बाकी रह गया है। मुख्य उद्देश्य बालकों को संवेदी, मिल–बांटकर काम करने पर ध्यान केन्द्रित करने वाले व्यक्ति बनने के लिए प्रोत्साहित करने पर होना चाहिए जिनमें मूल्य, स्व–दिशा तथा उस ज्ञान की भावना ओत–प्रोत हो कि उनके अस्तित्व के लिए क्या अनिवार्य है।

f=Hkqou eqnhjRrk

पीजीटी–अंग्रेजी, पुराणचन्द्र विद्यानिकेतन, कानपुर

LokLF; ,oa 'kkjhfjd f'k{kk

gekjh vlyh nkSyr lkus vkSj pkanh ds Bhdjs ugha gSa] cfYd
,d LoLFk 'kjhj esa mruk gh LoLFk efLr"d gSA
egkRek xka/kh

विद्यालयों का उद्देश्य छात्रों को ज्ञान, कौशल, क्षमताएं, मूल्य प्रदान करना तथा वयस्क अवस्था में एक स्वस्थ जीवन–शैली अपनाने के लिए उनमें उत्साह भरना है। विद्यालयों में स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लब एक स्वस्थ परिसर का निर्माण करने के लिए मुख्य अवयव को ध्यान में रखते हुए अपने क्रियाकलापों की योजना बना सकते हैं।

LokLF; iakR lkgu fo|ky;ksa ¼,pih,l½ द्वारा निम्नलिखित fofo/k LokLF; iakR lkgu क्रियाकलापों की योजना बनाई जा सकती है –

- प्रातःकाल में हल्का–फुल्का व्यायाम।
- समय–समय पर बुनियादी स्वास्थ्य परीक्षण।
- वर्ष की किसी विशेष अवधि में पैदा होने वाले विभिन्न रोगों के बारे में जानकारी देना तथा उनका निवारण करने के विभिन्न उपाय बताना।
- विद्यालय की कैंटीन में पोषक तथा पोषण से भरपूर खाद्य–मदें उपलब्ध कराना।
- प्राथमिक उपचार की बुनियादी जानकारी तथा उसके प्रयोग के बारे में प्राथमिक उपचार की कक्षाएं संचालित करना।
- अनेक विकल्पों में से छात्रों की पसंद के शारीरिक क्रियाकलापों में छात्रों को लगभग 30 मिनट के लिए व्यस्त रखना जैसे फुटबाल, स्केटिंग, खो–खो, जूड़ो, बैंडमिंटन, हैंडबाल, टेबल–टेनिस आदि।
- सभी प्रकार के पोषक खाद्य–पदार्थों को खाने की आदत को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न खाद्य दिवसों का आयोजन।
- किशोर शिक्षा कार्यक्रम पर विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित करना तथा उनकी संवेदनात्मक समस्याओं का निपटान करना।

^^ikRlkgu og g tk vkidk dk;l vkjHk djuk d fy, ioRr dj] vknr og g tk vkidk dk;l djuk tkjh j[kuk e lgk;rk djA^^ ftld ikl LokLF; g] mld vk'kk g] rFkk ftld ikl vk'kk g] mld ikl lc dN gA

&fte fj;u

yoyhu tu, टीजीटी (विज्ञान)
मार्डर्न पब्लिक स्कूल, शालीमार बाग,
दिल्ली–110018

LokLF; Dyc ,o 'kkjhfjd f'k{kk % ,d ln'k

fo|ky;k e f'k{kk rFkk LokLF; ,o dq'kyrk Dyc

यह इस बात को समझने तथा महसूस करने का समय है कि शारीरिक शिक्षा शिक्षण का एक अभिन्न हिस्सा है, जिसका उद्देश्य किसी व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक गुणों का विकास करना है। जैसे किसी लुढ़कते हुए पत्थर (व्यक्ति) पर काई (चर्बी) नहीं जमती है, शारीरिक शिक्षा इस तथ्य पर बल देती है कि आदमी को हमेशा कोई न कोई क्रियाकलाप करते रहना चाहिए।

कक्षाओं में प्रदान की जाने वाली शिक्षा विद्यार्थियों में संवृत्त–स्थान भीति की भावना का सृजन करती है। अतः यदि उन्हें बाहर मैदानों में ले जाया जाए, तो वे खुलकर सांस ले सकते हैं, अच्छा और तरोताजा महसूस कर सकते हैं।

ilUuthr nkl
सहायक अध्यापक, बीआरएस

LokLF; Dyc rFkk 'kkjhfjd f'k{kk vkthou dk;dyki

विद्यालय गुणवत्तापूर्ण, दैनिक शारीरिक शिक्षा प्रदान करके तथा सक्रिय बने रहने के लिए अन्य अवसर उपलब्ध कराकर शारीरिक क्रियाकलापों को बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं परंतु साथ ही विद्यालय उन्हें उनके समस्त जीवनकाल में सक्रिय बने रहने के कौशल भी सिखाते हैं। इस प्रकार, सभी विद्यालयों में सभी कक्षाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा का निवेश करना आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य में सुधार लाने की दिशा में एक औचित्यपूर्ण एवं महत्वपूर्ण कदम हैं।

शारीरिक शिक्षा विद्यालयी पाठ्यचर्या का एक अभिन्न हिस्सा है तथा विद्यालय के जीवन में इसे भी समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। विद्यालय को शारीरिक शिक्षा में छात्र–शिक्षण के लिए मानक निर्धारित करने चाहिए जो राष्ट्रीय और राज्य स्तर के मानकों

तथा मानदण्डों को प्रतिबिंबित कर सकें। इस संबंध में, ऐसे अनेक मॉडल विद्यमान हैं जिन्हें तैयार किया गया है, जिन्होंने हाल ही में शारीरिक शिक्षा के स्वरूप को बदल दिया है।

एक उदाहरण है – स्वास्थ्य क्लब मॉडल। शारीरिक शिक्षा की एक कक्षा उतने ही अवयव प्रदान करती है, जितने कि किसी स्वास्थ्य क्लब में पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, सोमवार को कोई छात्र किक–बॉक्सिंग कर सकता है, अगले दिन योग और बुधवार को वही छात्र एरोबिक्स कर सकता है। इस प्रकार का कार्यक्रम छात्रों के लिए अनेक प्रकार के कार्यकलापों को उपलब्ध करा सकता है। खेल शिक्षा मॉडल नए मॉडल का एक अन्य उदाहरण है, जहां कक्षा को किसी खेल के संचालन के रूप में चलाया जाता है तथा छात्र प्रशिक्षकों, स्कोररों, रेफरियों एवं रिपोर्टरों तथा साथ–ही–साथ खिलाड़ियों की भूमिका निभाते हैं। इस मॉडल का प्रयोग करके विद्यार्थी प्रबंधन कौशलों, गणितीय कौशलों और लेखन कौशलों का अभ्यास करते हैं तथा साथ–ही–साथ खेल कौशलों की ओर सक्रिय रहना भी सीखते हैं

एक अन्य प्रवृत्ति है शारीरिक शिक्षा में स्वास्थ्य और पोषण का समावेश। छात्रों को खेल और संचलन कौशल सिखाने के साथ–साथ शारीरिक शिक्षा अध्यापकों को पाठ्यचर्या में स्वास्थ्य एंव पोषण पाठों का समावेश भी करना चाहिए।

अनुकूलित शारीरिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा का एक उप–विषय है, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले छात्रों पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अतः एक शारीरिक शिक्षक को वैयक्तिक आवश्यकताओं को समझना चाहिए और प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए सभी क्रियाकलापों को आशोधित करना चाहिए। शारीरिक शिक्षक को खेलों एवं मनोरंजक कार्यकलापों में विशिष्ट रूचि के बारे में छात्रों और अभिभावकों के साथ चर्चा भी करनी चाहिए तथा आजीवन क्रियाकलापों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

श्री हरजीत सिंह, पी.ई. शिक्षक,
सेंट स्टीफन स्कूल, टोगान (समीप 38–प0 चण्डीगढ़)
जिला मोहाली–160 014

शारीरिक क्रियाकलाप एक उत्कृष्ट तनाव–निवारक है तथा यह अन्य स्वास्थ्य–संबंधी लाभ भी प्रदान करता है। यह आपके मनोयोग और स्व–छवि में भी सुधार कर सकता है।

– जॉन विखम

fo|ky;ksa }kjk Js"B ifØ;kvksa dk fofue;

fgUnh lhfu;j lsd.Mjh Ldwy] bfUnjk uxj] pUubZ

लगभग सभी विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा में ऐसे कुछ विद्यार्थी होते हैं जो शैक्षणिक उपलब्धियों में अपने सहयोगियों से पीछे रह जाते हैं। ऐसे विद्यार्थी शिक्षकों के लिए बड़ी चुनौती प्रस्तुत करते हैं। जब कभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों को कोई कक्षा–क्रियाकलाप निर्दिष्ट करते हैं, ये छात्र उसे पूरा करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसा संभव है कि उन्हें नियमित कक्षाओं में पूरी तरह से मिश्रित होने में समस्याएं पेश आती हों।

ऐसे विद्यार्थियों पर विषम विद्यार्थियों का ठप्पा लग जाता है तथा शिक्षक द्वारा उन्हें निम्नानुसार वर्गीकृत किया जाता है – ध्यान लेने वाले, आश्रित, अधिकार लेने वाले, बदला लेने वाले। विद्यालयों में ऐसे विद्यार्थियों की सामान्य विशेषताओं का अध्यापकों द्वारा निम्न प्रकार से निरीक्षण किया जाता है :–

/;ku ysus okys	vkfJr	vf/kdkj ysus okys	cnyk ysus okys
साथियों के साथ झगडा	आसानी से हार मानना	आकामक	झूठी अफवाहें फैलाना
अधूरा कार्य	अक्सर रोना	विद्रोही	कटुतापूर्ण
अत्यधिक शोर मचाने वाले	निस्सहाय	जिद्दी	धोखा देना, चोरी करना, नज़रअंदाज करना
हमेशा अपनी सीट से अलग	कमजोर शैक्षणिक प्रदर्शन	पलटकर जवाब देना	दूसरों की कॉपियां फाड़ना

हमने अपने विद्यालय में उनके नकारात्मक व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न तरीके अपनाए हैं तथा उन्हें अनुशासनप्रिय बनाने की कोशिश की है। हमने विद्यार्थियों को उनके स्वयं के व्यवहार को लेते हुए नारे के रूप में एक पट्ट बनाने का निर्देश दिया है, उदाहरण के लिए यदि 'क' शिक्षकों के प्रति विनम्र नहीं है, तो उसे नकारात्मक व्यवहार को सकारात्मक व्यवहार में परिवर्तित करते हुए एक पट्ट बनाने के लिए कहा गया जैसे, ''शिक्षकों के साथ विनम्रता से बात करें।''

इसी प्रकार के अन्य नारे भी चुने गए तथा ऐसे विद्यार्थियों को, जो निरंतर दूसरों को परेशान कर रहे थे और कक्षाओं में समस्याएं पैदा कर रहे थे, ऐसे नारों वाले पट्ट बनाने के लिए कहा गया तथा साथ ही उन्हें कनिष्ठ कक्षाओं में जाने के लिए और वहां पर उन बालकों को उन सकारात्मक बातों के विषय में सलाह देने के लिए कहा गया, जिन्हें किसी भी बालक को एक छात्र के रूप में ''छात्रावधि'' के दौरान अपनाना चाहिए तथा अनुपालन करना चाहिए।

इस पद्धति ने विद्यार्थियों में व्यापक परिवर्तन किया। इस प्रक्रिया से उन्हें अपने गलत कार्यों का अहसास हुआ तथा बहुत जल्द हमने यह पाया कि विद्यार्थियों ने अपनी पढ़ाई में ध्यान

देना तथा यहां तक कि कुछ कक्षाओं के लिए स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं और छात्र नेताओं के रूप में जिम्मेदारी लेना भी शुरू कर दिया।

f'k"; Ld|y] gk|l|j e: u, ;|x dk f'k{k.k

वैश्वीकरण ने कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक प्रतिस्पर्धा का समावेश कर दिया है। ज्ञान के पर्याप्त आदान–प्रदान के साथ शिक्षण और अधिगम को अधिक अभिनव, परिपुष्ट और रूचिकर बनाने के लिए शैक्षणिक प्रणाली भी बदलावों की पहुंच से दूर नहीं है।

वे दिन समाप्त हो गए हैं जब छात्रों को रटने की पद्धति के माध्यम से किताबों के ढेरों को पढ़ने के लिए विवश किया जाता था। आज अधिगम अनुभव देखने और करने, विश्लेषण करने और परिणाम प्राप्त करने के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है।

इस ध्यान में रखते हुए, केजी विभाग के छात्रों के मूल्यांकन के अनवरत चक्रों के माध्यम से शिक्षित, प्रशिक्षित और मूल्यांकित किया जाता है।

नन्हें छात्रों को सर्वप्रथम उनके विद्यालय के परिवेश में प्रवेश करते ही उनके सामाजिक–संवेदात्मक विकास के लिए मूल्यांकित किया जाता है। वैयक्तिक विकास के आधार पर बालकों को उसके बाद उनके स्वयं के शिक्षण के स्थान पर विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से अन्य कौशलों को निखारने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

बालकों की समस्त आठ बौद्धिकताओं को उत्प्रेरित करने के लिए हावर्ड गार्डनर की बहुसंख्यक बौद्धिकताओं का प्रयोग किया जाता है।

इस अवस्था पर परिष्कृत संवेदी कौशलों का विकास प्राथमिक उद्देश्य है क्योंकि यह लेखन के लिए आधार तैयार करता है। कागज को तोड़–मरोड़कर, लोई को फैलाने, मिलाने और उसके साथ खेलेन के माध्यम से उनके परिष्कृत संवेदी कौशल में वृद्धि की जाती है। जब वे इस कौशल में महारथ हासिल कर लेते हैं, तो क्रेयनों का प्रयोग करने तथा सही लय के साथ पंक्तियों के बीच बनी आकृतियों में रंग भरने के लिए धीरे–धीरे उनकी सहायता की जाती है। अंत में उन्हें सरलता से लिखने के लिए पेंसिल को ठीक से पकड़ने की तकनीक सिखाई जाती है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि प्रिंट मीडिया में छोटे अक्षरों का व्यापक रूप से प्रयोग किया जा रहा है, यह निर्णय लिया गया है कि बालकों को उन अक्षरों के साथ शुरूआत करके, जो अपवर्ती पंक्तियों को छूते हैं, छोटे अक्षरों को लिखाया जाना सिखाने की आवश्यकता है, जिसके बाद उन अक्षरों को सिखाया जाता है, तो अधोवर्ती पंक्तियों को छूते हैं।

विज्ञान में विषयों को प्रदर्शनों के माध्यम से सिखाया जाता है। जानवरों, उनके घरों के बारे में सीखने के लिए फार्म हाउसों के छोटे मॉडलों का सृजन किया जाता है तथा उनके रंगों के बारे में विभिन्न रंगों को मिश्रित करके सिखाया जाता है। यहां बालक यह सीखते हैं कि

प्राथमिक रंगों को मिश्रित करके उनसे सहायक रंग प्राप्त किए जा सकते हैं जो नैसर्गिक विकास को उत्प्रेरित करता है।

कठपुतलियों, प्रदर्शनों, भूमिका–निर्वहन के माध्यम से कहानियों का सजीव बनाया जाता है तथा इससे भाषा के विकास में रूचि पैदा होती है।

olonRrk fo|k fogkj] dukVd

अयोग्यताएक अभिशाप नहीं है। यदि कोई व्यक्ति कुछ करने के लिए दृढ़ हो, तो वह समस्त बाधाओं के खिलाफ लड़ सकता है तथा सफलता हासिल कर सकता है। इस बात को वसवदत्ता विद्या विहार, गुलबर्ग जिला, कर्नाटक राज्य की कक्षा XI की छात्रा रश्मि एस. औरसंग ने सही सिद्ध किया है।

शारीरिक रूप से अशक्त होने के बावजूद रश्मि ने उस जीवन को स्वीकार करना सीखा, जो विशेष रूप से उसके जैसे किसी व्यक्ति के लिए सभी प्रकार की चुनौतियों से भरा हुआ है। अपने गैर–अशक्त साथियों के साथ पढ़ना, उनके साथ शैक्षणिक तथा साथ–ही–साथ शिक्षणेत्तर, दोनों ही क्रियाकलापों में प्रतिस्पर्धा करना इस 15 वर्षीय बालिका के लिए आसान नहीं था। परंतु विद्यालय और घर के परिवेश तथा अभिभावकों, शिक्षकों और सहपाठियों के सहयोग के साथ उसने जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर लिया। सम्मिलित शिक्षा पद्धतियों के साथ विद्यालय ने उसे अन्य विद्यार्थियों के साथ समान सहयोगियों के रूप ही एकीकृत करने का प्रयास किया तथा एक नर्तक के रूप में उसकी प्रतिभा को पहचान देते हुए उसे अपने वार्षिकोत्सव में एक मंच प्रदान किया।

रश्मि ने अपनी व्हील–चेयर पर बैठे हुए समुचित भाव–भंगिमाओं और मुखाकृतियों की उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों के माध्यम से किए गए अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

उनका यह प्रदर्शन सीबीएसई के सचिव एंव अध्यक्ष द्वारा कही गई इस बात को सही सिद्ध करने का श्रेष्ठ उदाहरण है, ''सम्मिलित पद्धतियां यह विश्वास दिलाती हैं कि बेहतर शिक्षण और प्रभावी अध्ययन प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रत्येक बालक उस समय सभी कुछ सीख सकता है जब उसे उपयुक्त परिवेश, प्रोत्साहन और अर्थपूर्ण क्रियाकलापों द्वारा समर्थित किया गया हो।''

ehfM;k lSy lekpkj

f'k{kk vkSj [ksyksa esa fopkjksa dk vknku&iznku

शिक्षा, शारीरिक शिक्षा तथा खेलों में विशेषज्ञता और विचारों का आदान–प्रदान करने के उद्देश्य से ब्रिटिश काउंसिल केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा केन्द्रीय युवा मामले और खेल मंत्रालय की भागीदारी के साथ समूचे देश में एक पहल शुरू की है।

''अंतरराष्ट्रीय प्रेरणा'' पहल का उद्देश्य वर्ष 2010 के ओलम्पिक खेलों तक पहुंच के साथ–साथं प्राथमिक विद्यालय अवस्था पर शारीरिक शिक्षा पाठ्यचर्या उपलब्ध करना है। इसमें यह वर्णित किया गया है कि किस प्रकार विद्यालयों और स्थानीय समुदाय में युवा बालकों एवं बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिए शारीरिक शिक्षा और खेलों का प्रयोग किया जा सकता है ताकि वे विद्यालयी जीवन के सभी क्षेत्रों में अपने स्तरों को ऊपर उठा सकें।

यूथ स्पोर्ट्स ट्रस्ट के साथ ब्रिटिश काउंसिल ने विद्यालयों में प्रशिक्षण एवं विकास के क्रियाकलापों की एक श्रृंखला आरंभ की है जिसके तहत मुख्य शैक्षणिक कार्यकर्ताओं और शिक्षकों को ब्रिटिश स्कूलों के अनुभवों के विषय में जानने तथा उन्हें भारतीय परिवेश में भी उपयुक्त रूप से अपनाने के लिए समर्थ बनाया गया है।

*fczfV'k dkmafly rFkk dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ ds chp lg;ksx dk Bksl ifj.kke ^^'kkjhfjd f'k{kk dkMZ Hkkjr % izkFkfed fo|ky;h f'k{kdksa ds fy, fu;ekoyh** dk izdk'ku gS] ftldk ,d cMk Hkkx og 'kkjhfjd f'k{kk dkMZ ¼ihlhbZ½ gS] ftls fczVsu esa iz;ksx esa yk;k tk jgk gSA* इस संसाधन सामग्री का आशय पहलों को बनाए रखना, प्राथमिक स्तर पर शारीरिक शिक्षा की संव्यवहार प्रक्रिया को पुनःप्रवृत्त करना तथा वितरण अवसंरचना को मजबूत बनाना है।

iz;ksfxd dk;Z'kkyk

ब्रिटिश काउंसिल और सीबीएसई ने दिल्ली में एक प्रयोगिक कार्यशाला आयोजित की, जिसका उद्देश्य सीबीएसई, दिल्ली राज्य तथा केन्द्रीय विद्यालयों के प्राथमिक एवं शारीरिक शिक्षा अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना था।

इसमें इस कार्यक्रम से परिचय कराना, विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों के साथ सक्रिय संपर्क करना तथा प्रयोगात्मक उदाहरणों को क्रियान्वित करना शामिल था। यह कार्यशाला अधिक प्रभावशाली ढंग से पीईसी के पाठों को प्रस्तुत करने के लिए वहां विद्यमान शिक्षकों के ज्ञान–आधार को व्यापक बनाएगी जिसके परिणामस्वरूप वे अपने अध्यापन–कार्य के आदर्श अध्यवसायी बनेंगे।

प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों को शिक्षण अनुभव प्रदान करने तथा उन्हें ऐसी क्रीड़ाओं एवं खेलों, जिनमें मुख्य रूप से सतर्कता, संतुलन, समन्वय, गति और शक्ति पर बल दिया गया है, में व्यस्त करने के लिए पीईसी एक सक्षम उपकरण है।

पीईसी न केवल भारतीय विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा पर बल प्रदान कर रहा है, बल्कि यह छात्रों को आजीवन शिक्षण कौशलों से सुसज्जित करने के लिए प्रथम महत्वपूर्ण कदम भी है।

कार्यशाला ने सभी सीबीएसई विद्यालयों में पीई कार्डों का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया तथा यह सर्वशिक्षा अभियान के क्रियान्वयन की दिशा में भी प्रभावशाली रूप से सहायता करेगी, जोकि प्राथमिक स्तर पर सभी के लिए सार्वभौमिक शिक्षा सुनिश्चित करने का कार्यक्रम है।

lHkh dk ,d lkFk ,d ep ij yk,
Hkkjr dh fo|ky;h i.kkyh vf/kd lekurkoknh gksuh pkfg,

ik0 d".k dekj

सामाजिक विज्ञानियों ने यह विश्लेषण करने के लिए भारतीय समाज को अनेक विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत किया है कि यह आधुनिकीकरण की ताकतों के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। जाति एवं वग के वर्गीकरणों तथा ग्रामीण–शहरी विभेद पर बल प्रदान किए जाने से हम प्रायः शैक्षणिक प्रणाली में अंतर्निहित तीक्ष्ण विभाजनों की ओर से अपना ध्यान हटाते हैं जोकि अन्यथा एक समानतावादी ताकत के रूप में कार्य कर सकता है। हमारी शिक्षा प्रणाली में अनेक प्रकार के विद्यालय एवं विश्वविद्यालय हैं। इनमें से कुछेक राष्ट्रीय स्थान ग्रहण करते हैं जबकि अन्य प्रांतीय संस्थाओं के रूप में कार्य करते हैं। पूर्ववती ''केन्द्रीय'' का ठप्पा रखते हैं जबकि पश्चातवर्ती कुछ विशिष्ट राज्यों से जुड़े हुए हैं। दोनों के बीच अंतर वित्तीय एवं कार्यात्मक मानकों, दोनों ही के संदर्भ में, अत्यंत कड़ा है। यह आश्चर्यजनक होगा यदि उनके द्वारा प्राप्त किए जाने वाले विभेदी व्यवहार के उल्लेखनीय सामाजिक परिणाम न हों।

प्रत्येक राज्य के पास कुछेक सौ विद्यालय हैं जो सीबीएसई से संबद्ध हैं, परंतु अधिकांश विद्यालय राज्य बोर्ड से संबद्ध होते हैं। इस प्रकार, दोनों ही सार्वजनिक परीक्षाएं आयोजित करने के लिए सामान्य पद्धतियों का पालन करते हैं तथा विद्यार्थियों को जो अंक वे आवंटित करते हैं, उनकी वैधता समूचे भारत में होती है। पूर्णतः प्रशासनिक दृष्टिकोण से ऐसा प्रतीत होता है कि सीबीएसई तथा राज्य बोर्डों में विभाजित होने वाले ये विद्यालय केवल भारत जैसे विशाल देश में शिक्षा को प्रबंधित करने के प्रयास के तहत ही इस व्यवस्था में हैं। वास्तविकता इससे भिन्न है। दो प्रणालियां दो ऐसे भारत का प्रतिनिधित्व करती हैं जो साथ–साथ तो विद्यमान हैं, परंतु फिर भी अलग–अलग हैं। यह कहना आसान होगा कि वे शैक्षणिक शासन के 'प्राइवेट' और 'पब्लिक' क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं, चूंकि दोनों ही क्षेत्र एक–दूसरे में पाए जा सकते हैं।

हम भारत संख्या 1 और 2 के बीच विभेद को मध्य प्रदेश बोर्ड द्वारा हाल ही में घोषित किए गए दसवीं कक्षा के इस वर्ष के परिणामों पर नज़र डालकर समझ सकते हैं। इस बोर्ड के अंतर्गत निजी और सरकारी, दोनों प्रकार के विद्यालयों की संख्या 4800 है। मध्य प्रदेश में सीबीएसई के स्कूलों की संख्या 432 अथवा राज्य बोर्ड के स्कूलों के दस प्रतिशत से कम है। इस वर्ष, कक्षा X के लिए राज्य बोर्ड परीक्षाओं में शामिल होने वाले बालकों का केवल 35 प्रतिशत भाग ही ''उत्तीर्ण'' होने में सफल हो सका। उत्तीर्ण होने का प्रतिशत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति श्रेणियों में और भी कम है। इस बात में कोई आश्चर्य नहीं है कि परिणामों की घोषणा समूचे राज्य में निराशा व्याप्त कर सकती है। पहले ही दिन पांच छात्रों ने आत्महत्या कर ली। जैसे–जैसे और भी खबरें सामने आईं, सरकार ने खराब उत्तीर्ण प्रतिशत के लिए जिम्मेदार कारणों की जांच करने का वायदा कर कार्रवाई आरंभ कर दी तथा ''अनुपूरक'' श्रेणी का विस्तार करने वाले सामान्य उपचार को नकार दिया।

एमपी बोर्ड के स्कूलों और सीबीएसई के स्कूलों के बीच तुलना केवल उनके परीक्षा परिणामों और कार्यप्रणाली के मामले में ही नहीं है। इसके सामाजिक–आर्थिक आयाम भी हैं। राज्य बोर्ड निर्धन वर्गों के बालकों को भी शिक्षा प्रदान करता है। अधिकांश राज्यों में, गैर–सीबीएसई के विद्यालयों में शिक्षकों का एक लंबे समय से अभाव है तथा वहां अवसंरचना भी अत्यंत खराब है। मध्य प्रदेश में वर्ष 1990 के दौरान नीति की असफलता के कारण शिक्षकों का भारी अभाव पैदा हुआ; तथा राज्य अभी भी इससे उबर नहीं सका है। राज्य ने राजकोषीय घाटे की विशाल समस्या के हल के रूप में परा–शिक्षकों का विकल्प चुना। अन्य राज्यों ने भी यही विकल्प चुना था, परंतु मध्य प्रदेश का मामला इस दृष्टि से अनूठा था कि इसने पूर्ण वेतन पाने वाले शिक्षकों को ''ह्रास होने वाले संवर्ग'' के रूप में घोषित कर दिया था, जिसका अर्थ था कि सरकारी स्कूलों में पूर्णकालिक कैरियर शिक्षकों की आगे कोई भर्ती नहीं होगी। जब ''परा–शिक्षक'' अभिव्यक्ति राजनैतिक दृष्टि से अलोकप्रिय हो गई, तो सरकार ने इसका एक अन्य नाम दिया तथा एक व्यावसायिक कार्यकलाप के रूप में विद्यालयी शिक्षण को समाप्त करने के अपने निर्णय पर पर्दा डालने की कोशिश की।

राज्य बोर्ड तथा सीबीएसई के स्कूलों के बीच अंतर हमारी शैक्षणिक प्रणाली के लिए स्थानिक है तथा समूचे भारत में एक समान है। कुछ ही राज्यों ने सीबीएसई की पाठ्यचर्या को निर्दिष्ट करके इससे पार पाने की कोशिश की है, जिसका अर्थ है – राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की पाठ्यचर्या और पुस्तकें। यह उपचार आसान है परंतु यह केवल लाक्षणिक राहत ही प्रदान कर सकता है। गहन समस्या हमारी परीक्षा प्रणाली में विद्यमान है जिसका निवारण सीबीएसई स्कूल बेहतर तरीके से करने की स्थिति में हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (एनसीएफ, 2009) सामाजिक डार्विनवाद की विचारधारा के संदर्भ में समस्या की पहचान करता है तथा परीक्षाओं का प्रयोग अपने उपकरण के रूप में करता है। यह विचारधारा इस दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है कि केवल कुछ बालक ही सफलता हासिल करने में सामर्थ्य रखते हैं; तथा अन्य अनिवार्यतः असफल हो जाते हैं। एनसीएफ परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए अनेक तरीके सुझााती है, जिनमें शामिल हैं – परीक्षाओं में शामिल होने के लिए अधिक अवसरों का सृजन; प्रश्न–पत्रों के वर्गीकरण में परिवर्तन तथा आंतरिक एवं बाह्य रूप से परीक्षायोग्य ज्ञान एवं बौद्धिक कौशलों के बीच संतुलन। अनेक राज्यों ने एनसीएफ के आधार पर एनसीईआरटी द्वारा तैयार की गई नई पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों को अपनाया है, परंतु कुछ ही ने इसके द्वारा अनुसंशित सुधारों संबंधी गंभीर परीक्षा आरंभ की है। सीबीएसई ने इन सुधारों पर ध्यान दिया है, परंतु क्रियान्वयन में प्रगति झिझकपूर्ण है।

एनसीएफ यह इंगित करता है कि प्रत्येक बालक किसी न किसी रूप में मेधावी है। शिक्षा का कार्य उस मेधा को पहचाना और उसका विकास करना है। जब हम किसी बालक को ''अनुत्तीर्ण'' का दर्जा देते हैं, तो हम उसे न केवल कलंकित कर रहे होते हैं, बल्कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली में अपशिष्ट का चक्र भी आरंभ कर देते हैं। किसी सार्वजनिक परीक्षा में ''अनुत्तीर्ण'' हुए प्रत्येक बालक के साथ ही, भारत उस बालक की घर पर परवरिश और

विद्यालय में शिक्षा पर निवेश किए गए अमूल्य संसाधनों को खो देता है। इस परिप्रेक्ष्य में, प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से, सरकार एवं विद्यालयों को बालकों एवं शिक्षण के अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। उन्हें अंकों की दौड़ में और भी तेज़ दौड़ने के लिए धकेलने के स्थान पर विद्यालयों और सरकार को अध्यापकों की भर्ती एवं तैनाती की यादृच्छिक प्रक्रियाओं तथा प्राइवेट एवं पब्लिक, दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षक शिक्षा की खराब स्थिति पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

ik0 d"k dekj] एनसीईआरटी के निदेशक हैं
साभार – द टाइम्स ऑफ इंडिया, भारत

fØ;kdykiksa dk v|ru lekpkj

cky Hkkjrh ifCyd Ldwy ,uVhihlh >kukSj us ifj;kstuk izn'kZu dk vk;kstu fd;k

बाल भारती पब्लिक स्कूल, एनटीपीसी झानोर (गुजरात) ने ''ऊर्जा और पर्यावरण'' विषय पर 2 मई 2009 को अपना वार्षिक परियोजना प्रदर्शन आयोजित किया। पर्यावरण की रक्षा करने के लिए ऊर्जा बचाने की आवश्यकता के बारे में छात्रों और अभिभावकों के मध्य जागरूकता का सृजन करने के उद्देश्य से इस विषय को विशेष तौर पर चुना गया था। अधिक ऊर्जा की अनावश्यक मांग के परिणामस्वरूप अवैज्ञानिक कार्यकलाप संचालित होते हैं जो पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं। इस अवसर पर कक्षा I से कक्षा XII तक के विद्यार्थियों ने अपने बनाए गए प्रदर्शों (मॉडलों) का प्रदर्शन किया। छात्रों ने अपने प्रदर्शों (मॉडलों) में विज्ञान और पर्यावरण को एकीकृत करने का सार्थक प्रयास किया था। उनका कार्य सूर्य, जो समस्त ऊर्जा का स्रोत है, खाद्य–पदार्थों से लेकर तेलों तक था। प्रत्येक छात्र के पास इस विषय के बारे में प्रदर्शित करने के लिए कुछ–न–कुछ अवश्य था। वरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों ने शोध–संबंधी अनेक आविष्कारों को प्रस्तुत किया, जिनसे दर्शक बहुत प्रभावित हुए। प्रदर्शनी में आने वाले दर्शकों ने इस आयोजन की सराहना की तथा ऊर्जा एवं पर्यावरण के प्रति सर्तक नागरिक के रूप में वे वहां से विदा हुए। परियोजना प्रदर्शनी का आदर्श–वाक्य था ''पर्यावरण बचाने के लिए ऊर्जा बचाएं''।

fp=

iwoZ&jk"Vªifr MkW0 ,-ih-ts- vCnqy dyke fodkl fo|k fudsru ds Nk=ksa ds e/; mifLFkr gq,

माननीय पूर्व–राष्ट्रपति डा0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 13 मार्च 2009 को विकास विद्या निकेतन का दौरा किया। अन्य अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ प्रधानाचार्य ने उनका स्वागत किया।

डा0 कलाम ने ''ज्ञान आपको महान बनाता है'' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने यूनान के महान दार्शनिक प्लेटो के शब्दों का स्मरण किया, ''राज्य का निर्माण करने के हमारे उद्देश्य में किसी एक वर्ग को गैर–आनुपातिक खुशी प्रदान करना नहीं था, परंतु सभी लोगों के लिए पर्याप्त खुशी लाना ही हमारा उद्देश्य था।'' उन्होंने महान तमिल कवि तिरूवल्लूर के उपदेश का भी उल्लेख किया ''राष्ट्र का निर्माण करने के लिए महत्वपूर्ण अवयव है :– रोगमुक्त होना; ज्ञान अर्जन की उच्च क्षमता; उच्च उत्पादकता; सौहार्दपूर्ण जीवन–यापन तथा ठोस रक्षा प्रणाली।''

सदाचार के स्रोतों के बारे में बोलते हुए, जो हृदय में सदविचारों का भाव रखते हुए किसी भी युवा का निमार्ण कर सकते हैं, उन्होंने माता और पिता को प्राथमिकता तो दी परंतु कहा कि सर्वाधिक प्राथमिकता ''प्राइमरी शिक्षकों'' की है जो युवाओं को सृजनात्मकता और साहस के गुणों से युक्त कर सकते हैं। उन्होंने ज्ञान के साथ सभी अभियानों में सफलता हासिल

करने का सूत्र भी दिया। ज्ञान घर, अच्छी पुस्तकों, शिक्षकों और शैक्षिक पर्यावरण कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है।

''सृजनात्मकता + सदाचार + साहस = ज्ञान''

fp=

ijek.kq Åtk dUnh; fo|ky;] ekuqxq: e u'khy inkFkk
d fo:) varjjk"Vh; fnol dk vk;kstu

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, मानुगुरू में ''नशीले पदार्थों के विरूद्ध अंतरराष्ट्रीय दिवस'' मनाया गया। विद्यार्थियों ने नशीले पदार्थों के सेवन तथा उसके अवैध व्यापार पर विद्यालय सभा में भाषण भी दिए।

उप–प्रधानाचार्य श्री एम.एस.के. देवरायलू ने इस अवसर पर एक भाषण दिया। उन्होंने धूम्रपान के प्रभावों तथा धूम्रपान से होने वाली बीमारियों के विषय में बताते हुए छात्रों के लिए सकारात्मक स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार की वकालत की। निरंतर धूम्रपान करने वाले व्यक्ति कैंसर और हृदयघात जैसी बीमारियों को विकसित करने का गंभीर जोखिम झेलते हैं।

''मद्यपान से बचें'', ''धूम्रमान न करें'' जैसे नारों का प्रदर्शन किया गया।

विद्यालय सभा प्रभारी श्रीमती डी. विजयलक्ष्मी ने न केवल छात्रों पर अपितु समग्र रूप से समाज पर नशीले पदार्थों के सेवन के कुप्रभावों का उल्लेख किया।

अंत में छात्रों ने सामूहिक रूप से इस संकट से लड़ने की तथा अपने समाज को तम्बाकूरहित समाज बनाने की शपथ ली।

Jh ukjk;.k dUnh; fo|ky;] unxkye] dkYye
e [kxky'kkL= ij lxk"Bh

वर्ष 2009 को अंतरराष्ट्रीय खगोलशास्त्र वर्ष के रूप में मनाए जाने के फलस्वरूप, श्री नारायण केन्द्रीय विद्यालय, नेदुंगोलम, कोल्लम ने ''स्पेक्ट्रम 2009'' शीर्षक से संगोष्ठियों की एक श्रृंखला आयोजित की। इसका औपचारिक उद्‌घाटन शुक्रवार, 31 जुलाई को प्रातः 9. 30 बजे विद्यालय के सभागार में इसरो, त्रिवेन्द्रम के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 बालगंगाधरन ने किया। उद्‌घाटन समारोह के पश्चात मुख्य अतिथि ने ''चन्द्रयान मिशन'' पर एक व्याख्यान दिया। इसके पश्चात, छात्रों के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया जो अत्यंत सूचनाप्रद और विचारोत्तेजक था।

संगोष्ठी की द्वितीय श्रृंखला 17 अगस्त 2009 को आयोजित की जाएगी जिसमें निदेशक केरल राज्य विज्ञान एवं प्रद्योगिकी सहस्राब्दि और प्रियदर्शनी तारामंडल के निदेश डा0 अरूल गेराल्ड प्रकाश ''खगोलशास्त्र और दूरबीन'' विषय पर व्याख्यान देंगे।

fp=

lqcks/k ifCyd Ldwy] t;iqj esa 'kkjhfjd fØ;kdyki

छात्रों में शारीरिक क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करने के लिए सुबोध पब्लिक स्कूल, जयपुर प्रातःकालीन प्रार्थना–सभा में प्रतिदिन व्यायाम कराता है। शारीरिक शिक्षा के अध्यापक छात्रों को योग और एरोबिक्स में प्रशिक्षण देते हैं ताकि वे समूचे दिन तरोताजा बने रहें। विभिन्न आयुवर्गों के छात्रों के लिए समय–समय पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, जैसे फुटबॉल, वॉलीबॉल, खो–खो, हैंडबॉल, बास्केटबॉल, शतरंज, स्केटिंग, एथेलेटिक्स आदि। विद्यालय नर्सरी से लेकर बारहवीं कक्षा तक के सभी आयु वर्गों के लिए वार्षिक खेल प्रतियोगिता भी आयोजित करता है।

fp= % lqcks/k ifCyd Ldwy }kjk vk;ksftr fjys jsl esa Hkkx ysrs gq, fo|kFkhZ

Hkkjrh; fo|k Hkou ifCyd Ldwy] gSnjkckn esa ^^lqj{kk mik;ksa vkSj vkikrdkyhu rS;kfj;ksa^^ ij dk;ZØe

भारतीय विद्या भवन पब्लिक स्कूल, जुबली हिल्स, हैदराबाद ने वर्ष 2009 में ''सुरक्षा उपायों और आपातकालीन तैयारियों'' पर एक सूचनाप्रद कार्यक्रम आयोजित किया। विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विभागों के शिक्षकों तथा साथ ही कक्षा–XI और कक्षा–XII के छात्रों ने कार्यशाला में भाग लिया।

व्याख्याता ने एक पावर–प्वांइट प्रस्तुति पेश की जिसमें आपदा के समय ''आपातकालीय प्रतिक्रिया दल'' की आवश्यकता को दर्शाया गया था। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के उद्धरण ''अपनी रक्षा स्वयं करें'' का वर्णन किया जिसमें सामान्य समझ, मस्तिष्क का चौकन्नापन और अभिवृत्ति की आवश्यकता होती है जिसमें आप एक ''जीवन रक्षक'' बन सकते हैं। उन्होंने विद्यालय तथा साथ ही घर में आग से सुरक्षा के लिए अपनाए जाने वाले उपायों की जानकारी भी दी। उन्होंने आपातकालीन स्थितियों में शिक्षकों द्वारा छात्रों को आग की दुर्घटनाओं के संबंध में जागरूकता का सृजन करने तथा सुरक्षा अनुदेशों को बताने की भूमिका पर भी बल दिया, जोकि आगे चलकर समाज में यह संदेश फैलाने के लिए ''श्रेष्ठ संदेशवाहक'' हैं।

jk"Vªh; fefyVªh Ldwy] csaxywj esa f'k{kdksa dh izf'k{k.k dk;Z'kkyk

राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल, बेंगलूर ने 8 जून से 12 जून 2009 तक शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। छह विद्यालयों के कुल तीस शिक्षकों ने इसमें भाग लिया, जिसमें बेंगलूर, बेलगांव, अजमेर (राजस्थान), धौलपुर (राजस्थान) और चैल (हिमाचल प्रदेश) स्थित सभी पांच मिलिट्री स्कूलों के शिक्षक शामिल थे। यह पहला अवसर था जब राष्ट्रीय इंडिया मिलिट्री कॉलेज (आरआईएमसी), देहरादून के पांच शिक्षकों ने भी राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूलों के साथ मिलकर इस कार्यशाला में भाग लिया।

प्रभावी शिक्षण तकनीकों, बहु बौद्धिकता, विषय आधारित शिक्षण और शिक्षण के निर्माणात्मक सिद्धांतों तथा साथ ही इन्हें पाठ योजनाओं में शामिल करने के तरीकों एंव उपायों पर अनेक विचारोत्तेजक सत्र आयोजित किए गए।
विषय आधारित शिक्षण जीवन–संबंधी एवं क्रियाकलाप आधारित होता है जहां ज्ञान एवं तथ्यों को एकांत में प्रदान नहीं किया जाता बल्कि इन्हें जोड़ा जाता है और निर्मित किया जाता है। निर्माण करना उस विचार को निर्दिष्ट करता है जिसमें सीखने वाले स्वयं के लिए ज्ञान का निर्माण करता है – प्रत्येक सीखने वाला वैयक्तिक (और सामाजिक) दृष्टि से अर्थ का निर्माण करता है – जो भी कुछ वह सीखता है।

इन दो सत्रों में प्रतिभागियों की सर्वाधिक प्रतिभागिता देखी गई।

fp= ¼ jk"Vªh; fefyVªh Ldwy] cSaxyksj esa vk;ksftr f'k{kd izf'k{k.k dk;Z'kkyk esa Hkkx

ysrs gq, f'k{kd

ekMuZ ifCyd Ldwy] 'kkyhekj ckx esa Qy fnol dk vk;kstu

विद्यालय के आदर्श–वाक्य ''स्वस्थ खाइए, स्वस्थ रहिए'' की भावना को बनाए रखते हुए तथा प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में स्वस्थ भोजन–आदतों को आत्मसात करने के उद्देश्य से माडर्न पब्लिक स्कूल में फल दिवस का आयोजन किया गया।

छात्रों ने अपने लाए हुए सलाद खाने का भरपूर आनंद लिया। उन्हें ऐसा करके बहुत अच्छा लगा। फलों को सजाने के अनेक अभिनव तरीके भी प्रयोग में लाए गए।

छात्र तथा शिक्षक अपने–अपने फल लाए थे। शिक्षकों ने फलों से काफी रूचिकर वस्तुएं बनाईं जैसे पपीतों से पेंग्विन, खरबूजे से बस, केले से कुत्ता, आम से मिस्टर पीयर डक।

fp= ¼ cky fnol ds nkSjku ekMuZ ifCyd Ldwy ds izkFkfed d{kk ds fo|kFkhZ

Mhih,l jktdksV us vrj Mhih,l yksd&u`R; izfr;ksfxrk ¼if'pe vapy½ dh estckuh dh

दिल्ली पब्लिक स्कूल राजकोट ने 12 जुलाई 2009 को अंतर डीपीएस लोक–नृत्य प्रतियोगिता (पश्चिम अंचल) – ''लोकगीत रूचि'' की मेजबानी की। नौ दिल्ली पब्लिक स्कूलों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया – डीपीएस अहमदाबाद (पूर्व), डीपीएस अहमदाबाद (भोपाल), डीपीएस गांधीनगर, डीपीएस जोधपुर, डीपीएस उदयपुर, डीपीएस नवी मुंबई, डीपीएस सूरत, डीपीएस जयपुर और मेजबान विद्यालय डीपीएस राजकोट।

विजेताओं की घोषणा क्षेत्रीय निदेशक, आई.एन.टी. (लोक–नृत्य अनुसंधान केन्द्र) डा0 चन्द्रकांत हिरानी (प्रधानाचार्य, श्री अर्जुन लाल हिरानी पत्रकारिता एवं कला प्रदर्शन कॉलेज) तथा सुश्री रूपल मेहता (शहर की लब्धप्रतिष्ठ नृत्यांगना एवं नृत्य–निर्देशक) ने की।

श्री मनोज दुबे, प्रधानाचार्य ने इस अवसर पर कहा ''संगीत और नृत्य जीवन के अभिन्न अंग हैं तथा शिक्षा को केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए बल्कि उसे कला के रूपों के साथ भी जोड़ा जाना चाहिए।''

fo|kJe vrjk"Vh; fo|ky;] tk/kiqj e fuLlgk; ckydk dk fy, j{kkca/ku

विद्याश्रम अंतराष्ट्रीय विद्यालय, जोधपुर के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों ने ''लव–कुश संस्थान अनाथालय'' और ''अंध विद्यालय'' के कुछ बालकों के चेहरों पर मुस्कुराहट लाने का निश्चय किया।

वीआईएस के विद्यार्थियों ने रंग–बिरंगी राखियां तैयार कीं। कक्षा V की छात्राएं 04 अगस्त, 2009 को इन राखियों, मिठाई के डिब्बों तथा पूजा के लिए आवश्यक सामग्री के साथ अनाथआलय की ओर निकल पड़ीं। उनका बड़ी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। उन्होंने कुछ समय इन बालकों के साथ बातचीत भी की। पूजा और तिलक के पश्चात, उन्होंने इन बालकों को राखियां बांधीं। इन नेत्रहीन बालकों ने अपने दूसरे हाथ से इन राखियों में समाए स्नेह को महसूस किया। उनकी इच्छा थी कि वे उन्हें देख सकते और उनकी तारीफ कर सकते। परंतु वे अभी भी बहुत ही प्रसन्न थे।

बालकों ने कुछ देर परस्पर चर्चा की। हमारी कुछ छात्राएं यह जानने में रूचि ले रही थीं कि ये बालक अंधविद्यालय में करते क्या हैं। इसके उत्तर में, हमारी छात्राओं को विद्यालय में ले जाया गया और उनके द्वारा बनाई गई वस्तुएं दिखाई गईं। वे रंगीन थैलों, दीवार की सुंदर सजावटों, उत्कृष्ट मिट्टी के बर्तनों और उनके द्वारा बनाई गईं अनेक अन्य चीजों को देखकर चकित रह गईं। यह बात उनकी कल्पना से परे थी कि जो बालक देख नहीं सकते हैं, वे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएं कैसे बना लेते हैं।

> दौड़ना जीवन का सबसे बड़ा रूपक है, क्योंकि जो कुछ आप इसमें झोंकते हैं, वही इससे प्राप्त करते हैं।
>
> ऑप्राह विन्फ्रे

fo|ky;ks ls lekpkj

mn; ifCyd Ldiy] Qjhnkckn e LFkkiuk fnol

उदय पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद ने 23 फरवरी, 2009 को अपना नौवां स्थापना दिवस मनाया। इसमें आयोजित कार्यक्रमों में आधुनिक वैज्ञानिक युग में सांस्कृतिक विरासत और शैक्षणिक विकास की झलक दिखाई गई। छात्रों ने प्रत्येक कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया जिसमें कार्यक्रम संचालन से लेकर विभिन्न प्रस्तुतियों में भाग लेना शामिल था। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती मधु त्रिपाठी ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। विभिन्न गणमान्य अतिथियों तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किए।

T;ksfrl lsVªy Ldiy] fr:ouUriqje e
vrjjk"Vªh; u'khys inkFkksa ls eqfDr fnol

ज्योतिस सेंट्रल स्कूल, कज़ाकट्टम, त्रिवेन्द्रम में 26 जून 2009 को नशीले पदार्थों के सेवन तथा उनके अवैध व्यापार के विरूद्ध अंतरराष्ट्रीय नशीले पदार्थों के सेवन से मुक्ति दिवस काफी धूमधाम से मनाया गया। विद्यार्थियों ने इस दिवस के महत्व को दर्शाने वाले चार्ट तथा पोस्टर तैयार किए। एक वरिष्ठ छात्र मास्टर यासिर हारीद ने धाराप्रवाह और अत्यंत प्रभावशाली तरीके से आशुभाषण प्रस्तुत किया। इस दिवस से संबंधित एक प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई। शिक्षकों ने धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों के विरूद्ध छात्रों को सावधान किया।

वरिष्ठ प्राचार्य ने नशीले पदार्थों के हानिकारक प्रभावों पर एक संदेश दिया। सीबीएसई के पत्र में उल्लिखित दिशा–निर्देशों का पूरी तरह से अनुपालन किया जा रहा है, फिर भी इस अवसर पर उन दिशा–निर्देशों को पुनः दोहराया गया।

fp=

fgUnw fo|kihB] lksuhir e
f'k{kd vfHkeq[khdj.k dk;Øe

हिन्दू विद्यापीठ, सोनीपत ने विद्यालय के सभागार में एक सप्ताह के लिए अर्थात 01.06.2009 से 06.06.2009 तक अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, सामाजिक विज्ञान और सुलेखन पर सेवाकालीन अभिमुखी कार्यक्रम (कार्यशाला) आयोजित की गई।

प्रो0 हुकम सिंह और प्रो0 वी.पी. सिंह (गणित), प्रो0 वी.पी. श्रीवास्तव (भौतिकी) तथा डा0 नाहर सिंह (सामाजिक विज्ञान) इस कार्यशाला में व्याख्याता थे।

मेजबान विद्यालय के अलावा पांच अन्य विद्यालयों के शिक्षकों ने कार्यशाला में भाग लिया। अतिथि विद्यालयों में हिन्दू सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, न्यू कोर्ट रोड, सोनीपत, हिन्दू मालवीय सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सोनीपत, एस.एस. हिन्दू सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सोनीपत तथा हिन्दू सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सोनीपत शामिल थे।

पांच संस्थाओं के लगभग 400 शिक्षकों को शिक्षण की अभिनव पद्धतियों और आधुनिक प्रौद्योगिकी से लाभान्वित कराया गया। शिक्षकों को शिक्षण को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने से संबंधित कुछ तकनीकों से भी परिचित कराया गया। जो शिक्षक इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए, उनकी कुल संख्या थी – अंग्रेजी में 55, गणित में 65, भौतिकी में 60, सामाजिक विज्ञान में 30 और सुलेखन में 400.

एक अत्यंत प्रेरणाप्रद सत्र तथा मेजबान प्राचार्य द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला की समाप्ति हुई।

fp=

th-,l- dY;k.klqUnje Lekjd fo|ky;] rfeyukMq
e: foKku ,o yfyr dyk [k.Mk dk mn?kkVu

23 जून 2009 डा0 जी.एस. कल्याणसुन्दरम स्मारक विद्यालय, चोज़न मालीगन, कुम्बाकोनम के लिए एक विशेष दिन था, जब यहां पर श्री एन. नागराजू, क्षेत्रीय अधिकारी, सीबीएसई, चेन्नई द्वारा विज्ञान एवं ललित कला खण्डों का उद्घाटन किया गया। प्रधानाचार्य श्रीमती रवेती रंजन ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने आयोजित किए गए शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए कार्मिकों और छात्रों का बधाई दी।

सीबीएसई, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक (अकादमिक) श्री जी0 बालासुब्रामणियण, जोकि वर्तमान में विद्यालय के दिग्दर्शक हैं, ने राय व्यक्त की कि अकादमिक उत्कृष्टता के साथ–साथ बालकों के चहुंमुखी विकास को महत्व दिया जाना चाहिए।

विद्यालय के सह–समन्वयक ने विद्यालय के क्रियाकलापों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि बालक के सर्वतोमुखी विकास से जुड़ी रीति से बालकों को शिक्षा प्रदान करने के अध्यक्ष के चिंतन ने अभिभावकों से पर्याप्त सकारात्मक प्रतिक्रियाएं हासिल की है तथा यह इस बात से स्पष्ट हो जाता है, जब वे अपने बालकों के लिए विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। इस समारोह की समाप्ति उप–प्रधानाचार्य द्वारा दिए गए धन्यवाद–ज्ञापन के साथ हुई।

fp=

Mh,oh ifCyd Ldwy] flenxk] >kj[k.M e:
,u-Mh- xkoj foKku [k.M dk mn?kkVu

मंगलवार, 16 जून 2009 डीएवी पब्लिक स्कूल, सिमदेगा के लिए एक सुनहरा दिन है। +2 विज्ञान के लिए संबद्धता मिलने के पश्चात डीएवी संस्था के अग्रदूत स्व0 सर एन.डी. ग्रोवर के नाम पर नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया गया। लोक सभा के माननीय उपाध्यक्ष समारोह में मुख्य अतिथि थे। क्षेत्रीय निदेशक, डीएवी पब्लिक स्कूल (रांची अंचल), श्री एस. के. सिन्हा, प्रधानाचार्य, डीएवी गांधी नगर सीसीएल–रांची, श्री टी.पी. झा, प्रधानाचार्य, डीएवी खुंटी ने समारोह की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम का आरंभ वैदिक मंत्रोचारण से हुआ तथा उसके पश्चात आदिवासी नृत्य पेश किया गया। विद्यालय के नन्हे बालकों द्वारा अनेक आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। दर्शकों द्वारा अंग्रेजी नाटक ''ओथेलो'' की अत्यंत सराहना की गई।

अपने ''स्वागत–भाषण'' में प्रधानाचार्य श्री पी.के. सामल ने विभिन्न क्षेत्रों में विद्यालय की उपलब्धियों का संक्षिप्त इतिहास पढ़कर सुनाया।

दर्शकों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय निदेशक रांची अंचल श्री एल.आर. लाहिरी ने छात्रों के उत्कृष्ट कार्यों और उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया। मुख्य अतिथि ने छात्रों को माननीय पूर्व–राष्ट्रपति डा0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के पद्चिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित किया। धन्यवाद–ज्ञापन श्री आर.के. प्रुष्टी, टी.जी.टी. (भूगोल) द्वारा दिया गया।

uo fuekZ.k ifCyd Ldwy] dkphu
us Nk=&usrk fuokZfpr fd,

नव निर्माण पब्लिक स्कूल, कोचीन की छात्र परिषद को दिनांक 18 जुलाई 2009 को विद्यालय सभागार में आयोजित मानाभिषेक समारोह में शपथ दिलाई गई। विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष द्वारा मुख्य अतिथि ले0 कर्नल वर्गीस जार्ज, 21 केरल बटालियन एनसीसी के कमान अधिकारी को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि ने अपने संक्षिप्त परंतु प्रभावशाली संबोधन में एक संतुलित व्यक्तित्व के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने उल्लेख किया कि आयोजन क्षमता, नेतृत्व कौशल तथा मानसिक शक्ति शिक्षा के माध्यम से संपोषित एवं विकसित होती है। पूर्व हैड–गर्ल पिंकी एन. डेनियल ने दर्शकों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि द्वारा पदभार की शपथ ग्रहण कराई गई तथा प्रधानाचार्य श्री के. जार्ज ने नवनिर्वाचित नेताओं को मशाल थमाई। उन्होंने मोमबत्तियां जलाकर तथा विद्यालय गान गाकर सत्यनिष्ठा से शपथ ली। श्रीमती मिनी वर्गीज़ ने सीबीएसई बोर्ड परीक्षाओं, एआईएसएससीई और एआईएसएसई–2009 में विद्यालय टॉपरों और विषय में टॉपर रहे छात्रों का प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए। एक अत्यंत उत्कृष्ट प्रदर्शन के पश्चात नवनिर्वाचित हैडबॉय टोनी डेविस ने धन्यवाद–प्रस्ताव पेश किया। अनेक रंगारंग कार्यक्रमों के पश्चात समारोह की समाप्ति हुई।

vkehZ Ldwy v:.kkpy izns'k esa vkradokn fojks/kh fnol

आर्मी स्कूल, टेंगा वैली के कक्षा VI के छात्रों ने 21 मई 2009 को आतंकवाद–विरोधी दिवस के अवसर पर एक विशेष सभा का आयोजन किया।

इस दिवस का आयोजन युवा छात्रों में हिंसा तथा आतंकवाद की भावना से दूर रहने के प्रति जागरूकता का सृजन करने तथा आतंकवाद के कारण लोगों को हुईं दुःख और तकलीफों का वर्णन करने के उद्देश्य के साथ किया गया।

छात्रों ने एक लघुनाटिका प्रस्तुत की जिसमें दर्शाया गया था कि किस प्रकार आतंकवाद के काले बादल मानवता के प्रकाश को निगल रहे हैं तथा समूचे विश्व के अनेक भागों से भले लोग किस प्रकार इस बुराई का सामना कर रहे हैं और इस सुंदर धरती में शांति, प्रेम, जीवन और सौहार्द का सृजन कर रहे हैं। लघुनाटिका में हिंसा और आतंकवाद के खतरों के प्रति जागरूक करने एवं व्यक्तियों, समाज और देश पर विपरीत प्रभाव को दर्शाया गया था।

इसके पश्चात हमारे उन बहादुर जवानों, नेताओं और देशवासियों को श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए दो मिनट का मौन रखा गया जिन्होंने आतंकवाद से लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

इस विशेष सभा की समाप्ति इस संदेश के साथ हुई – ^^vkradokn dh gkj gksxh vkSj 'kkafr cgky gksxhA^^

fp=

ØkbLV uxj lhfu;j lsd.Mjh Ldwy] f=osUnze
us lgk;rk ds fy, gkFk c<+k;k

इस क्राइस्ट नगर परिवार के कक्षा–VI में पढ़ने वाले एक अत्यंत युवा सदस्य को जून 2009 माह के प्रथम सप्ताह में डाक्टरों द्वारा रक्त–कैंसर से पीड़ित पाया गया। इस समाचार ने सारे विद्यालय को हिला दिया तथा उसके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा प्रार्थना–सभा आयोजित की गई। सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना से प्रेरित होकर विद्यालय ने हरिकृष्ण के उपचार के लिए धन की मदद करने का निर्णय लिया। इसी प्रकार के विचार को उन्होंने पहले भी क्रियान्वित किया गया था। विद्यालय का परिसर एक बड़े भोजनागार में परिवर्तित हो गया जिसमें घर के बने अनेकों व्यंजन सजे हुए थे, जिन्हें छात्रों के अभिभावकों द्वारा तैयार किया गया था। छात्र, शिक्षक, उनके अड़ोसी–पड़ोसी, शुभचिंतक, आम आने–जाने वाले विद्यालय परिसर में जमा हो गए जिनका उद्देश्य उन व्यंजनों को खाने से ज्याद उन्हें खरीदना था। इस नेक कार्य के लिए मदद करके सभी ने काफी प्रसन्नता महसूस की।

vkfnR; fcjyk ifCyd Ldwy] rfeyukMq esa
fo'o i;kZoj.k fnol

आदित्य बिरला स्कूल में 5 जून 2009 को पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर ग्रासिम इंडस्टीज़ लि0 के कार्यपालकों, विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा छात्रों द्वारा बड़ी संख्या में पौधारोपण किया गया।

छात्रों के मध्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता सृजित करने के लिए एक विशेष प्रातःकालीन सभा आयोजित की गई जिसमें पर्यावरण के प्रति शपथ, पर्यावरण से संबंधित गीत और पर्यावरण से जुड़ी नाटिकाएं प्रस्तुत की गईं। जीव–विज्ञान के शिक्षक तथा ईको–क्लब के सचिव श्री एन. सेंथिलकुमार और विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गीत गोविंद मेनन ने पर्यावरण पर भाषण देकर छात्रों का ज्ञानवर्धन किया।

प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ‘‘प्रकृति’’ तथा ‘‘पृथ्वी बचाओ’’ विषयों पर एक चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

इस प्रकार, प्रधानाचार्य के मार्गदर्शन के तहत शिक्षकों के एक समर्पित समूह की भागीदारी सुनिश्चित करके इस समारोह को अर्थपूर्ण बनाया गया।

dSfEcz t fo|ky;] bafnjkiqje us HkwdEi ij ,d rS;kjh&vH;kl vk;ksftr fd;k

कैम्ब्रिज विद्यालय, इंदिरापुरम ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, भारत सरकार के सहयोग से 10 जुलाई 2009 को भूकंप पर एक तैयारी–अभ्यास आयोजित किया। मेजर जनरल वी.के. दत्ता तथा उनके 12 कार्मिकों वाले दल ने भूकंप पर एक तैयारी–अभ्यास संचालित किया। प्रधानाचार्य सुश्री ज़रूलीन कौर ने अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया तथा विद्यालय के कार्मिकों और छात्रों से उनका परिचय कराया। अधिकारियों ने छात्रों को आपदा के समय अपनाई जाने वाली विभिन्न कार्यनीतियों के बारे में बताया और आतंकवादी हमलों, आग, अपहरण, गैस–आपदा, बाढ़, भू–स्खलन, भूकंप आदि जैसी स्थितियों में अपनाए जाने वाली विभिन्न सुरक्षा तकनीकों का प्रदर्शन किया। उनके राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया दल के सदस्यों में सीआईएसएफ, बीएसएफ, आईटीबीपी तथा सीआरपीएफ के अधिकारी शामिल थे तथा उन्होंने स्थान खाली कराने, खोज और बचाव, श्वानों द्वारा तलाशी और प्राथमिक उपचार पर आवश्यक तकनीकों की जानकारी दी।

तैयारी–अभ्यास के दौरान छात्रों से खतरे की घंटी को सुनते ही टेबलों के नीचे छिप जाने के लिए कहा गया। बाद में, उन्हें किसी भी छात्र के लापता होने के बारे में नियंत्रण कक्ष में सूचना देने के लिए कहा गया। बचाव दल को घायल छात्रों को निकालने के लिए भेजा गया जिन्हें प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की गई।

प्रधानाचार्या श्रीमती ज़रूलीन कौर ने आपदा प्रबंधन के महत्व पर बल दिया। इस सत्र ने छात्रों को भविष्य में किसी भी आपातकालीन स्थिति का सामना होने की स्थिति में आवश्यक कौशल से लैस किया। उन्होंने कार्मिकों एवं छात्रों को प्रशिक्षित करने तथा उन्हें आवश्यक जानकारी प्रदान करने के लिए समूचे दल के प्रयासों की सराहना की।

fp=

: def.k noh ifCyd Ldwy] ihreiqjk e
cgq&lkaLd`frd vknku&inku dk;Øe

रूकमणि देवी पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा के 7 छात्रों और 1 अध्यापक के एक दल ने बहु–सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत 19 मई से 1 जून 2009 तक ग्लेडनबैच, जर्मनी स्थित एक यूरोपीय स्कूल फ्रेहर–वोम–स्टेन–शूल का दौरा किया। यह कार्यक्रम विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री अनीता गर्ग द्वारा आरंभ की गई एक पहल पर आधारित है, जिसका लक्ष्य दोनों विद्यालयों तथा संबंधित क्षेत्रों में शिक्षा प्रणाली एवं संस्कृति को समझने के माध्यम से सहयोगी विद्यालय के साथ संबंधों को मजबूत बनाना है। इस कार्यक्रम को कक्षाओं में शिक्षण कार्य को देखकर, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थानों का भ्रमण करके जैसे कोलोन, फ्रेंकफर्ट, मार्गबर्ग आदि; क्षेत्र की प्रशासनिक संरचना का जायजा लेने के लिए ग्लेडनबाश के मेयर और जिले के सरकारी अधिकारियों से भेंट करके और भी ज्ञानवर्धक बनाया गया। बलात् श्रम पर सूचना और प्रलेखन केन्द्र का दौरा करके इस दल के छात्र यूरोप के सामाजिक–राजनैतिक इतिहास के बारे में अवगत हुए जिसे इन युवा सीखने वाले छात्रों के पाठ्यचर्या ज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी की वृद्धि हुई। भारतीय छात्रों ने जल–मल उपचार संयत्र का दौरा करके वैश्विक जल–संबंधी पर्यावरणीय समस्याओं से लड़ने पर जानकारी हासिल की। इस आदान–प्रदान कार्यक्रम से अधिकतम लाभ उठाने के लिए भारतीय दल ने विभिन्न विषयों पर पूर्व–निर्धारित तुलना–आधारित परियोजनाएं भी पूर्ण कीं तथा अपन जर्मन साथियों को संगीत एवं नृत्य कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं विरासत से परिचित कराया जिसकी पर्याप्त सराहना की गई और इसे स्थानीय मीडिया ने भी काफी प्रचारित किया।

Mh,oh ifCyd Ldwy] pUnz'ks[kjiqj dk Nk=
jk"Vªh; fp=dyk izfr;ksfxrk dk fotsrk

डीएवी पब्लिक स्कूल, चन्द्रशेखरपुर के कक्षा–V के छात्र सूरज दास ने राष्ट्रीय बाल कलाकार पुरस्कार जीता जिसमें उन्हें 25,000 रू0 नकद एवं प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

यह राष्ट्रव्यापी चित्रकला प्रतियोगिता भारत सरकार द्वारा तीन वर्गों में आयोजित की गई थी अर्थात विद्यालय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर, जहां 28 राज्यों के कक्षा–IV और कक्षा–V के 6 लाख से भी अधिक छात्रों ने भाग लिया था। इस चित्रकला प्रतियोगिता का विषय था ''सार्वजनिक जागरूकता के सृजन के लिए ऊर्जा संरक्षण''। सूरज के चित्र को कला आलोचकों द्वारा सर्वाधिक अद्यतन एवं उपयुक्त पाया गया और उसकी प्रशंसा की गई। सूरज ने राज्य स्तर पर द्वितीय स्थान हासिल करने पर 8000 रू0 का नकद पुरस्कार भी प्राप्त किया।

fp=

Jh ukjk;.k lsaVªy Ldwy] dksYye esa f'k{kd dkS'ky lao/kZu

श्री नारायण सेंट्रल स्कूल, नेंदुगोलप, कोल्लम ने कोल्लम और तिरूवनंतपुरम जिलों के सीबीएसई संबद्ध विद्यालयों के शिक्षण संकाय के लिए 2 और 4 मई 2009 को दो–दिवसीय कौशल संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया जिसका उद्देश्य उनके ज्ञान को अद्यतन बनाना, उनकी सक्षमता को बढ़ाना तथा उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक प्रवृत्तियों और विकासों से अवगत कराना था।

चार सत्रों में संचालित किए गए इस कौशल संवर्धन कार्यक्रम का उद्घाटन डा0 एस. जयरामन, अध्यक्ष, भारतीय मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन, दक्षिण भारतीय अंचल द्वारा एक साधारण समारोह में किया गया। प्रधानाचार्य डा0 एन. विश्वराजन ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया।

2 मई को आयोजित पहले सत्र में डा0 के.एस. अनीता ने ''बालक की क्षमता को कैसे प्रदर्शित करें'' विषय पर चर्चा की तथा उन तकनीकों का वर्णन किया जिससे उनकी क्षमताएं और भी मुखर हो सकती हैं। डा0 उषा, शिक्षा संकाय, श्री नारायण प्रशिक्षण कॉलेन, नेंदुगंडा ने प्रभावी शिक्षण और सीखने के लिए शिक्षण–उपकरणों के महत्व पर बल दिया।

प्रो0 राजेश एस. ने ''कक्षाओं के लिए स्मरण–शक्ति संवर्धक'' विषय पर व्याख्यान दिया। चौथे सत्र के व्याख्याता श्री जोजा फिलिप ने वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में ''आई.टी. केन्द्रित शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया'' विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रत्येक सत्र के बाद आयोजित किए गए प्रश्नोत्तरी सत्रों से शिक्षक बहुत लाभान्वित हुए जिसमें उपर्युक्त विषयों के बारे में उनकी शंकाओं का निवारण किया गया तथा इन क्षेत्रों में उन्होंने एक नया आयाम हासिल किया।

Kkunhi Ldwy] f'kekssxk] dukZVd esa nl o"kZxkaB dk lekjksg

ज्ञानदीप स्कूल, जवाली, शिमोगा ने अपनी स्थापना के दस वर्ष पूरे होने के अवसर पर 27 फरवरी 2009 को एक समारोह आयोजित किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि भारत रत्न डा0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम थे। इस समारोह को लगभग 18,000 दर्शकों द्वारा देखा गया जिसमें जिले की लगभग सभी शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षक और छात्र शामिल थे। विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल करने वाले छात्रों का परिचय प्रधानाचार्य श्रीकांत एम. हेगड़े द्वारा कराया गया तथा मुख्य अतिथि द्वारा उनकी प्रशंसा की गई। एक अत्यंत विचारोत्तेजक और प्रेरणाप्रद भाषण देते हुए डा0 अब्दुल कलाम ने छात्रों को उनके हृदयों में नेकी की भावना संपोषित करने के लिए प्रेरित किया। छात्रों के जीवन में शिक्षक द्वारा निभाई गई भूमिका पर बल प्रदान करते हुए उन्होंने भारत को प्रगति की राह पर ले जाने का नेतृत्व प्रदान करने के लिए आज के युवाओं की क्षमता पर विश्वास जताया। छात्रों के साथ बातचीत के सत्र में,

उन्होंने अनेकों शंकाओं का निवारण किया तथा कुछ प्रभावशाली संदेश भी छात्रों को दिए जिनसे प्रत्येक श्रोता के मन में काफी प्रभाव पड़ा। यह अविस्मरणीय समारोह उन हजारों छात्रों के लिए एक स्वपन के पूरा होने की भांति सिद्ध हुआ जो महान दार्शनिक को सुनने के लिए विद्यालय परिसर में एकत्र हुए थे।

fp=

xk;d tkMh u iBkfu;k ifCyd Ldy] jkgrd
d fy, [;kfr vftr dh

सृजनात्मकता अनेक तरीकों से अभिव्यक्त की जा सकती है तथा संगीत इसे प्रस्तुत करने के लिए एक संभावित साधन बन सकता है।

पठानिया पब्लिक स्कूल, रोहतक की भाई–बहनों की अनूठी जोड़ी अर्थात कक्षा–V के विशाल कंसल और कक्षा–II की संजीविनी कंसल ने अपने अद्वितीय गायन कौशल के बल पर विद्यालय तथा राज्य के लिए ख्याति अर्जित की जब उन दोनों ने अखिल भारतीय सांस्कृतिक संघ, पुणे द्वारा 29 मई 2009 को आयोजित अखिल भारतीय बहु–भाषायी नाट्य, नृत्य, संगीत प्रतियोगिता (वैश्विक सांस्कृतिक विविधता – 2009) में क्रमशः शास्त्रीय वादन संगीत और देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

fp=

ekuo ifCyd Ldy] verlj e
d{kkvk e ;kx fØ;kdyki

मानव पब्लिक स्कूल, अमृतसर ने शारीरिक एवं मानसिक तनाव को कम करने तथा मांस–पेशियों को आराम देने के लिए ''कक्षा में योग'' नामक परियोजना आरंभ की है। इसने विद्यार्थियों को कक्षाओं में अनुशासन बनाए रखने में सहायता की है। इसके परिणामस्वरूप, दैनिक जीवन में योग के लाभों के बारे में वर्धित जागरूकता के सृजन के साथ–साथ सृजनात्मकतानुमुखी क्रियाकलाप/स्व–सुधार में भी वृद्धि हुई है।

विद्यार्थी अब जितने भी समय विद्यालय में रहते हैं, वे शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय तथा मानसिक दृष्टि से सतर्क रहते हैं। उनके ध्यान लगाने के स्तरों में भी वृद्धि हुई है। वे स्व–सुधार के लिए समय का समुचित उपयोग करना भी सीख गए हैं।

fp=

fnYyh ifCyd Ldy] nx e u'khy inkFkk d lou rFkk
mudh vo/k rLdjh d fo:) vrjjkVh; fnol

डीपीएस, दुर्ग के एनएसएस के छात्रों द्वारा नशीले पदार्थों के सेवन तथा उनके अवैध व्यापार के विरूद्ध आस–पास के इलाकों में रहने वाले लोगों के बीच जागरूकता का सृजन किया

गया। इसी उद्देश्य के लिए संस्था के मुख्य द्वार के बाहर तथा संस्था के भीतर तंबाकू विरोधी नारे भी लगाए गए।

vfHkuo ifCyd Ldy e Lor=rk fnol vkj d".k tUek"Veh lekjkg

अभिनव पब्लिक स्कूल ने 13 अगस्त 2009 को विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस और कृष्ण जन्माष्टमी बड़े धूमधाम और उत्साह के साथ मनाई। इस शानदार अवसर पर विद्यालय को सुंदर ढंग से सजाया गया था। स्वागत गीत के पश्चात कनिष्ठ और वरिष्ठ छात्रों ने अनेक नृत्य एवं गीत प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि ने स्वाधीनता हासिल करने के लिए भारतीयों द्वारा दिए गए बलिदान के विषय में छात्रों को बताया।

जिन छात्रों ने विद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियां हासिल की थीं, उन्हें मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। राष्ट्रगान के साथ समारोह की समाप्ति हुई।

fp=

Kku efnj ifCyd Ldy] ukjk;.kk] fnYyh e eDr fnol ,o ihVh,e dk vk;ktu

सुप्त प्रतिभा तथा उभरते कलाकारों की सृजनात्मकता के प्रदर्शन के लिए और अभिभावकों के साथ आमने–सामने चर्चा करने के उद्देश्य से एक मुक्त सत्र का आयोजन करने के लिए ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल, नारायणा, दिल्ली ने हाल ही में मुक्त दिवस एवं पीटीएम का आयोजन किया।

इस दिन अभिभावकों ने अपने बालकों के मजबूत और कमजोर पक्षों के बारे में शिक्षकों के साथ चर्चा की तथा अपने बालकों के ''सुधार'' के एकमात्र उद्देश्य से उनसे परामर्श किया व उनकी सलाह हासिल की। उनकी चर्चा में न केवल उनके बालकों का शैक्षणिक प्रदर्शन शामिल था बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व से लेकर अनेक अन्य मुद्दे भी शामिल थे। अभिभावकों के प्रश्नों में उनके बालकों के घर पर उनके भाई–बहनों के साथ व्यवहार, उनकी भविष्य की आकांक्षाएं, मनोवैज्ञानिक समस्याएं, किशोरावस्क्था की उलझनें आदि विषय शामिल थे।

सामूहिक चर्चा, कविता पाठ, भाषा–शिक्षण पर वाद–विवाद प्रतियोगिता से लेकर विभिन्न विषयों पर मॉडलों की प्रदर्शनी के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रदर्शनी में इन विषयों पर मॉडल प्रदर्शित किए गए थे – संभाव्यता, परिचित आंकड़े, यूरिया की शुद्धता का परीक्षण, खाद्य–चार्ट, बिजली का उत्पादन करता बांध, धुएं को शुद्ध करने वाला उपकरण, भारत के पर्यटन स्थल, संसाधन के रूप में लोग, शिकारा (आइसक्रीम की चम्मचों से बना), ट्रैफिक सिगनल, उद्योगों के प्रकार, बास्केट कोर्ट में बस की स्थलाकृति आदि। उन्होंने ''देखना ही विश्वास करना है'' के वाक्य को सही सिद्ध कर दिखाया।

जाने–माने प्रशासकों की पुस्तक प्रदर्शनी ने भी मुक्त दिवस 2009 के आयोजन में चार चांद लगाए तथा इसे देखने बड़ी संख्या में लोग विद्यालय पहुंचे।

Vxkj ifCyd Ldy] o'kkyh] t;ij e
fo'o tul[;k fnol dk vk;ktu

विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर टैगोर पब्लिक स्कूल, वैशाली के छात्रों ने मानव जाति के स्वस्थ विकास तथा उसकी सुरक्षा पर अपनी गहरी चिंता और देखरेख की भावना व्यक्त की।

विद्यालय के प्रताप हाउस के छात्रों ने जनसंख्या विस्फोट के भयंकर परिणामों के बारे में बालकों के मध्य जागरूकता फैलाने के लिए प्रातःकालीन सभा में एक लघु–नाटिका प्रस्तुत की।

जनसंख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पड़ रहा है जो मानव जाति की अत्यधिक एवं तर्कहीन मांग के कारण पहले ही अत्यधिक तेज दर से घट रहे हैं। जीवन की समाप्ति का भावी संकट वास्तव में एक यथार्थ संकट है।

छात्रों ने प्रतिज्ञा ली कि वे प्राकृतिक संसाधनों के औचित्यपूर्ण प्रयोग के माध्यम से उनके सतत विकास को प्रोत्साहित करके मानव जाति की सेवा करेंगे।

fp=

fnYyh ifCyd Ldy] oMknjk e pukoh c[kkj

जुलाई 2009 माह में विद्यालय परिसर माध्यमिक वर्ग में छात्र विद्यालय परिषद के चुनावों की गतिविधियों से ओत–प्रोत हो गया। दूसरे विद्यालयों से विशिष्ट बनाने वाली अनेक बातों में एक है हमारी संस्था द्वारा अपनाया गया आधुनिक दृष्टिकोण जिसका उद्देश्य आदर्श नागरिक बनाने के लिए छात्रों को आदर्श सांचे में ढालना है।

लोकतंत्र में प्राधिकार जनता के पास होता है। छात्र अपनी पाठ्यपुस्तकों में लोकतंत्र और चुनावों के बारे में पढ़ते हैं, परंतु उन्हें प्रदान किए गए तत्काल अनुभव ने उन्हें रोमांचित कर दिया। 46 छात्रों ने 14 विभिन्न पदों के लिए चुनाव लड़ा। इन छात्रों का चुनाव विभिन्न संकायों के शिक्षकों के एक पैनल ने किया जिनमें शामिल थे – अनुशासन समिति, केन्द्रीय परिषद के सदस्य तथा पार्षद। ये चयन विभिन्न मानदण्डों पर भी आधारित थे जैसे शैक्षणिक योग्यता, अनुशासन, विभिन्न क्षेत्रों में उनका योगदान, उनके द्वारा धारण की गई आत्मविश्वास और नेतृत्व की विशेषताएं।

चयनित छात्रों ने अपने चुनाव–चिह्नों और घोषण–पत्रों के प्रचार के लिए अभियान चलाया और उनका जमकर प्रचार किया। माहौल उस समय गंभीर हो गया जब 31 जुलाई 2009

को वास्तविक मतदान आरंभ हुआ। बालकों की उंगलियों में निशान लगाए गए तथा उन्होंने मतपत्रों का प्रयोग करते हुए अपना मत डाला।

निर्वाचित उम्मीदवारों को प्रधानाचार्य एन.के. सिन्हा द्वारा 22 अगसत 2009 को पदाधिकारियों के रूप में प्राधिकार और अधिकार प्रदान किया गया।

fp=

lh-,e-Mh-,-oh- lhfu;j lsds.Mjh ifCyd Ldwy] ekaMh Mcokyh eas o`)ksa ds fy, varjjk"Vªh; fnol

सी.एम.डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी पब्लिक स्कूल, मांडी डबवाली ने 1.10.2009 को विद्यालय परिसर में वृद्धों के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस को ''पितामह दिवस'' के रूप में मनाया

एल.के.जी. से दूसरी कक्षा तक के बालकों के पितामहों को कार्यक्रम देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। श्री गुरदयाल मोंगा ने मुख्य अतिथि के रूप में ज्योति प्रज्ज्वलित की। नन्हें बालकों ने अपने शानदार नृत्य तथा मधुर गीतों के लिए दर्शकों की वाहवाही लूटी। श्रेष्ठ पितामह का चयन ''प्यार की पोटली'' नामक क्रियाकलाप द्वारा किया गया जिसे अनेक उप–क्रियाकलापों में बांटा गया था। इस क्रियाकलाप के अंतिम चरण में पितामहो को एक मिनट के भीतर सर्वाधिक बार गायत्री मंत्र का उच्चारण करना था तथा श्री श्याम लाल मित्तल इसमें विजेता रहे और उन्होंने श्रेष्ठ पितामह का पुरस्कार प्राप्त किया। इस अवसर पर, विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री सरिता गोयल ने कहा कि यह उन छात्रों के लिए एक छोटा सा प्रयास है जो अपनी भारतीय मूल्यों तथा संस्कृति को लगभग भूल चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पितामह हमें अपना नैसर्गिक और बिना–शर्त प्रेम उपलब्ध कराते हैं। उनके अगाध अनुभव और मार्गदर्शन के साथ हम नए क्षितिजों की तलाश करने के लिए अपने पंखों को विकसित कर सकते हैं और उड़ान भर सकते हैं।

fp=

'kghn jktiky Mh,oh ifCyd Ldwy] n;kuan fogkj esa jktho xka/kh v{k; ÅtkZ fnol dk vk;kstu

राजीव गांधी अक्षय ऊर्जा दिवस के अवसर पर शहीद राजपाल डीएवी पब्लिक स्कूल के गोल्ड क्लब ने पर्यावरण विभाग, दिल्ली सरकार के सहयोग के साथ 12 अगस्त 2009 को एक पोस्टर निर्माण एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की।

क्लब का मुख्य उद्‌देश्य पर्यावरणीय मुद्‌दों के बारे में जागरूकता का प्रसार करना है। आस–पास के परिवेश को हरा–भरा बनाने के लिए शिक्षक और छात्र मिलकर कार्य करते हैं। आधुनिकीकरण और औद्योगिकीकरण के आगमन के साथ ही हमारे गैर–नवीकरणीय संसाधन तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं। नवीकरणीय संसाधनों की ओर रूपांतरित होना समय की मांग है। इस दिशा में, उक्तसंदर्भित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।

दिवस का विषय था ''नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन।'' यह छात्रों को आने वाले ऊर्जा संकट के प्रति संवेदनशील बनाने का एक प्रयास था। कक्षा–VI से कक्षा–VIII के छात्रों ने नारों से युक्त रंग–बिरंगे पोस्टरों के माध्यम से अपनी चिंता को व्यक्त किया। वरिष्ठ छात्रों ने विचारोत्तेजक निबंध लिखे। उन्होंने ऊर्जा के गैर–नवीकरणीय संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग को समाप्त किए जाने पर बल दिया। छात्रों ने इस पृथ्वी को रहने के लिए एक बेहतर स्थान बनाने के लिए नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग करने के लिए तरीके भी सुझाए। ऊर्जा संकट की समस्या का निवारण करने के लिए एक प्रतिभागी ने अपने निबंध में कहा कि ''तीन'' आर का प्रयोग किया जाए – ''री–साइकल (पुनः चक्रण), रीयूज़ (पुनः प्रयोग) और रिड्यूज़ (अंधाधुंध प्रयोग में कटौती)।''

प्रधानाचार्या सुश्री रेणु लरौया ने छात्रों के प्रयासों की सराहना की। इसके अलावा, उन्होंने छात्रों से बेहतर कल के लिए ऊर्जा संरक्षण का अनुरोध भी किया। स्टाफ सदस्यों तथा छात्रों ने नवीकरणीय संसाधनों का संरक्षण करने की प्रतिज्ञा ली।

fp=

किसी व्यक्ति की शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक स्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए आंदोलन एक दवा के समान है।

कैरोल वेल्च

fo|ky;k e LokLF; Dyc

,bl h,e exukfy;k ek:fr ifCyd Ldy] cxykj

एईसीएम मगनोलिय मारूति पब्लिक स्कूल, अरेकेटे, बंगलौर के ''स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लब'' ने ''स्वास्थ्य किसी व्यक्ति–विशेष की शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक कुशलता का प्रतीक है'' की सूक्ति पर पूर्णतः विश्वास करते हुए पूरे वर्ष निरंतर अनेक कार्यकलाप संचालित किए। शिक्षकों, गैर–शिक्षण स्टाफ तथा छात्रों के लिए आयु–आधारित व्यक्तित्व विकास पाठ्यक्रम संचालित किए गए।

8 से 13 वर्ष के बालकों अर्थात कक्षा–IV से कक्षा–VII के लिए ''द आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन'' की ओर से पिछले लगातार तीन वर्षों से ''आर्ट एक्सेस'' (उत्कृष्टता के लिए चहुंमुखी प्रशिक्षण) पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य खेल गतिविधियों के माध्यम से बालकों में छिपी नैसर्गिक प्रतिभा का पता लगाना है। उन्हें खेलों, चर्चाओं तथा ''सुदर्शन क्रिया'' नामक श्वास की तकनीक के माध्यम से जीवन की विभिन्न संभावनाओं के विषय में बताया जाता है। यह क्रिया बालकों के फेफड़ों की क्षमता तथा मानसिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए कराई जाती है।

पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु में सामान्य शिष्टाचार, स्वास्थ्यवर्धक भोजन की आदतें, अतिथि–सत्कार, बालकों के लिए आयु–अनुकूल योगिक आसन तथा सुदर्शन क्रिया शामिल है। ''सुदर्शन क्रिया'' में भस्त्रिका प्राणायाम के 3 चक्र शामिल होते हैं जिसके पश्चात 2–3 मिनट की चक्रीय लयबद्ध श्वास–प्रक्रिया होती है तथा यह बालकों द्वारा लगभग 5 मिनट तक शवासन में लेटने के साथ ही समाप्त होती है। समय के साथ–साथ इस प्रक्रिया को सटीक बनाया जाता है ताकि बालक बिना किसी मार्गदर्शन के इसका अभ्यास कर सके।

इस पाठ्यक्रम में जीवन कौशलों तथा मूल्य आधारित शिक्षण एवं जीवन के महत्व, मस्तिष्क को तेज बनाने वाल खेल, ऐसे खेल जो बालकों में जागरूकता के स्तर को बढ़ाते हैं, सहपाठियों के साथ सहयोग तथा उनका ध्यान रखना, पढ़ाई और खेलों पर बेहतर ध्यान और अन्य अनेक परिणामोनुमुखी खेल खिलाए जाते हैं तथा सकारात्मक समूह–गतिशीलता के विकास पर बल दिया जाता है।

इस पाठ्यक्रम का मुख्य विषय है – ''मैं आपका हूं।''

शिक्षकों ने स्वयं में निम्नलिखित परिवर्तन सूचित किए :–

- बढ़ा हुआ उत्साह और प्रेरणा।
- बेहतर दल–भावना और कार्य के प्रति निष्ठाा।
- अधिक उत्तरदायित्व लेने के प्रति इच्छा–भावना।
- संबंधित कार्य करने तथा गृह–तनाव से निपटने के लिए अच्छी तरह तैयार रहना।

वास्तव में, यह छात्रों, शिक्षकों और प्रबंधन–दल के लिए एक अत्यंत उत्साहवर्धक अनुभव है।

,'o;Z ifCyd Ldwy] dkoye dk LokLF; ,oa d'kyrk Dyc

ऐश्वर्य पब्लिक स्कूल, कालाकोड के स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लब का उद्घाटन रामाराव सरकारी अस्पताल, नेदुन्गोलम के सहायक सर्जन डा0 जी. राजू द्वारा 14 जुलाई, 2009 को किया गया। स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लब का गठन व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के क्रियान्वयन के एक भाग के रूप में सीबीएसई के निदेश पर किया गया था। यह समग्र कुशलता पर विशेष ध्यान केन्द्रित करता है जिसमें छात्रों का भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य भी शामिल है। उप शिक्षा और मीडिया अधिकारी पी.एस. विजयलक्ष्मी ने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में स्वास्थ्य जागरूकता प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

अपने संबोधन में डा0 राजू ने अच्छे स्वास्थ्य के उद्देश्यों तथा इसे बनाए रखने के विभिन्न उपायों का वर्णन किया। उन्होंने आज के तनावपूर्ण वातावरण में बेहतर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए ''योग'' के महत्व पर बल डाला। उन्होंने युवा पीढी में बुरी आदतों के पनपने पर भी चर्चा की जो सामाजिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालती हैं। उन्होंने उन बुरी बादतों पर भी प्रकाश डाला जो स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती हैं जैसे तम्बाकू, पान, शराब आदि तथा इनसे पीछा छुड़ाने के निवारक उपाय भी बताए। उन्होंने छात्रों के मध्य जागरूकता का सृजन करने के लिए आस–पड़ोस में मिलने वाली स्वास्थ्य पत्रिकाओं, स्वास्थ्य समाचारपत्रों तथा स्लोगनों को अपनाने का सुझाव भी दिया।

अपने स्वागत भाषण में उप शिक्षा और मीडिया अधिकारी पी.एस. विजयलक्ष्यमी ने छात्रों को उनके स्वास्थ्य के बारे में जागरूक एवं सतर्क रहने का परामर्श दिया। उन्होंने तम्बाकू–मुक्त परिवेश के महत्व को भी रेखांकित किया क्योंकि यह खराब स्वास्थ्य और विभिन्न रोगों की मुख्य वजह है। उन्होंने कहा कि एक बुरी आदत होने के कारण तम्बाकू के प्रयोग को समाज से बाहर निकाला जा सकता है, यदि युवा पीढ़ी इस दिशा में जागरूक है तथा इस संबंध में उसने अपना इरादा मजबूत बना लिया है।

अपने संबोधन में विद्यालय के प्राचार्य डा0 जी. अनुलाल ने छात्रों में अच्छी आदतें विकसित करने तथा बेहतर स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए विद्यालय को सभी संभव सहायता प्रदान करने और सतत जागरूकता कार्यक्रमों को आयोजित करते रहने का आश्वासन दिया। उन्होंने स्वास्थ्य और कुशलता क्लब की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों के लिए सभी शिक्षकों तथा क्लब के सदस्यों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने यह भी सूचित किया कि जुलाई 2009 के तीसरे सप्ताह में छात्रों के लिए योग कक्षाएं तथा व्यापक स्वास्थ्य परीक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

जागरूकता के सृजन के लिए छात्रों को बुरी आदतों के कुप्रभावों तथा युवा पीढी के स्वास्थ्य पर एक टेलीफिल्म भी दिखाई गई। क्लब की संयोजक सुश्री उषा कुमारी ने धन्यवाद–ज्ञापन प्रस्तुत किया।

छात्र एक दिन में लगभग 6–7 घंटे विद्यालय में रहते हैं, अतः उनके स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए विद्यालय एक उल्लेखनीय भूमिका निभा सकते हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों पर खराब स्वास्थ्य के प्रभाव तथा इसी प्रकार स्वास्थ्य पर खराब शिक्षा के प्रभाव अब स्पष्ट हो गए है। स्वास्थ्य, विद्यालय में हाजिरी और समय की पाबंदी तथा साथ ही ध्यान केन्द्रित करने और सीखने की योग्यता को प्रभावित करता है। ''बेहतर स्वास्थ्य कक्षा और जीवन में अच्छे प्रदर्शन की कुंजी है।''

बालकों के अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्वास्थ्य तथा उनकी पहचान के निर्माण को सुनिश्चित करने के लिए विद्यालयों को अनेक कदम उठाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, शैक्षणिक और वैयक्तिक सफलता तथा साथ ही कुशलता के लिए स्वतंत्र एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के विकसित स्तर अनिवार्य हैं। सीबीएसई ने ''व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम'' नामक एक रचनात्मक और सकारात्मक कार्यक्रम आरंभ किया है जो अन्य अनेक विषयों के साथ युवाओं को शारीरिक शिक्षा में रूचि लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक विद्यालय को स्वास्थ्य एवं कुशलता क्लब स्थापित करना चाहिए जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों की व्यावहारिक रूप से कुशलता होना चाहिए। इन क्लबों को विद्यालयों में एक समर्थनकारी परिवेश का सृजन करने के लिए नोडल केन्द्रों के रूप में कार्य करना चाहिए।

शारीरिक शिक्षा रोजमर्रा की दिनचर्या का वह प्रमुख खण्ड है जिसमें प्रत्येक छात्र भाग लेने के लिए अत्यंत उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि यह वह समय है, जब छात्र खेल के मैदान पर होते हैं और अपने मनपसंद खेलों में व्यस्त हो जाते हैं। शारीरिक शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य विद्यालयों में शैक्षणिक अभिमुखीकरण में आनंद का अवयव शामिल करना है।

जीवन की तेज़ रफ्तार, काम पर जाने वाले माता–पिता, कंक्रीट के जंगलों में बदल गए हमारे शहरों में उपयुक्त खेल के मैदानों का अभाव तथा जंक फूड के लिए बढ़ती हुई रूचि कुछ ऐसे कारण हैं, जोकि छात्रों के जीवन को शारीरिक कार्यकलापों से वंचित करने के लिए पूर्णतः जिम्मेदार हैं। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से विद्यालय छात्रों के मन में वैयक्तिक स्वच्छता और सफाई के महत्व को बैठा सकते हैं। शारीीिक शिक्षा की कक्षाओं को उद्देश्य छात्रों को वैयक्तिक स्वच्छता की आदतें तथा जीवन में वैयक्तिक स्वच्छता बनाए रखने के महत्व के बारे में सिखाना है। यह अधिक वजन वाले बालकों के वजन को कम करने, ''स्वस्थ टिफिन'' जैसे क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकता है।

संक्षेप में, मानसिक स्वास्थ्य सहित छोटी कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक छात्रों की अनूठी और अपरिहार्य आवश्यकताओं की पूर्ति तथा पोषण और मोटापे का निवारण उस समय किया जा सकता है, यदि स्वास्थ्य को शिक्षा का एक पाठ्यचर्या रूपी पहलू बना लिया जाए।

/ke/kke l lEiUu

(सामग्री हिंदी में उपलब्ध है)

ifV;ky lgkn; fo|ky; ifjlj e jlk;u&foKku dk;'kkyk

पटियाला सहोदय परिसर के सदस्य विद्यालयों के रसायन–विज्ञान शिक्षकों के लिए एक संगोष्ठी गुरू तेग बहादुर स्कूल, त्रिपरी रोड, पटियाला में आयोजित की गई। विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती अनु, जो पटियाला सहोदय परिसर की सचिव भी हैं, ने संगोष्ठी का अथपूर्ण ढंग से आयोजन सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त रूचि दर्शाई।

चूंकि रसायन–विज्ञान को सामान्यतः अधिकांश छात्रों द्वारा एक नीरस विषय माना जाता है, इस संगोष्ठी का उद्देश्य ऐसे तरीके तैयार करना तथा उन पर चर्चा करना था, जिनकी सहायता से रसायन–विज्ञान रूचिकर तथा मनोरंजन से भरपूर विषय बन सके। संगोष्ठी में परस्पर विचार–विमर्श करके शिक्षक वास्तव में ही लाभान्वित हुए। इसने सहोदय के आदर्श–वाक्य अर्थात ''एक साथ प्रगति करें'' को निसंदेह ही सार्थक किया। शिक्षकों को मुहैया कराया गया मंच निसंदेह ही अत्यंत महत्व का था। बदलती पाठ्यचर्या तथा क्रियाकलाप आधारित शिक्षण के बारे में हुआ विचार–विमर्श वास्तव में लाभप्रद था। संगोष्ठी का मुख्य ध्यान इस विषय पर था कि छात्रोन्मुखी प्रश्न–पत्र किस प्रकार बनाए जाएं।

संगोष्ठी में X, XI और XII की पाठ्यचर्या के शिक्षण के न्यूनतम स्तर (एमएलएल) पर बल प्रदान करके विशेष रूप से धीमे शिक्षण पर विचार किया गया। एमएलएल में शिक्षकों ने प्रत्येक अध्याय से सीखने के लिए कुछ बिंदु निर्धारित किए हैं ताकि इन बिंदुओं का अध्ययन करके शिक्षार्थी परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त कर सकें।

fp=

^^ckgjh eqcbZ lgkn; fo|ky; ifjlj^^ dk mn?kkVu

17 मई 2009 का दिन मुंबई में स्कूलों के लिए एक उल्लेखनीय दिन था जब श्री एन. नागराजू, संयुक्त सचिव, सीबीएसई, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की उपस्थिति में ''बाहरी मुंबई सहोदय विद्यालय परिसर'' का उद्घाटन किया गया। इस विशिष्ट समारोह में मुंबई, ठाणे और नवी मुंबई के लगभग पच्चीस विद्यालयों के प्राचार्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरंभ डीएवी पब्लिक स्कूल, एटोली के छात्रों द्वारा प्रस्तुत एक समूह गान से हुआ तथा बाहरी मुंबई सहोदय विद्यालय परिसर के निर्वाचित अध्यक्ष ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में श्री कुमार ने इस बात पर बल दिया कि विद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में अपना यथासंभव प्रयास करना चाहिए क्योंकि यह राष्ट्र के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राचार्यों को संबोधित करते हुए श्री एन. नागराजू ने संबद्ध विद्यालयों को बोर्ड द्वारा उपलब्ध कराई गई सहायता तथा बोर्ड की भूमिका के बारे में उपस्थित श्रोताओं को अवगत कराया। एक पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से उन्होंने प्रतिभागी प्राचार्यों को बोर्ड के विभिन्न प्रयासों के विषय में बताया। इस प्रस्तुतिकरण के अंत में पारस्परिक चर्चा का सत्र हुआ जिसमें प्राचार्यों द्वारा उठाए गए अनेक प्रश्नों का श्री नागराजू द्वारा समाधान किया गया।

कार्यक्रम की समाप्ति वागड गुरूकुल अंतरराष्ट्रीय विद्यालय की प्राचार्य एवं बाहरी मुंबई सहोदय विद्यालय की निर्वाचित सचिव श्रीमती नीलिमा शर्मा द्वारा धन्यवाद–ज्ञापन प्रस्तुत करके हुई। धन्यवाद–प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे सहोदय के लिए मार्गदर्शी शब्द होने चाहिए ''अकेले हम बहुत ही कम कर सकते हैं, साथ रहकर हम बहुत कुछ कर सकते हैं'' तथा श्री नागराजू जी उपस्थिति के लिए उन्होंने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और एक छोटी अवधि में इतनी उत्साहवर्धक प्रतिभागिता दर्शाने के लिए सभी प्राचार्यों का भी धन्यवाद किया।

Cykle lhfu;j ld.Mjh Ldy] ifV;kyk e foKku in'kuh

ब्लॉसम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, पटियाला ने अपने विद्यालय परिसर में जुलाई 2009 माह में एक बड़े पैमाने पर विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया। जीव–विज्ञान वर्ग में मुख्य आकर्षण थे – मानव विकास, रक्त परीक्षण, खाद्य मिलावट परीक्षण तथा जैविक इंजीनियरिंग। रसायन–विज्ञान में – प्लास्टिक की समय–सीमा, दैनिक जीवन में रसायन–विज्ञान, घर पर बनाए गए संकेतक और धुआं बम। भौतिकी में – एक कमरे में सौर परिवार का दृश्य, प्लाज़्मा पदार्थ की कार्य–प्रणाली, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत तथा आइस बल्ब।

पर्यावरण खण्ड में, ईको–क्लब के छात्रों द्वारा टैट्रा पैक तथा चिपको आंदोलन की कथाओं का चित्रण किया गया जिसे सभी ने बहुत सराहा।

पटियाला के सीबीएसई के सभी स्कूलों को प्रदर्शनी देखने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसकी सभी ने काफी प्रशंसा की।

fp=

lgkn; Ldy n'kHkfDr xhr ifr;kfxrk] verlj

भारत की स्वतंत्रता की 63वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए अमृतसर सहोदय विद्यालयों ने गुरू हरिकृष्ण सीनियर सेकेण्डरी पब्लिक स्कूल, जी.टी. रोड, अमृतसर में ''देशभक्ति गीत प्रतियोगिता'' आयोजित की जिसमें परिसर के विभिन्न सीबीएसई विद्यालयों की 16 टीमों ने भाग लिया। सभी टीमों ने काफी मीठे सुर में गीत गाए। अपने भाषण में प्राचार्य डा0 धर्मवीर सिंह ने कहा कि सहोदय स्कूल परिसर, अमृतसर न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता हासिल करने का बल्कि सृजनात्मक उत्कृष्टता को भी प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।

प्रतियोगिता की विजेता टीमों को ट्रॉफियां और प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए गए। डीएवी पब्लिक स्कूल तथा श्री गुरू हरिकृष्ण सीनियर सेकेण्डरी पब्लिक स्कूल, जी.टी. रोड ने प्रथम पुरस्कार; डीएवी इंटरनेशनल स्कूल तथा स्प्रिंगडेल्स सीनियर सेकेण्डरी स्कूल ने द्वितीय पुरस्कार; भवन एसएल पब्लिक स्कूल तथा खालसा कॉलेज पब्लिक स्कूल, अमृतसर ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

> यह केवल कसरत ही है जो आत्मा को सहारा देती है तथा मस्तिष्क को उत्साहपूर्ण बनाए रखती है।
>
> सिसेरो

d-vkj- eaxye oYMZ Ldwy] thds&II esa iFoh fnol lekjksg

के.आर. मंगलम वर्ल्ड स्कूल, जीके–II में कार्यकलापों तथा उनको मनाए जाने का उत्साह चारों ओर छा गया क्योंकि विद्यालय में 17 अप्रैल 2009 से पूरे एक सप्ताह के लिए पृथ्वी दिवस संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पर्यावरण के बारे में जागरूकता का प्रचार–प्रसार करने के लिए विद्यालय द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें – नारा लेखन, पोस्टर बनाना, री–साइकलिंग वेस्ट (पुनःचक्रण अपशिष्टों) पर कार्यशालाएं, बैज निर्माण, प्रश्नोत्तरी और हस्ताक्षर अभियान शामिल थे। यह अभियान 23 अप्रैल 09 को एक भव्य समारोह के भव्य आयोजन के साथ समाप्त हुआ। इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया जिसके पश्चात स्वागत–गीत पेश किया गया। एक प्रभावशाली नुक्कड नाटक तथा गीत ने लोगों को पृथ्वी संबंधी विषय पर और अधिक चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती ज्योति गुप्ता ने अपने भाषण में छात्रों को पर्यावरण संबंधी चिंताओं के लिए प्रतिबद्ध बने रहने का आह्वान किया। समारोह में उपस्थित गण्यमान्य व्यक्तियों में शामिल थे – श्री ए.के. जौहरी, डी.आई.जी. पर्यावरण और वन मंत्रालय, श्रीमती गुरूमूर्ति, निदेशक अकादमिक, सीबीएसई, श्री आनंदजीत, एसोसिएट फेलो, टेरी तथा श्रीमती अतीता मल्होत्रा, प्राचार्या समरफील्ड्स स्कूल। पर्यावरण के संरक्षण के लिए शपथ लिए जाने के साथ ही समारोह की समाप्ति हुई। उप–प्रधानाचार्या श्रीमती रेनू जैन ने धन्यवाद–ज्ञापन प्रस्तुत किया।

/kuckn ifCyd Ldwy us o{kkjksi.k fnol euk;k

मानव जाति के अस्तित्व के लिए वृक्ष अत्यंत आवश्यक हैं तथा वे इसक बदले में हमसे कोई आशा नहीं रखते हैं। परंतु मानव होने के नाते, हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम उन्हें उगाएं तथा पूरी देखभाल और प्यार के साथ उनका पालन–पोषण करें। छात्रों को पृथ्वी मां के प्रति उनके कर्त्तव्य का बोध कराने के उद्देश्य से धनबाद पब्लिक स्कूल में 18 जुलाई 2009 को वृक्षारोपण दिवस मनाया गया। समारोह का विषय था ''पर्यावरण दिवस की प्रतीक्षा न करें, हर रोज एक पौधा लगाएं।'' इस अवसर पर विद्यालय के ईको क्लब के छात्रों ने एक पौधा रोपण अभियान भी चलाया। विद्यालय की योजना 1500 वृक्ष रोपने की है।

विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती डी.ए. छेतल ने छात्रों से अपील की कि वे पौधे लगाने तथा वनों का संरक्षण करने की जिम्मेदारी लें।

उन्होंने आगे कहा कि तनाव और चिंता भरे विश्व में प्रकृति की सुंदरता और मनोहरता ने हमें खुशी तथा मन–मस्तिष्क की शांति प्रदान की है। उन्होंने छात्रों से कहा कि यदि वे

पर्यावरण का स्वच्छ रखना चाहते हैं, तो उन्हें हर सप्ताह कम–से–कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। इसके पश्चात, पर्यावरण पर सामूहिक गान प्रस्तुत किया गया। विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों तथा छात्रों ने विद्यालय परिसर में पौधे लगाए।

,-t-vkb- ofj"B ek/;fed vxzsth fo|ky;] djy
e i;kZoj.k fnol

ए.जे.आई. वरिष्ठ माध्यमिक अंग्रेजी विद्यालय, केरल ने विद्यालय परिसर में ''विश्व पर्यावरण दिवस'' मनाया। विद्यालय प्रबंधन ने छात्रों को संबोधित किया तथा वृक्षों की उपयोगिता के विषय में बताया। छात्रों को जानकारी दी गई कि पौधे और वृक्ष पर्यावरण के प्रमुख अवयव हैं। विद्यालय प्राचार्य तथा ईका–क्लब के प्रभारी–शिक्षक ने वन तथा वानिकी के महत्व और वृक्षों को काटे जाने के कुप्रभावों के विषय में बताया।

f'k"; Ldwy] gkslwj dk bdks&Dyc dh fjiksVZ

शिष्य स्कूल, होसूर ने विद्यालय के छात्रों के मध्य पर्यावरण जागरूकता (पीईएएस) के लिए एक कार्यक्रम आरंभ किया। सदस्यों द्वारा समूचे शैक्षणिक वर्ष के दौरान अनेक कार्यकलाप आयोजित किए गए। ऊर्जा संरक्षण, शौच–स्वच्छता और जल के विवेकपूर्ण उपयोग पर जागरूकता का सृजन करने के लिए अनेक पोस्टर तैयार किए गए। छात्रों ने विद्यालय के उद्यान तथा ''हर्बल गार्डन'', जोकि विद्यालय के उद्यान का ही एक हिस्सा है, की साफ–सफाई की।

पीईएएस ने ऐीएलएफ बल्बों के प्रयोग, घरों में स्वच्छ हवा की बेहतर आवाजाही, सुरक्षित पेयजल, शौचालय सुविधाओं की आवश्यकता, दंत मंजन के प्रयोग के महत्व और कागज की री–साइकलिंग करने तथा प्लास्टिक कवरों के प्रयोग से बचने के बारे में जागरूकता का सृजन करने के लिए गीतों, नाटकों और चार्टों की प्रस्तुति के माध्यम से कन्नूर में एक बाह्य कार्यक्रम का आयोजन भी किया।

,s'o;Z ifCyd Ldwy] dkYye
e fo'o i;kZoj.k fnol

ऐश्वर्य पब्लिक स्कूल ने 5 जून 2009 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। छात्रों ने प्रातःकालीन सभा में विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उन्होंने ''पर्यावरण के लिए संकट'', ''ओजोन छिद्र और वैश्विक उष्मण'', ''पर्यावरणीय शुद्धता का संरक्षण'' तथा ''पर्यावरणीय प्रदूषण'' जैसे विषयों पर वाद–विवाद भी किया।

विद्यालय के प्राचार्य ने छात्रों से अपील की कि वे प्रकृति के संरक्षण के लिए अपनी पूरी क्षमता के साथ प्रयास करें। कार्यक्रम का आरंभ केन्द्रीय परिसर में 'बरगद' की पौध रोपकर किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के सब्जी उद्यान और पादप–उद्यान का भी उद्घाटन किया गया। प्राचार्य ने उपस्थित छात्रों को वार्षिक विश्व पर्यावरण दिवस के लिए मुख्य विषय के बारे में सूचित किया, जो है ''मौसम के परिवर्तनों को नियंत्रित करने

के लिए आपका उपग्रह आपको एकजुट देखना चाहता है।'' मुख्य अतिथि ने छात्रों को प्रेरित किया कि वे जितने हो सकें, उतने स्वदेशी वृक्ष लगाएं। पर्यावरण के संरक्षण के विषय पर आधारित अनेक प्रतियोगिताएं जैसे ड्राइंग–पेंटिंग, कोलाज, निबंध लेखन आदि आयोजित की गईं। ईको–क्लब की संयोजक श्रीमती रेणू ने धन्यवाद–ज्ञापन प्रस्तुत किया।

Mh,oh ifCyd Ldy] yf/k;kuk e
cM y{; dh vkj ,d NkVk dne

डीएवी पब्लिक स्कूल, पोखावल रोड, लुधियाना में 18.07.2009 को वन महोत्सव मनाया गया। कक्षा छह और सात के लगभग 500 छात्रों ने बड़े लक्ष्य की ओर पर्यावरण खतरों के विषय में लोगों को जानकारी देने के लिए सड़कों पर पदयात्रा की। छात्र अनेक स्थानों पर गए तथा उनका लक्ष्य लोगों को पानी और बिजली बचाने की आवश्यकता के बारे में जागरूक करना था। उन्होंने पर्यावरण को स्वच्छ और हरा रखने, अधिक से अधिक पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने तथा वन्य–जीवन को बचाने के लिए नारे लगाए। आम जनता को इस नेक कार्य में भागीदारी करने के लिए प्रेरित करने के उद्‌देश्य से उन्होंने लोगों के बीच पर्चे भी बांटे। लोगों को वैयक्तिक स्वच्छता के महत्व तथा स्वयं को संक्रमणकारी रोगों जैसे स्वाइन फ्लू, डेंगू, हैजा आदि से सुरक्षित रखने के बारे में भी जानकारी दी गई।

कक्षा चार और पांच के छात्रों द्वारा विद्यालय परिसर में तथा उसके आसपास फलों के वृक्षों की लगभग 200 पौध रोपित की गईं। बालकों ने पौध लगाने में अत्यंत उत्साह दर्शाया तथा उन्होंने यह भी प्रतिज्ञा की कि वे अपने क्षेत्र को स्वच्छ एवं हरा रखेंगे।

d".kk ifCyd Ldy] jk;ij e bdk&Dyc

कृष्णा पब्लिक स्कूल, रायपुर का ईको–क्लब वर्ष 2007 में बना था। यह क्लब लोगों तथा छात्रों में उनके समीपवर्ती पर्यावरण तथा पर्यावरणीय मुद्‌दों के विषय में जागरूकता का सृजन करने का प्रयास कर रहा है। वर्ष 2009 में इस ईको–क्लब के अंतर्गत निम्नलिखित क्रियाकलाप संचालित किए गए।

- iFoh fnol & 2009

कक्षा X के छात्रों द्वारा एक विशेष सभा का आयोजन किया गया। प्रकृति के विरूद्ध व्यक्ति की नकारात्मक अभिवृत्ति उनके प्रस्तुतिकरण का मुख्य विषय था। यहां तक कि डिस्प्ले बोर्ड में लगे पोस्टरों तथा लेखों में भी यही संदेश परिलक्षित हो रहा था।

- fo'o i;koj.k fnol] 2009

''पर्यावरण–अनुकूल आदतों तथा व्यवहार का विकास'' शैक्षणिक वर्ष 2009–10 के लिए ईको–क्लब का विषय था। समस्त आयोजन इसी मुख्य विषय पर आधारित थे। इस बारे में एक विशेष सभा आयोजित की गई। क्विज़ क्लब के सहयोग से ईको–क्लब ने पर्यावरण पर एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया। यह प्रश्नोत्तरी कक्षा–III से कक्षा–X के लिए आयोजित की गई थी।

- ou egksRlo & 2009

''ग्रीन ब्रिगेड'' वाहिनी ने ''विद्यालय और शहर को स्वच्छ और हरा रखिए'' का संदेश लेकर शहर का दौरा किया। ग्रीन ब्रिगेड वाहिनी शहर की मुख्य कालोनियों में भी गई। हरी टोपियां पहने तथा ''मिशन क्लीन एवं ग्रीन'' के पहचान–पत्र लगाकर केपीएस की ''ग्रीन ब्रिगेड'' ने हमारे आस–पास के स्थानों को स्वच्छ और हरा रखने के महत्व की जानकारी लोगों को देने के लिए उक्त कॉलानी के घरों का दौरा भी किया और पर्चे भी बांटे। ब्रिगेड द्वारा विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर ''क्लीन एवं ग्रीन'' के स्टीकर भी लगाए गए जिनके माध्यम से उन स्थानों को स्वच्छ रखने के विषय में जागरूकता का सृजन किया गया।

bukslsV gkVZ~l Ldwy tkya/kj esa izkstsDV xzhu

इनोसेंट हार्ट्स स्कूल, जालंधर ने इनोसेंट हार्ट्स फील्ड्स, लोहारान में 05 सितम्बर को इस प्रोजक्ट का शुभारंभ किया। विद्यालय ने इस प्रोजेक्ट के तहत विभिन्न क्रियाकलाप आयोजित किए। श्रीमती अजीत कौर ने छात्राओं के एक समूह के साथ पहली पौध रोपित की। छात्रों ने अब उपग्रह के बेहतर सेवक बनने के अपने मानवीय दायित्वों को पहचानना शुरू कर दिया है। छात्रों के बीच इस विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए कि वृक्ष सभी के लिए रामबाण के समान हैं, ''ग्रीन ब्रिगेड'' शीर्षक के तहत एक अनुच्देद लेखन प्रतियोंगिता आयोजित की गई।

,-ih-th- ifCyd Ldwy] [kkj[kkSnk esa xzhu vFkZ Dyhu vFkZ vfHk;ku

डा0 श्रीमती सृजता दास (शिक्षा अधिकारी, सीबीएसई) ने ए.पी.जी. पब्लिक स्कूल, खारखौदा में शनिवार, 18 जुलाई 2009 को ''ईच वन – प्लांट वन'' स्लोगन के तहत वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ किया।

मुख्य अतिथि डा0 श्रीमती सृजता दास के साथ–साथ श्री रमेश चन्द्र (निदेशक, आईएनसीईएफ) और श्रीमती अनीता (सदस्य, विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, हरियाणा) ने विद्यालय परिसर में वृक्ष लगाए। एपीजी पब्लिक स्कूल की प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्राचार्या श्रीमती अंजू गोयल ने छात्रों को ''वृक्षारोपण अभियान के लाभों'' तथा ''वैश्विक उष्मण पर इसके प्रभाव'' के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि विद्यालय परिसर

में फूलों तथा साथ ही औषधीय पौधे लगाना वर्तमान सत्र 2009–2010 में हमारे ''ईको और हैल्थ क्लब'' का मुख्य उद्देश्य है।

Mh,oh ih,l] i"ik tfy ,Dyo] ihreijk d uokfnr i;koj.kfon

हमारे प्राइमरी विंग के विद्यार्थियों और अभिभावकों की सृजनात्मकता और पर्यावरणीय लोकाचार ईको–क्लब ग्रीष्मकालीन अवकाश के गृह–कार्य में प्रतिबिंबित हुए। हमारे पर्यावरण के नन्हें राजदूतों द्वारा बेकार तथा पुनःचक्रित सामग्री से आकर्षक वस्तुएं तैयार की गईं जैसे फोल्डर, लटकने वाले जूट बैग, पेन–होल्डर और सजावट की सामग्री आदि। विद्यालय का ईको–क्लब छात्रों के बीच हमारे पर्यावरण के विषय में संवेदनशीलता की भावना सृजन करने का निरंतर प्रयास करता रहा। प्रमाण–पत्रों तथा पुरस्कारों के रूप में छात्रों की प्रशंसा की गई और उनके प्रयासों को मान्यता प्रदान की गई।

oxn x|:dy bVju'kuy Ldy e xhu fQx l Dyc

हमारे जीवन में वृक्षों द्वारा निभाई जाने वाली निर्णायक भूमिका के बारे में छात्रों के मध्य जागरूकता का सृजन करने के लिए वगद गुरूकुल इंटरनेशनल स्कूल ने ग्रीन फिंगर्स क्लब की स्थापना की। विद्यालय परिसर को हरित एवं स्वच्छ बनाने के लिए ''हरित, स्वच्छ गुरूकुल'' इस क्लब का लक्ष्य और उद्देश्य है।

प्रदूषण रहित, स्वस्थ पर्यावरण का सृजन करने के लिए विद्याथियों ने अनथक कार्य किया। इस क्लब के लिए कार्य करते हुए उन्होंने यह भी समझा कि सौहार्दपूर्ण जीवन के लिए पौधे अत्यंत अनिवार्य हैं क्योंकि वे अति महत्वपूर्ण ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

''प्रत्येक बालक एक पौधा रोपे'' (ईच वन प्लांट वन) नारे को ध्यान में रखते हुए, छात्रों द्वारा अनके वृक्ष रोपे गए। वृक्षों से संबंधित अनेक पुस्तकें खरीदी गईं तथा उन्हें क्लब के सदस्यों में वितरित किया गया। ''विश्व पर्यावरण दिवस'' के उपलक्ष्य में छात्रों को संबोधित करते हुए प्राचार्या नीलिमा शर्मा ने पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाने तथा उसके विरूद्ध न जाने पर बल दिया क्योंकि प्रकृति के साथ सौहार्द बनाना ही हमारे अस्तित्व के लिए अति–आवश्यक है।

छात्रों ने सब्जियों के अनेक पौधे लगाए जैसे बैंगन, पत्ता गोभी, भिण्डी, सीताफल, तोरी, शिमला–मिर्च, टमाटर, पालक आदि। जब इन पौधों में ये सब्जियां लगीं, तो इससे क्यारियों में एक सुंदर दृश्य उत्पन्न हो गया तथा विद्यार्थी इस बात से प्रफुल्लित थे कि उनकी मेहनत रंग लाई। इससे उनके भीतर और भी उत्सुकता की भावना जागृत हुई तथा अब वे फूलों का बगीचा लगाने की योजना बना रहे हैं। ''यदि आप प्रकृति को प्यार करेंगे, तो आपको सर्वत्र सुंदरता दिखाई देगी।''

mnxe fo|ky;] vgenkckn e gfjr Økfr

पर्यावरण के संरक्षण के दायित्व की ओर छात्रों को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से, विद्यालय ने जल, विद्युत, तेल और कागज बनाने के लिए अनोखे तरीके अपनाए हैं।

उद्गम विद्यालय ने दीर्घकालिक कार्यकलापों के साथ विद्यालय परिसर के भीतर और उसके आसपास अनेक पर्यावरण–अनुकूल परिवर्तन किए हैं। विद्यालय ने शहर में श्रेष्ठ ''पर्यावरण मित्र'' विद्यालय बनने के लिए एक पंचवर्षीय योजना तैयार की है। अपनी अवसंरचना में साधारण परिवर्तन करके, हम न केवल पर्यावरण की रक्षा करने बल्कि लागतों को कम करने की भी योजना बना रहे हैं।

fc t yh cukuk

विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले समय में बिजली की निरंतर बढ़ती हुई कीमतों को देखते हुए ''हरित प्रौद्योगिकी'' ही भविष्य की योजना है। उद्गम विद्यालय ने विद्युत उपकरणों के स्थान पर बिजली बचाने वाली ट्यूब लाइटें तथा लाइट बल्ब लगा दिए हैं। विद्यालय ने कक्षाओं में सूरज की प्राकृतिक रोशनी की पर्याप्त व्यवस्था करके बिजली के प्रयोग को भी न्यूनतम बनाया है। इसके लिए प्राधिकारियों ने खिड़कियों के शीशों पर सूर्य के प्रकाश को नियंत्रित करने वाली फिल्में चढ़ाई हैं। इसके अलावा, पुराने और बिजली की अधिक खपत करने वाले उपकरणों को हटाकर उनके स्थान पर नए उपकरण लगा दिए हैं।

हमारे दैनिक कार्यों में भी हम बिजली और पानी बचाने का कड़ा प्रयास कर रहे हैं। हमने पारंपरिक मॉनीटरों के स्थान पर बिजली की बचत करने वाले एलसीडी मॉनीटरों का प्रयाग शुरू कर दिया है।

o"kkZ ty laxg.k

हरित निर्माण की एक अन्य उपलब्धि जल–निस्यन्दन प्रणाली है। जबकि आजकल दिन–प्रतिदिन भूमिगत जल का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है, हमने एक छिद्र (बोर) का निर्माण किया है तथा उसमें एक निस्यन्दन प्रणाली का पुनःप्रयोग किया जा रहा है। पानी बचाने के लिए शौचालयों में स्वतः बंद होने वाले फ्लश टैंकों तथा नलों को लगाया जा रहा है।

dkxt fogzhu dk;kZy;

विद्यालय हमारे पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए कुछ अभिनव विचारों का कार्यान्वन करने के लिए कला प्रौद्योगिकियों का प्रयोग भी कर रहा है। कागज के प्रयोग को न्यूनतम बनाने के लिए विद्यालय ने किसी भी प्रकार की विवरणिका अथवा सूचना–पत्रों के प्रकाशन को समाप्त कर दिया है। अधिकांश आंतरिक पत्राचार ई–मेल के माध्यम से किया जाता है। कागज और स्याही की खपत में कटौती करने के लिए हमारी समाचार–पत्रिका ऑनलाइन भेजी जाती है। अभिभावकों को भी इंटरनेट का प्रयोग करने

के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। नोटिस बोर्ड पर लगाने की बजाय सूचनाएं, परिपत्र तथा चित्र आदि एलसीडी मॉनीटर पर फ्लैश किए जाते हैं।

इस वर्ष समस्त प्रवेश प्रक्रिया ऑनलाइन ही संपन्न की गई जिससे मानवशक्ति, तेल और कागज की बचत हुई।

,e vkj bVju'kuy Ldy] nkvkck itkc e o{kkjki.k

हमारे विद्यालय द्वारा वृक्षारोपण 12 अगस्त 2009 को आयोजित किया गया। सिंडिकेट बैंक, आदमपुर के तत्वावधान में लगभग चालीस वृक्ष लगाए गए।

bVju'kuy bfM;u Ldy] vy&tcy lkmnh vjc lkekT; e iFoh fnol euk;k x;k

धरती मां से जुड़े मुद्दों के स्मरण में तथा इस पृथ्वीमंडल के सतर्क सेवकों के रूप में हमारे उत्तरदायित्वों को याद करने के लिए 22 अप्रैल 2009 पृथ्वी दिवस के रूप में मनाया गया।

आईआईएस–जुबेल में बालिकाओं की कक्षा ने अनेक कार्यकलाप आयोजित किए जिनमें मॉडल, पोस्टर बनाना तथा पर्यावरण पर शीर्षक लिखना शामिल थे। आईआईएस–जुबेल के प्राचार्य ने छात्रों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हुए एक गमले में एक पौधा रोपा। केवल एक नय पौधा लगाने से और हरियाली की रक्षा करने से ही हमारी पृथ्वी अपने पूर्व ''रूप'' में वापस आ सकती है।

पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए हमें शुरूआत अपने घर से ही करनी होगी। आईआईए–जुबेल के छात्रों ने अपनी कक्षाओं तथा विद्यालय परिसर को साफ करने का निर्णय लिया जोकि उनके दूसरे घर के समान है। सभी वरिष्ठ छात्रों को निर्देश दिए गए थे कि वे पृथ्वी दिवस के सिलसिले में कार्य करने के लिए स्वच्छता की वस्तुएं लाएंगे जैसे दस्ताने, टिशू पेपर, तौलिए आदि। छात्रों का मार्गदर्शन उनकी कक्षाध्यापकों, उप–प्राचार्य और प्राचार्य द्वारा किया गया।

> जो लोग यह सोचते हैं कि उनके पास शारीरिक कसरत करने के लिए समय नहीं है, कभी न कभी बीमारी के लिए समय जरूर निकालेंगे।
>
> –एडवर्ड स्टेनली

lhch,lbZ esa 'kkjhfjd f'k{kk

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तत्वावधान में ब्रिटिश काउंसिल के साथ सहयोग करके सीबीएसई ने ''अंतरराष्ट्रीय प्रेरणा'' के भाग के रूप में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम की शुरूआत की जो चिन्मया विद्यालय, टेलर रोड, चेन्नई मेंएक तीन–दिवसीय रोमांचक कार्यशाला के रूप में शुरू हुआ। व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के भाग के रूप में, जोकि दो वर्ष पूर्व आरंभ किया गया था, सीबीएसई ने दैनिक आधार पर विद्यालयों में शारीरिक स्वस्थता क्रियाकलापों को नियमित रूप से शामिल करने की हिमायत की। ये बालकों तथा साथ ही अध्यापकों के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य लाभों के रूप में रूपांतरित होगा। शारीरिक स्वास्थ्य विद्यालय स्वास्थ्य नियमावली के छह विषयों में से एक है जिसे बोर्ड द्वारा व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत प्रकाशित किया गया है। यह नियमावली ''स्वास्थ्य और कुशलता क्लबों'' के माध्यम से विद्यालयों को निशुल्क उलपब्ध कराई गई है। बोर्ड को आशा है कि ब्रिटिश काउंसिल और यूके युवा खेल ट्रस्ट के साथ इस सहयोग की कवायद के माध्यम से, यह विद्यालयी बालकों के मध्य सह–शैक्षिक विकास के लिए एक उपकरण के रूप में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रेरित और प्रोत्साहित करेगा। चिन्मया विद्यालय में आयोजित यह कार्यक्रम संसाधन सामग्री का एक प्रयोग है जिसे भारतीय विशेषज्ञ श्री मुकेश कोहली तथा विद्यालयों के शिक्षकों के साथ यूके की विशेषज्ञ सुश्री कैरल लुटकिंस द्वारा विकसित किया गया है। सीबीएसई के सीएम एवं सचिव श्री विनीत जोशी युवा छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए इस कार्यक्रम के अंतिम दिन उपस्थित थे। श्री जोशी ने आने वाले सत्रों में उनके संबंधित विद्यालयों में इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों में पूरा विश्वास दर्शाया। सीबीएसई दिल्ली की शिक्षा अधिकारी डा0 साधना पराशर समूची परियोजना की पर्यवेक्षक थीं तथा ब्रिटिश काउंसिल की सुश्री मोना शिप्ले ने परिषद की ओर से कार्यक्रम का समन्वय किया। इस सामग्री का मुंबई और दिल्ली में और परीक्षण होगा। सीबीएसई को आशा है कि इस पहल के माध्यम से बोर्ड स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करेगा तथा युवा और स्वस्थ नागरिकों के राष्ट्र का निमार्ण करेगा।

fcfV'k dkmafly ds lg;ksx ls lhch,lbZ }kjk 'kkjhfjd f'k{kk dkMZ dh 'kq:vkr

मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने पीईसी इंडिया कार्यक्रम के तहत 25 अगस्त 2009 को शारीरिक शिक्षा कार्ड और शिक्षक नियमावली का उद्घाटन किया, जोकि एक ऐसी पहल है जिसमें युवाओं को सशक्त बनाने के लिए शारीरिक शिक्षा और खेलों को एक साथ जोडा गया है।

श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष, सीबीएसई ने माननीय मंत्री का स्वागत किया तथा साथ ही भारत में ब्रिटिश उच्चायुक्त महामहिम सर रिचर्ड स्टैंग तथा युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव श्री आई. श्रीनिवास का भी स्वागत किया। अपने भाषण में श्री जोशी ने विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के महत्व पर बल दिया तथा कहा कि ''मेरे विचार में शारीरिक शिक्षा और खेल एक दूसरे के समानदर्शी हैं।''

श्री जोशी ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा युवा मामले और खेल मंत्रालय के तत्वावधान में ब्रिटिश काउंसिल, यूके स्पोर्ट्स, युवा खेल ट्रस्ट तथा यूनिसेफ द्वारा किए गए सतत प्रयासों की सराहना की। श्री जोशी ने विश्वास जताया कि सीबीएसई और ब्रिटिश काउंसिल द्वारा इस प्रयास से एक मील का पत्थर स्थापित कर दिया गया है क्योंकि दोनों संगठनों ने साथ मिलकर एक ऐसे स्वप्न को साकार किया है जिसे वे पिछले दो वर्षों से देख रहे थे।

बाद में अपने भाषण में श्री जोशी ने वर्णन किया कि इस पहल का उद्देश्य यह पता लगाना है कि किस प्रकार शारीरिक शिक्षा (पीई) तथा विद्यालयी खेल का प्रयोग विद्यालय में एवं स्थानीय समुदाय में युवा लोगों को कार्य में लगाने और उन्हें अधिकार प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सीबीएसई ने ब्रिटिश काउंसिल तथा अपने तकनीकी साझेदारों युवा खेल ट्रस्ट के साथ मिलकर कक्षाओं के संसाधनों का विकास किया है, जो प्राथमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा पाठ्यचर्या के वितरण में सहयोग देगा। इन संसाधनों को दिल्ली, मुंबई और चेन्नई के 57 चयनित विद्यालयों में प्रयोग के आधार पर आरंभ किया जा रहा है तथा समस्त सीबीएसई के विद्यालयों में भी आरंभ किया जा रहा है।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री कपिल सिब्बल ने युवाओं के जीवन में खेल के महत्व पर बल दिया तथा कहा कि ''बालक के सर्वांगीण विकास में खेल एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं।'' मंत्रीजी के अनुसार, भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए वह समय आ गया है कि वह विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या में शारीरिक शिक्षा और खेलों को एक केन्द्रीय अवयव का दर्जा प्रदान करे तथा समस्त विद्यालयों में उसे व्यावहरिक रूप में कार्यान्वित करे। मंत्रीजी ने यह भी कहा कि शैक्षणिक अनुशासन छात्रों को स्वयं के साथ तालमेल बैठाना सिखाता है जबकि यह समूहों में आयोजित खेल और शारीरिक क्रियाकलाप ही हैं, जो छात्रों को यह सिखाते हैं कि वे वांछित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अन्य लोगों के साथ किस प्रकार तालमेल बैठाएं। खेलों में छात्र अपने प्रतिरोधियों के दिमाग को पढ़ने की कोशिश करते हैं, वे उसी के अनुसार योजना और कार्यनीति बनाते हैं, वे कड़ी मेहनत करते हैं तथा अच्छे परिणाम लाने के लिए वे अपनी पूरी क्षमता के अनुसार अपने कौशलों का प्रयोग करते हैं और अंत में, यदि उनकी कार्यनीति सफल नहीं भी होती है, तो वे असफलता को स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार करते हैं और अपनी गलतियों से सबक सीखने के लिए स्वयं को अवसर प्रदान करते हैं। अतः पाठ्यचर्या में शारीरिक शिक्षा का मूल्य अत्यंत महत्व रखता है क्योंकि यह लगभग सभी आवश्यक जीवन कौशलों को प्रयोग में लाता है।

मंत्री जी ने अंतरराष्ट्रीय एकता के लिए खेल क्रियाकलापों द्वारा निभाई जाने वाली निर्णायक भूमिका पर भी अत्यधिक बल प्रदान किया तथा क्रिकेट विश्व कप, फुटबाल विश्व कप, ओलिम्पिक और राष्ट्रमंडल खेलों जैसे आयोजनों का उदाहरण प्रस्तुत किया जोकि समूचे विश्व से उनमें शामिल हाने वाले देशों के लिए ऐसी प्रतिस्पर्धाओं में मिलकर भाग लेने और उनका सफल आयोजन करने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने आशा

व्यक्त की कि विश्व में युवाओं की औचित्यपूर्ण शिक्षा की बेहतरी के लिए इस प्रकार के और भी अंतरराष्ट्रीय सहयोग किए जाते रहेंगे।

अंत में, श्री सिब्बल ने इस कार्य में सहयोग करने तथा पीईसी कार्डों को जारी करने के लिए सीबीएसई, ब्रिटिश काउंसिल तथा अन्य सहयोगियों को बधाई दी, जोकि इस प्रकार का अनूठा संसाधन है, जो अभी तक भारत में उपलब्ध नहीं था तथा वर्तमान पहल को शुभकामनाएं दीं और उसकी सफलता की कामना की।

भारत में ब्रिटिश उच्चायुक्त श्री रिचर्ड स्टैग ने अपने संबोधन में मंत्रीजी के विचारों का समर्थन किया। उच्चायुक्त ने अपने स्वयं के पुत्र के अनुभव का वर्णन करते हुए निर्माणात्मक वर्षों में शारीरिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसने कलकत्ता में अनाथ बालकों को फुटबॉल तथा अन्य खेल सिखाते हुए उन बेसहारा बालकों के जीवन में खेलों के असाधारण सकारात्मक परिणामों को देखा। खेल भावना, समन्वय, आत्मविश्वास तथा अन्य जीवन कौशलों के संदर्भ में ये परिणाम अत्यंत प्रभावशाली थे।

उच्चायुक्त ने पूरे विश्व के विभिन्न देशों के साथ इस प्रकृति के सहयोगों को आगे बढ़ाने की ब्रिटिश सरकार की प्रतिबद्धता का स्मरण किया ताकि समूचे विश्व में शारीरिक शिक्षा के लाभों को सुनिश्चित करने के लिए 200 मिलियन बालकों के लक्ष्य तक पहुंचा जा सके।

उच्चायुक्त ने अधिकांश यूरोपीय देशों की तुलना में भारत में मानव संसाधन के विपुल भण्डार की ओर भी इशारा किया, जहां जनसंख्या का बड़ा हिस्सा या तो बुजुर्ग है, अथवा बहुत तेजी से वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहा है, तथा इस बात पर बल दिया कि इस संसाधन को एक बेहतर तरीके से शिक्षित तथा संपोषित करने की आवश्यकता है ताकि जब सेवाओं की बात आए, तो हमार बालक पूरे विश्व में अपना योगदान दे सकें।

उच्चायुक्त ने इस प्रयास को अपनी शुभकामनाएं दीं।

ब्रिटिश काउंसिल के कार्यक्रम निदेशक श्री चार्ली वाल्कर द्वारा धन्यवाद–प्रस्ताव के साथ ही इस कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

x:dy fo|ky;] ipdyk e ikpk;k d fy,
vf/k"Bkiu dk;Øe

सीबीएसई ने हाल ही में इससे संबद्ध हुए विद्यालयों के प्राचार्यों के लिए गुरूकुल विद्यालय पंचकुला में 11 और 12 अगस्त 2009 को एक दो–दिवसीय अधिष्ठापन कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का आरंभ गुरूकुल विद्यालय, पंचकुला के छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए एक पवित्र कार्यक्रम के साथ हुआ जिसमें उन्होंने भगवान गणेश का आशीर्वाद लेते हुए एक शानदार शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान, जिसमें पंजाब तथा पंचकुला के संबद्ध विद्यालयों के अनेक प्राचार्यों ने भाग लिया था, सीबीएसई के अध्यक्ष श्री विनीत जोशी ने ''विद्यालयी शिक्षा में पहलें और

अभिनवता'' विषय पर एक प्रस्तुतिकरण पेश किया जिसमें उन्होंने प्राचीन पारंपरिक प्रणाली के साथ शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य की तुलना करते हुए इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

श्री डी.आर. यादव, क्षेत्रीय निदेशक, पंचकुला ने क्षेत्रीय कार्यालय से दिशा–निर्देश पर अपने प्रस्तुतिकरण में प्राचार्यों को दाखिले, नाम वापस लेने तथा परीक्षाओं के बारे में नियमों और विनियमों से अवगत कराया। श्री आर.सी. शर्मा, परामर्शदाता, सीबीएसई ने प्रतिभागियों को ''विद्यालयी अवधारणा और कार्यान्वयन में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन'' तथा ''विद्यालयी शिक्षा में विज्ञान एवं गणित में सुधार के लिए बोर्ड की पहलें'' के विषय में जानकारी दी।

डा0 साधन पराशर, शिक्षा अधिकारी, सीबीएसई ने ''व्यापक विद्यालयी स्वास्थ्य कार्यक्रम और जीवन–कौशल शिक्षा'' के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

श्रीमती रश्मि विज, प्राचार्या, पुलिस डीएवी पब्लिक स्कूल, जालंधर ने ''विद्यालय को महान क्या बनाता है'' विषय पर एक प्रस्तुतिकरण पेश किया तथा श्रीमती बिंद्रा, प्राचार्य, विद्या देवी जिंदल पब्लिक स्कूल, हिसार ने ''शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों'' विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रतिभागी प्राचार्यों ने भी बोर्ड परीक्षाओं तथा उससे संबंधित पद्धतियों के बारे में सीधे सीबीएसई अधिकारियों से विचार–विमर्श करके अपनी शंकाओं तथा आशंकाओं का समाधान करके इस अवसर का लाभ उठाया। यह सभी उपस्थित प्रतिभागियों के लिए अत्यधिक चर्चापूर्ण तथा सूचनाप्रद कार्यक्रम था।

'k{kf.kd igyk d ek/;e l vrj dk de djuk

विश्व द्वारा प्रदान की जा रही श्रेष्ठ संपदाओं तक पहुंचने तथा उसे संकलित करने के लिए वैश्विक परिवेश व्यक्ति से उसकी सीमाएं विस्तारित करने की मांग करता है। विचारों एवं जानकारी के आदान–प्रदान को सुलभ बनाने के अलावा, यह नई संस्कृति के लिए मार्ग सुलभ कराता है तथ अंतरराष्ट्रीय समझ और मानवीय संपर्कों को प्रोत्साहित करता है।

भारत ने उस समय आस्ट्रेलिया के साथ अपने संबंधों को और भी मजबूत बनाया जब आस्ट्रेलियाई उच्चायोग ने प्रमुख सीबीएसई विद्यालयों के प्राचार्यों को आस्ट्रेलिया में आयोजित पहले प्राचार्यों के विचार–विनिमय कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। इस शिष्टमंडल में समूचे भात के विद्यालयों से आठ शिक्षाविद् शामिल थे अर्थात के.आर. कुमारमंगलम वर्ल्ड स्कूल, जीके–II से सुश्री ज्योति गुप्ता, दिल्ली पब्लिक स्कूल, आर.के. पुरम से डा0 डी.आर. सैनी, जी.डी. गोयंका से श्री डी.एम. शर्मा, बाल भारती, द्वारका से सुश्री सुरूचि गांधी, सेंट पॉल स्कूल से श्रीमती डेनियल, डीएवी पब्लिक स्कूल,

चेन्नई से श्रीमती मीनू अग्रवाल और लॉ मार्टिनियरी गर्ल्स कॉलेज लखनऊ से श्रीमती फरीदा एब्राहम।

प्राचार्यों का यह प्रबुद्ध दल 8 जून को मेलबोर्न हवाई अड्डे पर पहुंचा। प्राचार्यों ने मेलबोर्न शहर के दृश्यों तथा वहां के संगीत का आनंद लेते हुए उस शहर का परिचय प्राप्त किया। इस दौरे का आरंभ, जिसका प्रमुख उद्देश्य व्यावसायिक विकास तथा आस्ट्रेलियाई शिक्षा प्रणाली का परिचय प्राप्त करना था, आस्ट्रेलियाई शिक्षा प्रणाली, नेतृत्व, अंतरराष्ट्रीय आदान–प्रदान आदि विषयों पर अनेक सत्रों के साथ विख्यात मेलबोर्न विश्वविद्यालय में हुआ।

इस कार्यक्रम में अगला कदम मेलबोर्न में जीन प्रौद्योगिकी सेटर का दौरा था, जोकि एक चयनित प्रवेश विद्यालय है, जो शोध विद्वानों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करता है।

विशिष्ट रूप से व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले प्रौद्योगिकी–आधारित विद्यालय कोबर्ग हाई स्कूल का दौरा इन प्राचार्यों के लिए एक अद्भुत सबक था। कक्षा ग्यारह के स्तर पर ही व्यावसायिक शिक्षा को आरंभ करना एक ऐसी अवधारणा थी, जिसमें उन्हें अत्यधिक आकर्षित किया। यह महसूस किया गया कि भारत में भी ऐसे प्रयासों को जोर–शोर से प्रोत्साहित किया जाना चाहए।

इस दौरे की विशेषता आस्ट्रेलियन सेंटर फॉर एजुकेशनल रिसर्च में कक्षा तीन, पांच, सात और नौ में आयोजित किए गए साक्षरता एवं अंकीय परीक्षणों की जानकारी प्राप्त करना थी। पूर आस्ट्रेलिया के विद्यालयों में संचालित किए जाने वाले इन परीक्षणों ने आस्ट्रेलिया में मूल्यांकन के समान स्तर स्थापित करने में मदद की है।

इस यात्रा के दौरान आस्ट्रेलिया के प्राचार्यों के साथ विचार–विमर्श करके तथा कक्षाओं में शिक्षण के सत्रों का अवलोकन करके भारतीय प्राचार्यों की आस्ट्रेलियाई शिक्षा प्रणाली के बारे में जानकारी में वृद्धि हुई तथा उन्होंने इसके बारे में काफी कुछ जाना। प्राचार्यों का यह दल आस्ट्रेलियाई शिक्षा प्रणाली के बारे में पूरी तरह से जानकारी प्राप्त करके इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा और आस्ट्रेलिया की जीवन–शैली की संपूर्ण जानकारी हासिल करने के पश्चात यह अब भारत में कार्य करने के लिए तैयार हो गया है।

वे अवधारणाएं जिन्हें भारत में कार्यान्वित किया जा सकता है :–

1. शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को सरल बनाने के लिए शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना।

2. सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु शिक्षकों के लिए छात्रवृत्तियां/प्रोत्साहन।

3. कक्षा–XI स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की शुरूआत तथा कॉलेज/विश्वविद्यालय स्तर पर एक ऊर्ध्ववर्ती संपर्क प्रदान करना। यह पहल छात्रों को उपलब्ध कैरियर विकल्पों का बढ़ाने के साथ–साथ उनमें तनाव को कम करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी।

4. संख्यांकन और साक्षरता परीक्षणों की ही भांति राष्ट्रीय स्तर पर समान परीक्षण प्रणाली की शुरूआत।

5. चिंतन कौशलों का विकास करना जिससे रटने वाली शिक्षा पद्वति को हतोत्साहित किया जा सके।

6. विद्यालयों के दर्जे पर ध्यान दिए बगैर सभी विद्यालयों को सरकारी अनुदान उपलब्ध कराना।

7. सरकार द्वारा विशेष छात्रों की शिक्षा को प्रोत्साहित करना।

यह आशा की जाती है कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय, जिसने हाल ही में अनेक असाधारण अवधारणाओं की शुरूआत की है, इन सकारात्मक परिवर्तनों को अमल में लाने में सक्रिय भूमिका निभाएगा।

> क्रियाकलाप का अभाव प्रत्येक मानव की बेहतर स्थिति को नष्ट करता है, जबकि संचलन और पद्धतिनुमा शारीरिक व्यायाम इसको बचाता है और संरक्षित करता है।
>
> प्लेटो

lfud Ldy dt ijk d Nk=k u fgekpy in'k e no frCck pkVh ij fot; gkfly dh

31 सदस्यीय अखित भारतीय आईपीएसई पर्वतारोहण अभियान दल ने, जिसमें सैनिक स्कूल, कुंजपुरा के तथा इंडियन पब्लिक स्कूल काउंसिल के पांच अन्य स्कूलों के छात्र शामिल थे, हिमाचल प्रदेश के मनाली क्षेत्र में दुर्गम तथा बर्फ से ढकी देव तिब्बा चोटी (6001 मीटर) पर विजय प्राप्त की। इस दल की वापसी पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हूडा ने हरियाणा भवन, दिल्ली में इस दल का स्वागत किया। इस अवसर पर सैनिक स्कूल कुंजपूरा के प्रधानाचार्य कर्नल अरूण दत्ता ने एक स्लाइड शो के प्रस्तुतिकरण के माध्यम से मुख्य मंत्रीजी को अभियान की उपलब्धियों से अवगत कराया।

इससे पूर्व, महामहिम डा0 ए.आर. किदवई ने हरियाणा राजभवन, चण्डीगढ़ से कर्नल अरूण दत्ता, प्रधानाचार्य, सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल को हिम–कुल्हाड़ी और पताकाएं भेट कर इस अभियान पर रवाना किया था। कुल मिलाकर, छह आईपीएससी विद्यालयों ने इस अभियान में भाग लिया अर्थात सैनिक स्कूल रीवा (मध्य प्रदेश), सैनिक स्कूल (मणिपुर), मोतीलाल नेहरू खेल विद्यालय (हरियाणा), यादविन्द्र पब्लिक स्कूल, मोहाली (पंजाब), पंजाब पब्लिक स्कूल, नभा (पंजाब) तथा सैनिक स्कूल कुंजपुरा (हरियाणा)।

दल ने आवश्यक तैयारियां करने तथा युवा छात्रों को रॉक क्राफ्ट, रॉक क्लाइंबिंग, टेपलिंग, होल्ड तकनीकों और महत्वपूर्ण गांठों का प्रशिक्षण देने के लिए सोलांग घाटी को अपना प्रमुख आधार–शिविर बनाया। यहां छात्रों को स्नो एवं आइस क्राफ्ट, ग्लेशियर वॉकिंग, सेल्फ अरेस्ट, क्रेवेस रेस्क्यू, क्लिसेडिंग और स्टेप मेकिंग में प्रशिक्षित किया गया। चन्द्रताल (15,000 फीट) तथा डुंगल कोल (17,000 फीट) जैसी अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में दो कैंप और लगाए गए। बर्फीली हवाओं तथा महीन बर्फ ने चढ़ाई को और भी कठिन बना दिया। जैसीकि कहावत है, ''जब राह कठिन होती है, तो कठिन व्यक्तित्व वाले ही उस राह पर चल पाते हैं।'' बर्फ की खड़ी तथा थकान भरी चोटी पर निरंतर आगे बढ़ते हुए 19 छात्र तथा 05 स्टाफकर्मी देव तिब्बा (6001 मीटर) के शिखर पर पहुंच गए जिसके लिए उन्होंने दृढ़–निश्चय और ऐसी छोटी आयु में अदम्य साहस की भावना का प्रदर्शन किया। उन्होंने अत्यंत विषम मार्ग और मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए अपना लक्ष्य हासिल किया। इस चोटी से इन्द्रासन, देवाचन, हनुमान तिब्बा, मुकेरबेह तथा लाहौल एवं स्पीति घाटी का विहंगम दृश्य दिखाई पड़ता है।

जो सदस्य अंततः चोटी पर पहुंचने में सफल रहे, वे थे – श्री जेएस गुलिया, श्री अनुराग सेमवाल, श्री फतेह चंद, श्री प्यारे लाल, श्री सुंदरलाल तथा कैडेट जयसिंह, संजीव जून, रवि यादव, भूमित मलिक, नवजोत सिंह, मंजीत आर्य, मनीष यादव, आशीष दहिया, विवाश्वत सिंह, मोहित कुमार, जर्मनजीत सिंह, गुरविंदर सिंह, तेजेन्द्र पाल सिंह, लथरियत पुइया, जॉन लालवम्सांगा, होलखोलेन खोंगसाई, शुभम कुमार, योगेश प्रताप सिंह, विपुल कुमार।

dykph gljkt ekMy Ldy] fnYyh e LokLF; ,o 'kkjhfjd LoLFkrk ij [ky ,o efLr"d vrjjk"Vh; dk;'kkyk

कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार ने दिल्ली के सभी डीएवी स्कूलों के प्राथमिक शिक्षकों के लिए विद्यालय के सभागार में 26 और 27 जून 2009 को शारीरिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। ''खेल और मस्तिष्क'' नामक यह कार्यशाला भारतीय तथा कोरियाई स्पोर्ट्स एसोसिएशन ''स्पोर्ट्स फॉर ऑल'' के सहयोग से आयोजित की गई थी।

प्राचार्य श्रीमती पी. दत्ता ने प्रधानाध्यापिका श्रीमती शोभा चांदला और स्टाफ के सदस्यों के साथ ''स्पोर्ट्स फॉर ऑल'' के महासचिव श्री ए.के. शर्मा का स्वागत किया तथा उनकी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया। कोरिया का नौ सदस्यीय दल समारोह में विशिष्ट अतिथि था।

डा0 डी.के. कंसल, डा0 रितु शर्मा, डा0 प्रिया बीर, डा0 चारू शर्मा तथा अन्य अनेक प्रभावी वक्ताओं ने अपने प्रस्तुतिकरणों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर बालकों के लिए खेल की आवश्यकता पर शिक्षकों का ध्यान आकर्षित किया। कोरियाई शिष्टमंडल ने छात्रों के लिए अनेक कौशलों, क्रीड़ाओं और छोटे खेलों का प्रदर्शन किया। इस कार्यशाला ने शारीरिक कार्यकलापों से युक्त कक्षा की शिक्षा को एक नया आयाम प्रदान किया। विभिन्न डीएवी स्कूलों के लगभग दो सौ शिक्षकों ने अत्यंत उत्साह और जोश के साथ इस कार्यशाला में भाग लिया।

ikpoh ekmV vkc vMj&11 fØdV ifr;kfxrk

माउंट आबू पब्लिक स्कूल, सेक्टर–5, रोहिणी ने पांचवी अंडर–11 क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए दिल्ली प्रदेश की 29 टीमों ने भाग लिया। माउंट आबे पब्लिक स्कूल की टीम गंगा इंटरनेशनल को हराकर प्रथम स्थान हासिल करने में सफल रही तथा गंगा इंटरनेशनल ने प्रथम रनर अप और सचदेवा स्कूल, पीतमपुरा ने द्वितीय रनर अप का खिताब जीता। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी अजय रत्रा थे जिन्होंने इस आयोजन की शोभा बढ़ाई। उनके साथ हरियाणा के क्रिकेटर तिलक राज तथा ईशांत शर्मा के कोच श्रवण गुप्ता भी मौजूद थे। श्रेष्ठ बल्लेबाज का पुरस्कार तरूण गुप्ता ने जीता तथा श्रेष्ठ गेंदबाज का पुरस्कार प्रशांत मलिक और गर्वित बजाज ने प्राप्त किया।

अपने भाषण में प्रधानाचार्य ने खिलाड़ियों को उनकी शानदार उपलब्धियों के लिए बधाई दी तथा भविष्य में भी इसी प्रकार बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया।

> शारीरिक कसरत का अभाव शरीर से अनिवार्य अवयवों को चुरा लेता है।
>
> करेन सेशंस

lhch,lbZ ifji=

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ

2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली–110092.

परिपत्र सं0 01

सं0 सीबीएसई/एएफएफ/परिपत्र/2009 दिनांक : 29.07.2009

lhch,lbZ ls lEc) lHkh Lor=
fo|ky;ksa ds iz/kkukpk;Z

fo"k; % lhch,lbZ ds lEc)rk ekunaMksa dk vuqikyu *(lEc)rk mi&fu;eksa ds vUrxZr)*

fiz; iz/kkukpk;Z]

हाल ही में ऐसा देखा गया है कि बड़ी संख्या में विद्यालय बोर्ड के संबद्धता उप–नियमों के अधीन निर्धारित उपबंधों का अनुपालन नहीं कर रहे हैं, जोकि बोर्ड नियमानुसार अनिवार्य हैं।

ऐसे विद्यालयों के उदाहरण भी मिले हैं जो स्टाफ को वेतन और अनुमेय भत्तों का भुगतान नहीं कर रहे हैं, ऐसी फीस प्रभारित कर रहे हैं जो विद्यमान सुविधाओं के अनुरूप नहीं है, छात्रों को दाखिल करते समय भेदभावपूर्ण व्यवहार कर रहे हैं, शारीरिक दण्ड को प्रतिबंधित करने में असफल रहे हैं, शारीरिक रूप से अशक्त छात्रों के लिए सुविधाएं मुहैया नहीं करा रहे हैं, कार्य–स्थल पर यौन–उत्पीड़न के मामलों का निपटान नहीं कर रहे हैं तथा स्वच्छ जल की पर्याप्त आपूर्ति अथवा स्वच्छता संबंधी कार्यकलापों को सुनिश्चित नहीं कर रहे हैं।

उल्लिखित प्रत्येक अपेक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना आवश्यक है क्योंकि छात्र, अभिभावक, स्थानीय समुदाय तथा समाज इन विसंगतियों पर विशेष नज़र रखते हैं और इन्हें प्राधिकारियों के ध्यान में लाते हैं।

यह भी देखा गया है कि अनेक विद्यालय प्रवेश परीक्षाओं के लिए कोचिंग प्रदान करने के नाम पर विद्यालय परिसरों के भीतर ही कोचिंग संस्थाएं चला रहे हैं। बोर्ड द्वारा इसे अनुमोदन नहीं दिया गया है तथा विद्यालयों को तत्काल ही इस प्रकार की विसंगतियों पर ध्यान देने की आवश्यता है। यदि वे संबद्धता उप–नियमों में यथाउपबंधित शर्तों का अनुपालन नहीं करते हैं, तो उनके विरूद्ध उपयुक्त कार्रवाई की जा सकती है।

संबद्धता उप–नियमों में निर्धारित निम्नलिखित शर्तें एक बार फिर तत्काल संदर्भ के लिए विद्यालयों के ध्यान में लाई जा रही हैं:

स्टाफ का वेतन और सेवा–शर्तें

(क) नियम 3.3(v) ''भारत में विद्यालय अपने स्टाफ को ऐसे वेतन और अनुमेय भत्तों का भुगतान अवश्य करेंगे जो राज्य सरकार के विद्यालयों के कर्मचारियों की सदृश श्रेणियों से अथवा भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट वेतनमानों आदि से कम नहीं होंगे। इसके अलावा, संबद्धता उप–नियमों के नियम 10 और नियम 24 से 49 के अनुसार निर्दिष्ट सेवा शर्तों का अनुपालन भी किया जाएगा।''

'kqYd

- fu;e 11-1 ''फीस प्रभार संस्था द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के अनुरूप होने चाहिए। फीस सामान्यतः राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न श्रेणियों के लिए निर्दिष्ट किए गए शीर्षकों के अंतर्गत ही प्रभारित की जानी चाहिए। विद्यालयों में दाखिला प्राप्त करने अथवा किसी अन्य प्रयोजन के लिए विद्यालय के नाम पर कोई कैपिटेशन फीस अथवा स्वैच्छिक चंदे प्रभारित/संग्रहित नहीं किए जाने चाहिए। ऐसी विसंगतियों के मामले में बोर्ड कड़ी कार्रवाई करेगा, जिसके फलस्वरूप विद्यालय की संबद्धता भी रद्द की जा सकती है।''

- fu;e 11-2 ''यदि छात्र अभिभावक के तबादले अथवा स्वास्थ्य संबंधी कारणों जैसी बाध्यता के कारण विद्यालय छोड़ता है अथवा सत्र के पूर्ण होने से पूर्व ही छात्र की मृत्यु हो जाती है, तो तिमाही/टर्म/वार्षिक फीस की आनुपातिक रूप में वापसी की जानी चाहिए।''

- fu;e 11-3 ''गैर–सहायताप्राप्त विद्यालयों को फीस में संशोधन करने से पूर्व अभिभावकों के प्रतिनिधियों के माध्यम से अभिभावकों से परामर्श करना चाहिए।''

Nk=k dk izos'k

(क) नियम 12 ''सीबीएसई संबद्धताप्राप्त विद्यालय में प्रवेश धर्म, नस्ल, जाति, वर्ण, जन्म स्थान अथवा इनमें से किसी के प्रति भेदभाव रखते हुए नहीं किया जाएगा। जहां तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए आरक्षण का संबंध है, इसे उस राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश के लिए लागू शिक्षा नीति/नियमों द्वारा विनियमित किया जाएगा जहां पर विद्यालय स्थित है।

(ख) इस बात पर ध्यान दिया जाए कि विद्यालय उच्च अंकों के आधार पर कक्षा XI में दाखिले के लिए बाहर के छात्रों को तरजीह दे रहे हैं। अलोकप्रिय प्रतिस्पर्धा को दूर करने के लिए इससे बचा जाना चाहिए। विद्यालय द्वारा तैयार किए गए सामान्य प्रवेश मानदण्ड के आधार पर कक्षा XI में प्रवेश के लिए पहली वरीयता अपने छात्रों को दी जानी चाहिए।

Nk=k d i fr Øjrk

विद्यालय प्रबंधन छात्रों के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास को सुफल बनाने के उद्देश्य से छात्रों को विकसित होने और अपनी योग्यता को समृद्ध बनाने के लिए उचित परिवेश और वातावरण मुहैया करेगा। एक निर्भीक वातावरण में सृजनशील मानव के रूप में छात्रों के विकास के लिए विद्यालयों को अपने शिक्षकों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे शारीरिक दण्ड के स्थान पर अन्य वैकल्पिक उपायों को अपनाएं। नियम 44.1 विद्यालय प्रबंधन समिति को अपने कर्मचारी के विरूद्ध कार्रवाई करने की शक्ति प्रदान करता है, यदि उस पर विद्यालय के किसी छात्र अथवा किसी कर्मचारी के विरूद्ध क्रूरता का आरोप लगा हो।

'kkjhfjd :i ls v'kDrk d fy, lfo/kk,

- नियम 8.2 ''प्रत्येक संस्था पीडब्ल्यूडी अधिनियम, 1995 में निर्धारित उपबंधों के अनुपालन में तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप व्हीलचेयर का प्रयोग करने वालों के लिए रैंप शौचालय और एलिवेटरों/लिफ्टों में ऑडिटरी संकेतों जैसी समुचित सुविधाए उपलब्ध कराएगी।''

- नियम 13.11 ''प्रत्येक विद्यालय पीडब्ल्यूडी अधिनियम, 1995 में निर्धारित उपबंधों के अनुपालन में तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप सामान्य विद्यालय में शारीरिक रूप से अशक्त/विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के प्रवेश को प्रोत्साहित करेगा।''

dk;LFky ij efgykvk d ;ku mRihMu dk fuokj.k

(क) कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए, संबद्धता उप–नियमों का नियम 10.9 निर्दिष्ट करता है कि ''कार्यस्थल पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से सुरक्षित करने के लिए यौन संबंधी हिंसा को नियंत्रित किया जाए और विशाखा एवं अन्य बनाम राजस्थान राज्य एवं अन्य की वर्ष 1992 की रिट याचिका (आपराधिक) सं0 666–70 में भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट दिशा–निर्देशों और मानदण्डों का कड़ाई के साथ अनुपालन किया जाए।'' बोर्ड द्वारा जारी दिनांक 16.2.2004 का विस्तृत परिपत्र वेबसाइट www.cbse.nic.in पर उपलब्ध है।

LokLF;] LoPNrk vkj vfXu lqj{kk

(क) नियम 3.3 (VII) ''प्रत्येक संस्था छात्रों की संख्या के अनुपात में स्वच्छ पेयजल और स्वास्थ्यकर एवं स्वच्छ शौचालयों की व्यवस्था करेगी जिनमें बालकों और बालिकाओं के लिए अलग–अलग हाथ इत्यादि धोने की सुविधाएं होंगी।''

(ख) नियम 8.5 ''विद्यालय को विद्यालय में पेयजल और अग्नि सुरक्षा सावधानियों के बारे में निगम प्राधिकारियों से प्राप्त निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन करना चाहिए। आवेदन के साथ निगम/दमकल प्राधिकारियों से प्राप्त स्वच्छता शर्तों और जल/अग्नि सुरक्षा के बारे में प्रमाण–पत्र भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इन अपेक्षाओं की पूर्ति के बारे में एक नया प्रमाण–पत्र प्रत्येक पांच वर्ष के भीतर प्राप्त किया जाना चाहिए तथा बोर्ड को प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(ग) नियम 23.11 ''छात्रों के लिए स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति के लिए संतोषजनक व्यवस्था की जाए तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं और यह सुनिश्चित किया जाए कि विद्यालय भवन, इससे संबंधित वस्तुएं और फर्नीचर, कार्यालय उपकरण, शौचालय, खेल का मैदान, विद्यालय उद्यान और अन्य परिसंपत्तियों का अनुरक्षण समुचित ढंग से और सावधानीपूर्वक किया जाए।

dksafpx laLFkkuksa dh d{kk,a pykuk

विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के लिए छात्रों को कोचिंग प्रदान करने के नाम पर विद्यालय परिसरों में कोचिंग संस्थाओं की कक्षाए चलाने की अनुमति बोर्ड द्वारा प्रदान नहीं की गई है। कुछ विद्यालय छात्रों और उनके अभिभावकों को गुमराह करने के लिए इसे सीबीएसई पाठ्यक्रम पढ़ाने एवं छात्रों को विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कराने वाले एक एकीकृत विद्यालय कार्यक्रम का नाम देकर ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं।

सीबीएसई विद्यालय के परिसर का प्रयोग किसी भी प्रकार की वाणिज्यिक गतिविधि के लिए नहीं किया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय को बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट की गई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न विषय पढ़ाने के लिए न्यूनतम घंटे निर्धारित करना सुनिश्चित करना चाहिए। विद्यालय में ऐसी कोचिंग कक्षाएं अथवा समानंतर कक्षाएं नहीं चलाई जानी चाहिए जो विद्यालय के नियमित टाइम–टेबल का समय लेती हों अथवा उसे प्रभावित करती हों अथवा जो छात्रों का ध्यान नियमित अध्ययन पाठ्यक्रम से भटकाती हों।

विद्यालय प्रमुखों को परामर्श दिया जाता है कि वे उपर्युक्त को ध्यान में रखें और इसे विद्यालय प्रबंधन समिति के ध्यान में भी ला दें। बोर्ड के दिशा–निर्देशों के उल्लंघन के लिए दोषी विद्यालयों के विरूद्ध कार्रवाई की जाएगी।

भवदीय,
ह0/–
(जोसफ इमैनुएल)
उप निदेशक (संबद्धता)

izfrfyfi uhps n'kkZ, x, funs'kky;ksa@dsoh,l@,uoh,l@lhVh,l, ds lacaf/kr iz[kqkksa dks bl vuqjks/k ds lkFk fd os mude {ks=kf/kdkj ds v/khu vkus okys lHkh lacaf/kr fo|ky;ksa esa Hkh bl tkudkjh dk izpkj&izlkj dj nsa %

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 016.

2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली.

3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली रा0रा0क्षे0 सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110 054.

4. निदेशक लोक निदेश (विद्यालय), संघ राज्यक्षेत्र सचिवालय, सेक्टर 9, चंडीगढ़–17.

5. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगतोक, सिक्किम–737 101.

6. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791 111.

7. शिक्षा निदेशक, अंडमान–निकोबार द्वीपसमूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर–744 101.

8. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली–110 085.

9. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को उनके संबंधित क्षेत्र में बोर्ड के सभी संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को भेज दें।

10. अकादमिक शाखा के शिक्षा अधिकारी/ एईओ, सीबीएसई.

11. संयुक्त सचिव (टी) को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर रखवा दें।

12. पुस्तकालय और सूचना अधिकारी, सीबीएसई.
13. सीबीएसई अध्यक्ष के ईओ.
14. सीई, सीबीएसई के पीए.
15. सचिव, सीबीएसई के पीए.
16. निदेशक (अकादमिक) के पीए.
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के पीए.
18 विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के पीए.
19. पीआरओ, सीबीएसई.

ह0/–
उप सचिव (संबद्धता)

dUnh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली–110092.

सं0 सीबीएसई / एएफएफ / परिपत्र / 2009 — दिनांक : 29 जुलाई, 2009
परिपत्र सं0 02

lhch,lbZ ls lc) lHkh
lLFkkvksa ds izeq[k

fo"k; % fo|ky;ksa esa eksckby Qksuksa ds iz;ksx ij izfrc/kA

प्रिय प्राचार्य,

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सर्वव्यापी मोबाइल फोन अत्यंत गहराई तक पैठ बना चुके हैं भले ही वह छात्र हो, शिक्षक हो या अन्य व्यवसायी हो। हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेपों पर निरंतर बढ़ती हुई निर्भरता को कम करें जिसके सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के प्रभाव हो सकते हैं।

विद्यालयी परिवेश में मोबाइल फोन के प्रयोग को निश्चित रूप से सीमित किए जाने की आवश्यकता है। बोर्ड की राय है कि विद्यालयी शिक्षा से जुड़े सभी पणधारकों जैसे छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और संस्था प्रमुखों को उनके विद्यालयों में मोबाइल फोनों के प्रयोग और विद्यालय परिसरों इसके प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने पर सर्वसम्मति बनानी चाहिए। ऐसा इसलिए किया जाना चाहिए क्योकि उनके विद्यालयों में मोबाइल फोन का प्रयोग ध्यान भंग करने, एकाग्रता में कमी लाने, तनाव, भय और कभी–कभी दुरूपयोग का गंभीर कारण बन सकता है। यदि मोबाइल फोन साइलेंट मोड पर भी हैं, तो भी वे कक्षा के भीतर ध्यान भंग करने का स्रोत बन सकते हैं क्योंकि छात्र कक्षा चलने के दौरान और यहां तक कि किसी निश्चित–कार्य के दौरान शार्ट मैसेज सर्विस का प्रयोग कर सकते हैं। कैमरों का, जोकि अधिकांश मोबाइल फोनों में आज एक आम विशेषता हैं, भी दुरूपयोग किया जा सकता है।

मोबाइल फानों के प्रयोग के बारे में पूर्व में ऐसे अनेक उदाहरण सामने आए हैं, जिनसे सबक सीखे जाने की आवश्यकता है तथा बोर्ड पुरजोर सिफारिश करता है कि छात्रों को इस बात के लिए मनाया जाना चाहिए कि वे विद्यालय में मोबाइल फोन लेकर न आएं। प्राचार्य, अध्यापक और अन्य कर्मचारी भी कक्षाओं, खेल के मैदानों, कॉमन क्षेत्रों, प्रयोगशालाओं और विद्यालय परिसर के अन्य स्थानों पर मोबाइल फोन का प्रयोग करते दिखाई नहीं देने चाहिए।

विद्यालय प्राधिकारियों को लैंड लाइन टेलीफोन उपलब्ध कराने चाहिए जहां से शिक्षक और छात्र, यदि आवश्यक हो, तो जरूरी होने तथा आपातकालीन स्थिति में कॉलें कर सकते हैं। विद्यालय में शिक्षकों और छात्रों के लिए कॉलें प्राप्त करने और उन्हें रिकार्ड करने की केन्द्रित प्रणाली होनी चाहिए।

इसे सभी शिक्षकों, अन्य कर्मचारियों, छात्रों और अभिभावकों के ध्यान में लाया जाए ताकि कक्षाओं में और अधिक अर्थपूर्ण एवं अधिगम का माहौल सृजित किया जा सके, जो एक बेहतर परिवेश तथा विद्यालय का अच्छा वातावरण तैयार करता है।

भवदीय,
ह0/-
(जोसफ इमैनुएल)
उप निदेशक (संबद्धता)

ifrfyfi uhp n'kk, x, fun'kky;k@doh,l@,uoh,l@lhVh,l, d lcf/kr ie[kk dk bl vujk/k d lkFk fd o mud {k=kf/kdkj d v/khu vku oky lHkh lcf/kr fo|ky;k e Hkh bl tkudkjh dk ipkj&ilkj djn %

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 016.

2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली.

3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली रा0रा0क्षे0 सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110 054.

4. निदेशक लोक निदेश (विद्यालय), संघ राज्यक्षेत्र सचिवालय, सेक्टर 9, चंडीगढ़–17.

5. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगतोक, सिक्किम–737 101.

6. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791 111.

7. शिक्षा निदेशक, अंडमान–निकोबार द्वीपसमूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर–744 101.

8. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली–110 085.

9. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को उनके संबंधित क्षेत्र में बोर्ड के सभी संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को भेज दें।

10. अकादमिक शाखा के शिक्षा अधिकारी / एईओ, सीबीएसई.

11. संयुक्त सचिव (टी) को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर रखवा दें।

12. पुस्तकालय और सूचना अधिकारी, सीबीएसई.

13. सीबीएसई अध्यक्ष के ईओ.

14. सीई, सीबीएसई के पीए.

15. सचिव, सीबीएसई के पीए.

16. निदेशक (अकादमिक) के पीए.

17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के पीए.

18 विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के पीए.

19. पीआरओ, सीबीएसई.

ह0 / –

उप सचिव (संबद्धता)

d.Unh; ek/;fed f'k{kk ckM
2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली–110092.

सं0 सीबीएसई / एसीएडी / सी.राइट्स / 2009 | दिनांक : 16 जून, 2009
परिपत्र सं0 16

lhch,lbZ ls lc) lHkh
lLFkkvk ds iz/kku ¼fnYyh {ks=½-

fo"k; % fo|ky; ikB;p;k e ckyd vf/kdkj ennk dk 'kkfey djukA

प्रिय प्राचार्य,

सभी संबंधितों की जानकारी में यह लाया जाता है कि रा0रा0क्षे0 दिल्ली सरकार, दिल्ली ने संसद के एक अधिनियम (2006 का संख्या 4) के माध्यम से ''दिल्ली बालक अधिकार संरक्षण आयोग (डीसीपीआरसी)'' का गठन किया है।

अधिनियम के अधीन निर्धारित कृत्यों के अनुसार, आयोग के कार्य निम्नलिखित होंगे :

- बालक अधिकारों के संरक्षण के लिए किसी विधि के अंतर्गत रक्षोपायों की जांच एवं समीक्षा करना; और
- उनके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उपायों की सिफारिश करना;
- सरकार को वार्षिक और विशेष रिपोर्टें प्रस्तुत करना;
- आतंकवाद, हिंसा, आपदा, एचआईवी / एड्स, अवैध व्यापार, अनुचित व्यवहार और शोषण द्वारा प्रभावित बालकों के बाल अधिकारों के उल्लंघन की जांच करना;
- उपचारात्मक उपाय सुझाना;
- उपयुक्त उपचारात्मक उपायों के लिए देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता रखने वाले बालकों, हताश, हाशिये पर रखे गए और गैर–अधिकारप्राप्त बालकों, किशोर अपराधियों एवं कानून के साथ विवादों में घिरे बालकों, बिना परिवार वाले बालकों तथा कैदियों के बालकों से संबंधित मामलों की जांच करना;
- बाल अधिकारों पर संधियों, अंतरराष्ट्रीय लिखतों, सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और क्रियाकलापों की आवधिक समीक्षा करना तथा बालकों के श्रेष्ठ हित में उनका प्रभावी कार्यान्वयन कराना;
- बाल अधिकारों पर शोध, साक्षरता और जागरूकता को प्रोत्साहित करना;
- मीडिया, प्रकाशन, सेमिनारों आदि के माध्यम से रक्षोपाय;

- सरकार और सामाजिक संगठनों द्वारा चलाई जा रही किशोर और आवासीय संस्थाओं का निरीक्षण करना ताकि बालकों की समुचित देखभाल, उपचार, रूपांतरण और संरक्षण को सुनिश्चित किया जा सके।

आयोग को शिकायतों की जांच करने तथा निम्न से संबंधित मामलों का ''स्वतः'' संज्ञान लेने की शक्तियां प्राप्त होंगी :

- बाल अधिकारों को वंचित किया जाना और उनका उल्लंघन;
- बालकों के संरक्षण और विकास का उपबंध करने वाले कानूनों का गैर–क्रियान्वयन;
- परेशानियों को कम करने, बालकों का कल्याण सुनिश्चित करने और उन्हें राहत उपलब्ध कराने वाले नीतिगत निर्णयों, दिशा–निर्देशों अथवा अनुदेशों का गैर–क्रियान्वयन; ऐसे सभी मुद्दों को उपयुक्त प्राधिकारियों के साथ उठाना और बालक अधिकारों के विकास के लिए कोई अन्य कृत्य कार्यान्वित करना और उससे संबंधित मामले।

बालक अर्थात 18 वर्ष से कम की आयु वाले सभी व्यक्ति जनसंख्या का लगभग 42 प्रतिशत भाग हैं, जिनमें से न्यूनतम 25 प्रतिशत बालकों के अत्यंत दयनीय, हाशिए पर होने और निर्धन होने की सूचना है, जो अपमान और शोषण के अनेक रूपों का सामना करते हैं। ऐसे बड़ी संख्या में बच्चे दिल्ली में हैं, जिन्हें किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2000 के अंतर्गत विधिक रूप से ''देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बालकों'' के रूप में परिभाषित किया गया है, और ये संभवतः वे बालक हैं जिनके पास घर/स्थापित छत नहीं है अथवा जो जीविकोपार्जन के किसी भी प्रत्यक्ष साधन से विहीन हैं; भीख मांगते हुए पाए जाते हैं; सड़कों पर रहने वाले अथवा काम करने वाले बालक हैं; जीवन, चोट, शोषण अथवा उपेक्षा की चुनौती में घिरे हैं; मानसिक अथवा शारीरिक रूप से निःशक्त हैं अथवा बीमार हैं; ऐसे अभिभावकों के साथ हैं जो उनकी देखभाल करने में असमर्थ हैं; शोषित, यौन–शोषण से पीड़ित अथवा अवैध कार्यों, नशाखोरी, अवैध व्यापार, अनैतिक लाभ के कार्यों में लगाए गए हैं अथवा विवाद, होहल्ले या आपदा के शिकार हैं।

दिल्ली में डीसीपीसीआर के अध्यक्ष एवं प्रभारी–अधिकारी से ई–मेल kanthamod@hotmail.com, मोबाइल नं0 9810995059 और 9811559949 पर संपर्क किया जा सकता है। आयोग के अस्थायी कार्यालय ने निर्मल छाया कॉम्प्लेक्स, जेल रोड, नई दिल्ली से कार्य करना आरंभ कर दिया है।

इसे सभी संबंधितों की जानकारी में ला दिया जाए।

भवदीया,
ह0/–
(डा0 साधना पराशर)
शिक्षा अधिकारी (एल)

ifrfyfi uhps n'kk, x, funs'kky;k@dsoh,l@,uoh,l@lhVh,l, ds lcf/kr iez[kk dks bl vuqjks/k ds lkFk fd os mudsa {ks=kf/kdkj ds v/khu vkus okys lHkh lcf/kr fo|ky;ksa esa Hkh bl tkudkjh dk izpkj&izlkj djsa %

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 016.

2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली.

3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली रा0रा0क्षे0 सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110 054.

4. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली–110 085.

5. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को दिल्ली क्षेत्र में बोर्ड के सभी संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को भेज दें।

6. अकादमिक शाखा के शिक्षा अधिकारी, सीबीएसई.

7. सभी सहायक शिक्षा अधिकारी, सीबीएसई.

8. पुस्तकालय और सूचना अधिकारी, सीबीएसई.

9. सीबीएसई अध्यक्ष के ईओ.

10. सीई, सीबीएसई के पीए.

11. सचिव, सीबीएसई के पीए.

12. निदेशक (अकादमिक) के पीए.

13. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के पीए.

14. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के पीए.

15. पीआरओ, सीबीएसई.

शिक्षा अधिकारी (एल)

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
17, राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002.

ईओ / एसीएडी / आईसीवाईए / 2009

18 जून, 2009

परिपत्र सं0 17 / 2009

सेवा में

lhch,lbZ ls lEc) lHkh
laLFkkvksa ds izeq[k ¼fnYyh {ks=½-

;qok dykdkjksa dh rhljh varjjk"Vªh; izfr;ksfxrk
^^mixzg vkSj yksx % dy] vkt vkSj dy^^-

प्रिय प्राचार्य,

बेलारूस के ब्रेस्ट क्षेत्र का लायखोविशी सांस्कृतिक विभाग बेलारूस के सांस्कृतिक, शिक्षा और विदेश मंत्रालय की सहायता से नवम्बर, 2009 में युवा कलाकारों की तीसरी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता ''उपग्रह और लोग'' का आयोजन कर रहा है। 4 से 18 वर्ष के बालक उनकी आयु के अनुसार चार विभिन्न श्रेणियों में इसमें भाग ले सकते हैं।

बालक एवं युवा कला के महोत्सव के रूप में युवा कलाकारों की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता ''उपग्रह और लोग : कल, आज और कल'' की स्थापना वर्ष 2004 में हुई थी तथा युवा छात्रों में सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित करने, हमारे उपग्रह के जीवन को आज और भविष्य में सुरक्षित रखने के प्रति उनके जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने के उद्देश्य से इसका आयोजन प्रत्येक दो वर्ष में एक बार किया जाता है। इस प्रतिस्पर्धा में विभिन्न राष्ट्रों के जीवन और संस्कृति की जानकारी प्रदान करने तथा विश्व के सभी भागों में भाईचारे और आपसी समझ को बढ़ावा देने की परिकल्पना भी की गई है।

प्रतियोगिता के अधोउल्लिखित विवरण सभी छात्रों के ध्यान में ला दिए जाएं और इसमें अधिकतम प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाए।

1- vkosndksa dh ik=rk%

- आवेदकों की आयु : 1 सितम्बर, 2009 को 4–18 वर्ष
- प्रतियोगिता में नामांकन इन आयु श्रेणियों के अनुसार : 4–6 वर्ष, 7–10 वर्ष, 11–14 वर्ष और 15–18 वर्ष

2- izfrLi/kkZ dk;ksZa dk fo"k;%

- dykRed dk;Z ds fo"k; % आवेदक कोई भी विषय चुन सकते हैं जैसे चित्रकारी, चित्रांकन और विभिन्न कलात्मक कार्य जो उनके पैतृक स्थानों अथवा क्षेत्रों की

ऐतिहासक और सांस्कृति विरासत को, छुट्टियों और दैनिक जीवन की अद्‌भुत विशेषताओं को, उनके देश के आधुनिक जीवन को, नए देश के बारे में उनकी कल्पना को, उनके निजी सपनों को चित्रित करते हों जो उनके विचार और कल्पनाएं हो सकती हैं, कल्पना द्वारा कागज पर साकार किए गए हो सकते हैं और हमारे चारों ओर विद्यमान सुंदर परिवेश पर उनके अनुभव और कल्पना की कोई भी अवास्तविक घटना हो सकती है।

- lkexh vkj rduhd % चित्रकारी, ग्राफिक कला, कला और शिल्प। आवेदक पानी के रंगों, रंगीन पेंसिलों, पेस्टलों, चित्रकारी, उत्कीर्णन, कोलाज अथवा कागज कार्य के लिए विभिन्न सामग्री, पेस्टलबोर्ड अथवा अन्य किसी सामग्री का प्रयोग कर सकते हैं। महीन मूर्तिकला के कार्य तथा हल्की, बेकार सामग्री के प्रयोग के साथ कोलाज की अनुमति नहीं है।
- fp=kdu dk vkdkj % लम्बाई 70 सें0मी0 से अधिक नहीं।
- dk;l dh l[;k % प्रत्येक प्रार्थी 3 कार्यों से अधिक प्रस्तुत नहीं कर सकता है। ny – 30 लेखकों के कार्य से अधिक नहीं। सभी कार्य वर्ष 2008–09 में लेखक के द्वारा होने चाहिए। सामूहिक कार्य स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

fVli.kh : बिना फ्रेम के कार्य का डिजाइन और माडल के पीछे लेबल के साथ एक सर्टिफिकेट, बेलारसियन, रसियन या अंग्रेजी में प्रिंट/हस्तलिखित भेजे जाने चाहिए। लेखक के कार्यों का लेखा स्टूडियो, कला स्कूलों और सृजनात्मक समूह द्वारा पत्र–व्यवहार सूची के साथ संलग्न होना चाहिए।

3- dykRed dk;l d Hktu dh 'kr – कलात्मक कार्य 1 नवम्बर 2008 से 1 नवम्बर 2009 तक प्राप्त किए जाएंगे। बाद में भेजे गए कार्य चौथे चरण की प्रतियोगिता में शामिल होंगे।

4- ifr;kfxrk d ifj.kke – दिसम्बर 2009 के शुरू में कलात्मक कार्यों का चयन होगा एवं पुरस्कार दिए जाएंगे।

- विजेताओं को 2009 के अन्त में सूचित किया जाएगा। सभी पुरस्कार व्यक्तिगत रूप से दिए जाएंगे या डाक से भेजे जाएंगे।
- विजेताओं के नाम के साथ एक सूची वर्ष 2010 में प्रकाशित की जाएगी।
- fVli.kh – प्रतियोगिता के लिए जो कलात्मक कार्य भेजा जाएगा उसे लेखक को वापस नहीं किया जाएगा। यह कार्य प्रतियोगिता के आयोजक ''अपोलो स्टूडियो'' की संपत्ति होगी। संपूर्ण कलात्मक कार्यों का प्रयोग विभिन्न वैज्ञानिक एवं विधिसंगत उद्‌देश्यों के लिए किया जाएगा। निर्णायक मंडल के द्वारा चयनित कार्य लियखोविचि स्टेट आर्ट गैलरी ''अपोलो स्टूडियो'' के द्वारा बनाई गई कार्य योजना का एक भाग होगा। प्रतियोगिता के सहभागियों के पास इन कलात्मक कार्यों (प्रकाशित) के प्रयोग का सुरक्षित अधिकार होगा।
- प्राचार्या/प्राचार्य इच्छुक प्रतिभागियों के ध्यान में उक्त कार्य को ला सकते हैं और प्रतिभागिता सुनिश्चित कर सकते हैं।

5- inf'kfu;k – कलात्मक कार्यों को वर्ष 2010 में लियखोविचि में प्रदर्शित किया जाएगा। इसके पश्चात, बेलारूस के बहुत शहरों, कस्बों और ब्रेस्ट क्षेत्रों में चल–प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी। सारगर्भित प्रदर्शनियां भी आयोजित की जाएंगी।

6- ijLdkj –

- विशिष्ट पुरस्कार – 3 लेखक (बेलारसियन से एक, अन्य देशों से दो)
- प्रथम श्रेणी डिप्लोमा – 80
- द्वितीय श्रेणी डिप्लोमा – 120
- तृतीय श्रेणी डिप्लोमा – 140
- आयोजक समति के विशेष पुरस्कार और प्रमाण–पत्र एवं डिप्लोमा – 150
- उन सभी कलाकारों को निश्चित प्रमाण–पत्र प्रदान किए जाएंगे जिन्होंने अपने कार्य को प्रदर्शित किया है।
- श्रेष्ठ प्रतिस्पर्धी कलात्मक कार्य लगभग 450 होंगे।
- विजेताओं तथा प्रशंसाप्राप्त छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए सभी शिक्षकों को विशेष डिप्लोमा प्रदान किए जाएंगे।

dk; iLrr dju dk irk%

- आर्टिस्टिक स्टूडियो ''अपोलो'', प्लेस ऑफ कल्चर, 33 लेनिन मार्ग, लायखोविशी, ब्रेस्ट रीजन, बेलारूस–225 370.

fp=dyk ycy dk ueuk %

चित्रकला का शीर्षक ____________________

कलाकार का उपनाम ____________________

आयु ____________________

देश ____________________

प्रेषक का उपनाम, नाम, समोच्चरित नाम (स्टूडियो व

____

शिक्षक ____________________

भवदीय,

(सी गुरूमूर्ति)
निदेशक (अकादमिक)

ifrfyfi uhp n'kk, x, foHkkxk/;{kk dk bl vujk/k d lkFk fd o mud {k=kf/kdkj d v/khu vku oky lHkh lcf/kr fo|ky;k e bl tkudkjh dk ipkj&ilkj dj n %

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 016.
2. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली–110 085.
3. अपर महानिदेशक, सेना शिक्षा महानिदेशक, 'ए' विंग, सेना भवन, डीएचक्यू–पीओ, नई दिल्ली.
4. उप शिक्षा निदेशक, सीमा सुरक्षा बल, ब्लॉक 10, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली.
5. सचिव, एडब्ल्यूईएस, सेना मुख्यालय, एडज्यूटेंट सामान्य शाखा, सीडब्ल्यू–4, सेना कल्याण शिक्षा सोसाइटी, वेस्ट ब्लॉक नं0 3, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–22.
6. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगतोक, सिक्किम–737 101.
7. शिक्षा निदेशक, अंडमान–निकोबार द्वीपसमूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर–744 101.
8. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791 111, अरूणाचल प्रदेश.
9. निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली–110058.
10. लोक अनुदेश निदेशक, चण्डीगढ़ प्रशासन, सेक्टर 9, चण्डीगढ़.
11. सीबीएसई के सभी विभागाध्यक्ष और अन्य अधिकारीं।
12. सीबीएसई अध्यक्ष के ईओ.
13. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारी
14. सीबीएसई के सभी शिक्षा अधिकारी
15. संयुक्त सचिव (आईटी) को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर रखवा दें।
16. शिक्षा अधिकारी (एल) को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को सेनबोसेक के आगामी अंक में प्रकाशित करवा दें।
17. पीआरओ, सीबीएसई.

ह0/–

निदेशक (अकादमिक)

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM
''शिक्षा केन्द्र'', 2, कम्युनिटी सेंटर,
प्रीत विहार, दिल्ली–110092.

ईओ/एसीएडी/हैल्थ/2009 — 19 जून, 2009
परिपत्र सं0 18/2009

सेवा में

lhch,lb l lc) lHkh
Lor= fo|ky;k d ie[k-

fo"k; % 26 tu] 2009 dk u'kk[kksjh vkj vo/k ekuo 0;kikj d fo:) vrjjk"Vh; fnol eukuk-

प्रिय प्राचार्य,

अपने 0;kid fo|ky; LokLFk dk;Øe तथा fd'kkj f'k{kk dk;Øe के भाग के रूप में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने LokLF; ikRlkgd fo|ky;k की संकल्पना को पुनःप्रवर्तित किया है।

एक LokLF; ikRlkgd fo|ky; उपलब्ध समस्त उपायों का समावेश करते हुए स्वास्थ्य और शिक्षण को प्रोत्साहन देता है तथा नीति, सेवाओं के माध्यम से एवं विद्यालय का स्वस्थ परिवेश तैयार करके ऐसी परिस्थितियों का सृजन करता है, जो स्वास्थ्य के लिए अनुकूल होती हैं। यह आशा की जाती है कि सीबीएसई से संबद्ध विद्यालय मृत्यु के प्रमुख कारणें, रोग और निःशक्तता जैसे तम्बाकू का सेवन, एचआईवी/एड्स/एसटीडी, गृहप्रेमी जीवन–शैली, नशीले पदार्थ और शराब, हिंसा और चोट तथा अस्वच्छ पोषण के बारे में जागरूकता का सृजन कर रहे होंगे। विद्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे व्यवहार, कौशल, अभिवृत्ति और मूल्यों के क्षेत्र में क्षमता निर्माण द्वारा सकारात्मक स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों को प्रभावित करें।

विद्यालयों में मौजूद LokLF; vkj d|'kyrk Dyc इन छह विषयों में अवश्य ही कार्य करने चाहिए : gekjk 'kjhj dk tkuuk] Hkkstu vkj ik"k.k] futh vkj i;kojk.kh; LoPNrk] 'kkjhfjd LoLFkrk] lqjf{kr ,o ftEeokj cuuk vkj 0;ogkj ,o thou dk'kyA

प्रत्येक वर्ष 26 जून को u'kk[kksjh vkj vo/k ekuo 0;kikj d fo:) vrjjk"Vh; fnol के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर बोर्ड यह आशा करता है कि विद्यालय tkx:drk vfHk;ku vk;kftr करके, lxkf"B;k vkj dk;'kkykvk का आयोजन

करके तथा lkLdfrd dk;Øeks vkj in'kfu;k का आयोजन करके bl ldV ds f[kykQ lkefgd :i ls l?k"k djus dk viuk ldYi को नवीकृत करें।

rEckdw eqDr fo|ky; सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य दिशानिर्देश नीचे दिए गए हैं:

1. मुख्य प्रवेश द्वार के बाहर चारदीवारी पर किसी प्रमुख स्थान पर ^^rEckdw eqDr fo|ky;^^ अथवा ^^rEckdw eqDr laLFkk^^ के बोर्डों का प्रदर्शन।

2. परिसर के भीतर और विद्यालय/संस्था से 100 गज के व्यास के भीतर तम्बाकू की बिक्री न करने देना तथा इस संबंध में अनिवार्य साइनबोर्ड मुख्य द्वार के निकट और विद्यालय/संस्था की चारदीवारी पर प्रमुख रूप से लगाए जाने चाहिए।

3. छात्रों/शिक्षकों/अन्य स्टाफकर्मियों/आगंतुकों द्वारा संस्था के परिसर के भीतर धूम्रपान अथवा तम्बाकू के सेवन की अनुमति न देना।

4. संस्था के भीतर 60x30 सेंमी के आकार के ^^/kweziku oftZr {ks= & ;gka ij /kweziku ,d vijk/k g^^ साइनबोर्डों का प्रदर्शन (जैसाकि कानूनन अनिवार्य है)।

5. विद्यालय/संस्था में प्रमुख स्थानों पर तम्बाकू के खतरनाक प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान करने वाले पोस्टर लगाए जाने चाहिए। विद्यार्थियों को तम्बाकू नियंत्रण के विषय पर अपने स्वयं के पोस्टर तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6. विद्यालय/संस्था के प्रधानाचार्य/प्रमुख के पास flxjsV vkSj vU; rEckdw mRikn vf/kfu;e (कोप्टा) की एक प्रति अवश्य उपलब्ध होनी चाहिए (इस स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की वेबसाइट – www.mohfw.nic.in से डाउनलोड किया जा सकता है)।

7. एक ^^rEckdw fu;a=.k lfefr अवश्य गठित की जानी चाहिए। इसकी अध्यक्षता विद्यालय प्रमुख/प्राचार्य द्वारा की जानी चाहिए तथा इसके सदस्य विज्ञान शिक्षक, अथवा कोई अन्य शिक्षक, विद्यालय परामर्शक (यदि उपलब्ध है), कम–से–कम दो ,u,l,l@,ulhlh ds Nk=] vfHkHkkodksa ds कम–से–कम दो प्रतिनिधि, {ks= ds ,e,y,] {ks= ds ,l,pvks] fuxe ik"kZn] ihvkjvkbZ ds lnL;] कोई अन्य सदस्य होने चाहिए। समिति विद्यालय/संस्था द्वारा ली गई तम्बाकू नियंत्रण पहलों की निगरानी करेगी। समिति की बैठक हर तिमाही में होगी तथा वह जिला प्रशासन को रिपोर्ट करेगी।

8. rEckdw fu;a=.k कार्यकलापों को वर्तमान में चल रहे fo|ky; LokLF; dk;Zक्रम तथा LokLF; vkSj dq'kyrk Dyc की गतिविधियों के साथ जोड़ा जाए।

9. विद्यालय/संस्था की लेखन–सामग्री पर तम्बाकू विरोधी नारे लिखने का प्रोत्साहित किया जाए।

10. विद्यालय / संस्था के प्राचार्य / प्रमुख छात्रों / शिक्षकों / अन्य कर्मचारियों द्वारा की गई तम्बाकू नियंत्रण पहलों को मान्यता देंगे तथा उन्हें प्रशस्ति–पत्र अथवा पुरस्कार दिए जाएंगे।

इन दिशा–निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जाए तथा इनके बारे में जागरूकता को छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा साथ ही अन्य सभी पणधारकों की जानकारी में ला दिया जाए।

भवदीया,
ह0 / –
(डा0 साधना पराशर)
शिक्षा अधिकारी (एल)

ifrfyfi uhp n'kk, x, fun'kky;k@doh,l@,uoh,l@lhVh,l, d lcf/kr ie[kk dk bl vujk/k d lkFk fd o mud {k=kf/kdkj d v/khu vku oky lHkh lcf/kr fo|ky;k e Hkh bl tkudkjh dk ipkj&ilkj dj n %

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 016.
2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली.
3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली रा0रा0क्षे0 सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110 054.
4. निदेशक लोक निदेश (विद्यालय), संघ राज्यक्षेत्र सचिवालय, सेक्टर 9, चंडीगढ़–17.
5. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगतोक, सिक्किम–737 101.
6. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791 111.
7. शिक्षा निदेशक, अंडमान–निकोबार द्वीपसमूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर–744 101.
8. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली–110 085.
9. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को उनके संबंधित क्षेत्र में बोर्ड के सभी संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को भेज दें।
10. अकादमिक शाखा के शिक्षा अधिकारी / एईओ, सीबीएसई.
11. संयुक्त सचिव (टी) को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर रखवा दें।
12. पुस्तकालय और सूचना अधिकारी, सीबीएसई.
13. सीबीएसई अध्यक्ष के ईओ.
14. सीई, सीबीएसई के पीए.
15. सचिव, सीबीएसई के पीए.
16. निदेशक (अकादमिक) के पीए.
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के पीए.
18 विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के पीए.
19. पीआरओ, सीबीएसई.

f'k{kk vf/kdkjh ¼,y½

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM

(केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन)
'शिक्षा सदन', 17, राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002.

सीबीएसई/ईओ(एसडी)/मैथ्स ओल. 2009/ दिनांक 23.06.2009 परिपत्र सं0 20

ckM l l c) lHkh
lLFkkvk d i e[k

fo"k; % lhch,lb xi xf.kr vkyfEi;kM] 2009 dk vk;ktu

प्रिय प्राचार्य,

आपको विदित है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड प्रत्येक वर्ष ग्रुप गणित ओलम्पियाड का आयोजन करता है। यह प्रतियोगिता देश के विभिन्न भागों के चुने हुए स्थानों पर आयोजित की जाती है तथा इसका उद्देश्य इस विषय में प्रतिभाओं की पहचान करना, उन्हें प्रोत्साहित करना और उन्हें आगे बढ़ने में सहायता प्रदान करना है।

आपको यह सूचित किया जाता है कि इस वर्ष उक्त प्रतियोगिता चुने हुए केन्द्रों पर रविवार, 22 नवम्बर, 2009 को आयोजित की जाएगी। संलग्न फोल्डर में प्रतियोगिता के बारे में विस्तृत प्रासंगिक जानकारी निहित है।

फोल्डर में शामिल जानकारी को सभी संबंधितों के ध्यान में लाया जाए तथा इसका व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए। इस संबंध में किसी भी अन्य सूचना के लिए निम्नलिखित से संपर्क किया जाए :

डा0 सृजता दास, शिक्षा अधिकारी (एसडी), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, शिक्षा सदन, 17, राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002 दूरभाष : 011–23237779 (कार्यालय)

धन्यवाद,

भवदीय,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (अकादमिक)

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
17, राउज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002.

,bZvk¼Mhvkj½@,lh,Mh@fetks@2009 fnukad 23-06-2009

ifji= la0 21

सेवामें

cksMZ ls lac) lHkh
laLFkkvksa ds izeq[k

fo"k; % cksMZ ijh{kk 2010 ds fy, d{kk X vkSj XII ds fy, fetks esa v|ru ikB~;p;kZA

प्रिय प्रधानाचार्य,

मिजोरम राज्य बोर्ड द्वारा किए गए परिवर्तनों के अनुरूप, कक्षा X और XII के लिए मिजो पाठ्यचर्या में कतिपय संशोधन (हमारे पाठ्यचर्या दस्तावेज 2010 द्वारा) किए गए हैं । कक्षा X में पद्य और गद्य खंडों में कुछ विषयों को प्रतिस्थापित किया गया है जबकि कक्षा XII में नाट्य खंडों से संबंधित परिवर्तनों का विवरण नीचे दिया गया है :

कक्षा	खंड	क्रमांक	विद्यमान	द्वारा प्रतिस्थापित
X	पद्य	4	का हमुन इनपुई	अवम ख्वाहर लेन्ख्वाल
X	गद्य	2	बुएना	ची बिंग पोलिटिक्स
		5	मिजोहमाम जिया लेह ननफुंग	नुंग पुइट्लिंग
		7	ए लाई लुम लुम	बेसेना
XII	नाट्य	1	जोथानसांगी – वन्नेत्लुएंगा	सुआल मान थिन्हा – लालथांग फाला सेलो

इसे सभी संबंधितों के ध्यान में ला दिया जाए।

ये परिवर्तन बोर्ड परीक्षा 2010 के लिए लागू होंगे।

भवदीय,

(सी. गुरूमूर्ति)

ifrfyfi uhp n'kk, x, fun'kky;k@dsoh,l@,uoh,l@lhVh,l, d lcf/kr ie[kk dk bl vujk/k d lkFk fd o mud {k=kf/kdkj d v/khu vku oky lHkh lcf/kr fo|ky;k e Hkh bl tkudkjh dk ipkj&ilkj dj n %

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इस्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110 016.
2. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली.
3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली रा0रा0क्षे0 सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110 054.
4. निदेशक, एनसीईआरटी, श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली–1100016.
5. निदेशक लोक निदेश (विद्यालय), संघ राज्यक्षेत्र सचिवालय, सेक्टर 9, चंडीगढ़–17.
6. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगतोक, सिक्किम–737 101.
7. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791 111.
8. शिक्षा निदेशक, अंडमान–निकोबार द्वीपसमूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर–744 101.
9. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ईएसएस ईएसएस प्लाजा, कम्युनिटी सेंटर, सेक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली–110 085.
10. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को इस अनुरोध के साथ कि वे इस परिपत्र को उनके संबंधित क्षेत्र में बोर्ड के सभी संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को भेज दें।
11. अकादमिक शाखा के शिक्षा अधिकारी/ एईओ, सीबीएसई.
12. पुस्तकालय और सूचना अधिकारी, सीबीएसई.
13. सीबीएसई अध्यक्ष के ईओ.
14. सीई, सीबीएसई के पीए.
15. सचिव, सीबीएसई के पीए.
16. निदेशक (अकादमिक) के पीए.
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के पीए.
18 विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के पीए.
19. पीआरओ, सीबीएसई.
20. संयुक्त सचिव (टी) को इस अनुरोध के साथ कि इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर रखवा दें।

fun'kd ¼'k{kf.kd½

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई / शैक्ष0 / शि.अ0 एनयुएसएसए / 2009 — दिनांकः 24.06.2009

परिपत्र सं0:22

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

fo"k;% fo|ky;ksa esa ^^gSYFk ,oa osyusl Dyc rFkk ^bdks Dyc* LFkkfir djus ds lac/k esa us'kuy vcZu Ldwy lSfuVs'ku vokMZ 2009**

प्रिय प्रधानाचार्य जी,

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शहरी विकास मंत्रालय एवं जर्मन टेक्निकल को–आपरेशन (जीटीजैड) के सहयोग से 'नेशनल इनिशिएटिव ऑन स्कूल सैनिटेशन' आरंभ किया है और इसका उद्देश्य छात्रों में स्वच्छता की अच्छी आदतें पैदा करना है। शहरी स्कूल स्वच्छता में उत्कृष्टता उत्पन्न तथा प्राप्त करने के लिए जर्मन टेक्निकल को–आपरेशन (जीटीजैड) तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ–साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वार्शिक नेशनल अर्बन स्कूल सैनिटेशन अवार्ड (एनएसएसयूए) प्रारंभ किया गया है।

ये अवार्ड उन शहरी विद्यालयों को सम्मानित करने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया है जो व्यावहारिक परिवर्तन लाने के लिए प्रभावी स्वच्छता तथा सेवा प्रदान करने में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हैं।

ये अवार्ड सीबीएसई से संबद्ध सभी विद्यालयों के लिए हैं जिसमें केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, सरकारी विद्यालय, प्राइवेट स्वतंत्र विद्यालय, डीएवी विद्यालय, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, आर्मी स्कूल शामिल हैं।

अवार्ड निम्नलिखित श्रेणियों में दिए जाएगें जिसमें विद्यालय हैल्थ एवं वेलनेस क्लब तथा इको क्लब के रूप में भाग ले सकते हैं।

- छात्र एवं समाज संघटन के माध्यम से व्यावहारिक बदलाव की ओर ले जाने के लिए जागरूकता उत्पत्ति
- तकनीकी नवाचार एवं मध्यस्थता
- बालिकाओं के लिए स्वच्छता सुविधाओं में सुधार
- सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले हैल्थ एवं वेलनेस क्लब
- प्रयासों की संधारणीयता
- अपशिष्ट प्रबंधन एवं निपटान
- जल सरंक्षण एवं अपजल पुनर्चक्रण तथा उसका उपयोग
- हरित स्थलों का संरक्षण
- लोक निजी साझेदारी

p;u d fy, i jkeh Vj

1- संधारणीयता– दीर्घकालीन स्वास्थ्यकारिता एवं सुरक्षित स्वच्छता की दिशा में सफलता का प्रदर्शन।
2- प्रत्युतरता– व्यवहार एवं प्रतिमानों के प्रत्युत्तर के लिए संभाव्यता जो उत्तम सेवा प्रदान करने में परिणामी होते हैं।
3- सुरक्षित स्वास्थ्यकारिता व्यवहार
4- अपशिष्ट पृथककरण एवं अपशिष्ट प्रबंधन
5- जागरूकता उत्पत्ति प्रयास तथा संघात व्यावहारिक बदलाव की ओर
6- जल एवं स्वच्छता –सेवा प्रदान करने में वास्तविक सुधार
7- जल प्रबंधन की दिशा में प्रयास
8- नवाचारः विचारों प्रौधोगिकी तथा संसाधानों के प्रयोग में प्रदर्शित नवाचार अद्वितीयता तथा मौलिकता
9- गतिकताः वेबसाइट – www.schoolsanitation.com के माध्यम से समय समय पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता द्वारा अर्जित गतिविधि अंक

jpukr= ,o ifØ;k

- अवार्डों की निर्णय करने के लिए एम ओ यू डी, सीबीएसई तथा जीटीजैड ने एक सलाहकार समूह का गठन किया है।
- आरंभिक संवीक्षा समिति द्वारा की जाएगी और तब अंतिम सौ प्रविष्टियां विवेचनात्मक जांच के लिए प्रस्तुत की जाएगी तथा अवार्ड के लिए अंतिम चयन सलाहकार समूह द्वारा किया जाएगा।

अवार्ड उत्कृष्टता प्रमाण पत्रों, स्मृति चिह्न प्रशस्ति, विद्यालय स्वच्छता विनिमय कार्यक्रमों में सहभागिता, विद्यालयों के साथ शून्य अपशिष्ट पैदा करने वाली अवधारणों के बारे में मार्गदर्शी परियोजनाओं का संयुक्त विकास के रूप में होगें और उत्कृष्ट हैल्थ एवं वेलनेस क्लब के साथ सहयोजित छात्रों, शिक्षकों तथा प्रधानाचार्यो को विशेष प्रमाण–पत्र भी दिए जाएगें।

आपसे अनुरोध है कि सभी में सूचना का प्रसार किया जाए और राष्ट्रीय महत्व के इस अभिक्रम में भाग लें।

आपसे यह भी अनुरोध है कि सीडी–रोम जो नोडल अधिकारी, 'नेशनल अर्बन स्कूल सैनिटेशन अवार्ड 2009' को संबोधित हो, सीबीएसई, शिक्षा सदन, चौथी मंजिल कमरा न. 404 को कोरियर द्वारा भेजें। किसी भी परिस्थिति में परियोजना अथवा मॉडल सीबीएसई अथवा जीटीजैड कार्यालय को नहीं भेजा जाना चाहिए। नेशनल इनिशिटिव ऑन स्कूल सेनिटेशन के बारे में अधिक जानकारी के लिए www.schoolsanitation.com देखें और आगे पूछताछ के लिए शैक्षणिक शाखा सीबीएसई से टेलीफोन सं011–23234324 (डा0 स्नेहा सिहं/सैयद शनेय आलम) से सम्पर्क करें।

भवदीय

(डा0 साधना पराशर)

शिक्षा अधिकारी (भा0)

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग,नई दिल्ली –110016
02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सभी सहायक आयुक्त, क्षेत्रीय कार्यालय, केवीएस।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारी।
10. सीबीएसई के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) सीबीएसई
12. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
13. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
14. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
15. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
12. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक

शिक्षा अधिकारी (भाषा)

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM

शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार, दिल्ली–110092

सीबीएसई / शैक्ष0 / परि / 2009 दिनांकः 10.07.2009
परिपत्र स0:23

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

fo"k;% ^dku cuxk i;koj.k ,Ecl Mj*

प्रिय प्रधानाचार्य,

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने पर्यावरण मामलों के बारे लोक जागरूकता को प्रोन्नत करने के दृष्टिकोण से द सैंटर फॉर एनवायरनमेंट एडुकेशन (सीईई) के साथ साझेदारी में कौन बनेगा भारत का पर्यावरण एमबेसडर (केबीपीए) विषयक अभियान आरंभ किया है। अभियान का उद्‌घाटन भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने जुलाई 5, 2008 को किया था।

केबीपीए एक देशव्यापी अभियान है जिसका अभिप्राय आम जनता विशेषतया देश में लगभग 2 लाख विद्यालयों से बच्चों तथा विद्यार्थियों के मत को संचारित करना है। ऐसा एक एम्बेसडर का चयन/नामित करने के लिए किया जाएगा जिससे पर्यावरण आंदोलन का समर्थन करने तथा उसे बढ़ावा देने की आशा की जाएगी।

अभियान का उद्देश्य स्कूली बच्चों के लिए जलवायु परिर्वतन उच्च उपभोग जीवनशैली उपागम के कारण और प्रभाव के बारे में जागरूकता तथा संवेदनशीलता बढ़ाना है विशेष रूप से बृहत संधारणीयता तथा विकास के लिए जीवन शैली उपागमों में सर्वोत्तम विकल्प तथा पसंद का चुनाव करने के लिए।

कार्य आधारित शिक्षा कार्यक्रम का विकास करने के लिए अभियान एक पहल है जो इस मिश्रित ओर बहुआयामी अवधारणा की आसान शब्दों में व्याख्या करने के बारे में और विद्यालय जाने वाले छोटे बच्चों (और सामान्य रूप से जनता) के लिए आचरण समझना आसान बनाने पर फोकस करता है।

अभियान पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक पहल है। इसे पर्यावरण शिक्षा केंद्र (सीईई) द्वारा आगे बढ़ाया तथा लागू किया जा रहा है।

foLrr mÌs'; :

अभियान के प्रमुख उद्देश्य हैं –

- अभियान में विद्यालयों की सहभागिता बढाना और इस कार्यक्रम के द्वारा प्रत्येक विद्यालय में 10 युवा सी सी चैम्पियन (समान लड़के व लड़कियां) बनाने के लिए प्रक्रिया आरंभ करना।
- पर्यावरण एम्बेसडर का चयन करने में यथासंभव अधिक से अधिक छात्रों को शामिल करना (2 लाख विद्यालयों के माध्यम से)।
- एम ओ ई एफ नेशनल ग्रीन कोर्स विद्यालय में संयोजन तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति छोटे संधारणीय विचारों को आगे लाते और शामिल करते हुए विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक और कार्य आधारित कार्यकलाप आरंभ करना।

- जलवायु परिर्वतन शिक्षा तथा जीवनशैली उपभोग प्रतिमान के समर्थन हेतु बच्चों को सज्जित करना।

पर्यावरण एम्बेसडर अभियान की परिकल्पना की गई थी जब पर्यावरण एवं वन मंत्रालय एमओईएफ ने एक सिलेब्रिटी/ब्रांड एम्बेसडर की आवश्यकता प्रकट की जो पर्यावरणीय संरक्षण/कार्य को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम के हिस्से के रूप में एमओईएफ द्वारा उठाए गए कदमों तथा संदेश का समर्थन कर सके। इसको ध्यान में रखते हुए जलवायु परिर्वतन शिक्षा पहल से संबंधित अभियान की संकल्पना की गई थी।

कार्बन अर्थव्यवस्था का ध्यान आकर्शित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) चयनित विषय वस्तु पर आधारित अभियान वर्ष 2008 में आरंभ किया गया था । अंग्रेजी में विषय वस्तु थी 'Co_2 किक द हैविटः टुवार्डस ए लॉ कार्बन इकानोमी'

अभियान के पहले चरण (2009–2013) में यूथ क्लाइमेट चेन्ज चैम्पियन्स(वाई सी सी बी) के रूप में एमबेसडर विद्यालय छात्रों के चयन के बारे में विचार विमर्श आरंभ करेगा।

- विचार चयनित छात्रों को क्लाइमेट चेंज लीडर्स में बदल देगा जो विश्वस्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।
- चयनित छात्रों को प्रशिक्षित किया जाएगा और अग्रणी नीतियों पर पर्यावरणीय परियोजनाओं पर कार्य करेंगें।

अधिक जानकारी के लिए www.ceeindia.org पर लॉग ऑन करें। अभियान विवरण के लिए कृपया सीईईः 079.26858003ध्04ध्05 पर सम्पर्क करें। (prarthria.borah, cceindia.org; prabhjot.sodhi@ceeindia.org; kartikeya.sorabhai@ ceeindia.org)

भवदीय

(डा साधना पराशर)

अध्यक्ष की शिक्षा अधिकारी

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।

09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षणिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

अध्यक्ष की शिक्षा अधिकारी

dUnh; ek/;fed f'k{kk cksMZ

शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई / शैक्ष0 / विद्यालय में हिंसा / 2009 — दिनांकः 14.07.2009

परिपत्र स0:24

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

fo"k;% lhch,lbl d lc) fo|ky;k e Çglk vkj jÇxx

प्रिय प्रधानाचार्य,

यह देखा गया है कि रेगिंग ने विद्यालयों में अपना घृणित सिर उठाया है और प्रतिष्ठित संस्थाओं में हाल की हिंसा शोक एवं चिंता का विषय है। किसी छात्र के साथ अशिष्टता से पेश आना अथवा बर्ताव करना अथवा छेड़छाड़ की कार्रवाई करना अथवा शब्दों से अथवा बोलकर अथवा लिखित में उत्पाती आचरण करना ही रेगिंग है। इसमें उपद्रवी अथवा अनुशासनहीनता के कार्यकलापों में आसक्त होना शामिल है जो किसी भी छात्र में भय, डर अथवा मानसिक क्षति अथवा खीज का कारण बन सकता है अथवा कोई ऐसा कृत्य करना अथवा कुछ ऐसे निष्पादन करना जो एक विद्यार्थी एक सामान्य स्थिति में नहीं करेगा और दूसरे छात्र द्वारा किसी छात्र के मन अथवा शरीर को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करना अथवा खीज अथवा नुकसान का कारण बनना।

रेगिंग मानसिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा शैक्षिक आयामों जैसे अनेक पहलुओं में व्यक्त की जाती है। ऊपर दर्शाए गए किसी भी घटक के लिए संबंध का अनुचित लाभ उठाना जो वरिष्ठ तथा कनिष्ठ छात्रों के बीच एक अंतर्निहित सत्ता संरचना है, रेगिंग के तहत आता है। शब्दों द्वारा, सार्वजनिक पहचान, ई मेल द्वारा दुर्व्यवहार अथवा कार्य को रेगिंग के मनोवैज्ञानिक पहलूओं में से एक माना जाता है। किसी छात्र के कोई भी कार्य शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक–स्वास्थ्य, आत्मविश्वास अथवा आत्म सम्मान को ठेस पहुचांए उसे रेगिंग के एक पहलु के रूप में श्रेणीकृत किया जा सकता है।

विद्यालयों में प्रायः शारीरिक एवं यौन शोषण की घटनाएं होती रहती हैं जिन्हें दबा दिया जाता है और यहां तक कि अभिभावकों को भी नहीं बताया जाता है क्योंकि उससे संस्थान की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है। यह एक खतरनाक प्रवृति है और तत्काल रोकने की आवश्यकता है। एक बार इन छात्रों को अनियंत्रित छोड़ दिया जाता है तो वे समाज के लिए महामारी बन जाएंगे। इसलिए यह आवयश्क है कि दुर्व्यवहार अथवा धमकाने का कोई कार्य यद्यपि छोटा हो किंतु उसकी अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए । इसके अतिरिक्त ऐसी घटना के बाद पीडित के मन पर पडने वाला सदमा कम नहीं किया सकता क्योंकि इससे अपूर्णीय क्षति हो सकती है।

रेगिंग के किसी भी अवांछनीय पहलू के निवारण के लिए और उसको रोकने का दायित्व संयुक्त तथा व्यक्तिगत रूप स्टेकहोल्डर पर होता है जिसमें संस्थानों के प्रमुख, अध्यापक, गैर अध्यापन स्टाफ, छात्र, अभिभावक तथा स्थानीय समुदाय शामिल है। प्रत्येक संबंधित द्वारा ठोस प्रयास समय की मांग है।

एक विद्यालय का वातावरण एवं परिवेश अनुकूल एवं स्नेही होना चाहिए जहां अधिगम अर्थपूर्ण हो और छात्र अपने आप को बौद्धिक, सामाजिक, प्रत्यक्ष तथा सांस्कृतिक लक्ष्यों में लगा सकें ।

D;k djus dh vko';drk gS\

- शिक्षा संस्थानों में रेगिंग रोकने के लिए सुझाव देने हेतु भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित jk?kou lfefr के रूप में ज्ञात एक समिति ने भी विद्यालय में प्रत्येक छात्र के लिए नियमित एवं नियतकालिक मनोवैज्ञानिक परामर्श सत्रों के लिए मजबूत केस बनाया है।
- शिक्षा प्राप्ति के प्रत्येक स्तर ikFkfed] mPp ikFkfed rFkk ek/;fed@ofj"B स्तर पर एक विद्यालय में पूर्णकालिक परामर्शदाता होना चाहिए। माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक शैक्षिक सत्र में प्रत्येक छात्र को कम से कम मनोवैज्ञानिक परामर्श के 20 सत्र उपलब्ध कराने चाहिए। ऐसे सत्रों में अभिभावको तथा शिक्षकों को भी शामिल किया जा सकता है।
- विद्यालयों द्वारा पहले से संघटित gYFk ,oa lqj{kk Dyc को किसी भी रूप में हिंसा पर काबू पाने के लिए निवारक उपायों को बढावा देने हेतु सतत जागरूक बनाए रखने के लिए मानीटरन प्रकोष्ठ के रूप में कार्य करना चाहिए।
- जीवन कैशल, व्यापक स्कूल स्वास्थ्य तथा किशोरावस्था शिक्षा जिसमें मूल्य प्रणाली, मानव अधिकार, लैंगिक संवेदनशीलता, आत्म सम्मान अंतर वैयक्तिक सम्प्रेषण , तनाव का सामना करना, गुस्से पर नियंत्रण करना, आवेगों का सामना करना, तदनुभूति तथा समकक्षों के दवाब का निवारण करना आदि निहित है जिनके बारे में कार्यकलाप पीरीयडों में कार्रवाई करने की आवश्यकता है। ये भूमिका निभाने, गली थियेटर (नुक्कड़ नाटक), समूह चर्चा, वादविवाद इत्यादि का रूप ले सकतें है।
- विद्यालयों में कैंटीन, खेल के मैदानों, कॉरीडोर, बाथरूम तथा स्नानागारों जैसे अतिसंवेदी क्षेत्रों की निर्देशित करने तथा जागरूकता पैदा करने के लिए अभिजात शिक्षकों तथा अभिजात परामर्शकों को सशक्त बनाने की आवश्यकता है। किसी भी अप्रिय घटना की तत्काल रिपोर्ट करनी चाहिए।
- सभी विद्यालयों में परामर्शकों को तथा बोर्डिंग एवं आवासीय विद्यालयों में वार्डन को छात्र अंतःक्रिया की बदलती गतिकी को सुग्राही बनाने की आवश्यकता है। वे तदानुभूतिशील तथा मिलनसार होने चाहिए ताकि छात्र उन पर विश्वास कर सकें। छात्रों द्वारा एक साथ अधिक समय बिताने के कारण आवासीय विद्यालयों के मामले में ऐसी घटनाएं घटने की अधिक संभावना होती है।
- अभिभावक शिक्षक बैठकों में अभिभावकों की भूमिका अन्य विद्यालय समितियों में प्रतिनिधित्व और हैल्थ क्लब कार्यक्रमों में सह भागिता को सुदृढ करना चाहिए। यदि किसी अभिभावक को किसी भी भयभीत करने वाले कार्य चाहे वह छोटा हो के बारे में जानकारी देने की आवश्यकता है, संगठन के प्रधान को तत्काल कार्यवाही करनी चाहिए और अभिभावकों को उसकी सूचना देनी चाहिए।
- शारीरिक अथवा यौन उत्पीडन सहित हिंसा, सताने अथवा रेगिंग का कोई भी कृत्य बिना कार्रवाई किए अथवा बिना सजा के नहीं छोड़ा जाएगा को विवरणिका तथा विद्यालय द्वारा जारी अन्य दिशा–निर्देशों में स्पष्ट रूप से उल्लेख करने की आवश्यकता है। रेगिंग अथवा भयभीत करने के किसी भी कार्य में पकड़े गए छात्र को दी जाने वाली सजा का स्पष्ट वर्णन करना चाहिए । अभिभावकों तथा छात्रों का संभावित सजा की सीमा के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है।
- पीड़ित की पहचान को जोखिम में डाले बिना रेगिंग करने वाले के विरूद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। पीड़ित को परामर्श की आवश्यकता होती है जो किसी अभिजात शिक्षक अथवा परामर्शक द्वारा दी जा सकती है।

- प्रदान की जाने वाली सजा कार्य की गंभीरता के अनुरूप होनी चाहिए। यह कक्षा उपस्थिति में निलम्बन से लेकर सामूहिक अपराधियों के मामले में सामूहिक तथा भारी जुर्माना और बहिष्कार अथवा निष्कासन की सीमा तक भिन्न हो सकती है।
- जीवन कौशल सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्ड में प्रतिबिंबित होता है। आक्रामक व्यवहार के किसी भी रूप को व्यावहारिक संबध में दर्ज किया जाना चाहिए।

कोई विद्यालय उपर्युक्त निर्देशकों में से किसी का भी दोषी पाया जाता है तो उसे सख्त दण्ड दिया जाएगा और उसके विरूद्ध संबद्धता समाप्त करने की सीमा तक कठोर कार्रवाई की जा सकती है। ऐसे मामलों में संगठन के मुखिया को उत्तरदायी ठहराया जाएगा। इसे सभी छात्रों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के ध्यान में लाया जाए।

भवदीय,

विनीत जोशी

अध्यक्ष एवं सचिव

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषितः–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षणिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

v/;{k ,oa lfpo

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई/ई कॉम/एके/2009 दिनांकः 14.07.2009
परिपत्र स0: 25/9

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

विषयः बोर्ड परीक्षा 2010 के लिए, कक्षा 12वीं के लेखाविधि पाठ्यक्रम में परिवर्तन

प्रिय प्रधानाचार्य जी,

अध्यापकों से प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के आधार पर बोर्ड ने वर्ष 2010 की बोर्ड परीक्षा के लिए लेखाविधि पाठ्यक्रम में निम्नलिखित परिर्वतन करने का निर्णय लिया है–

पाठयक्रम की ईकाई 4 से निम्नलिखित उपविषयों को हटाया जाएगा–

क. ऋणपत्रों की छूट/ बटटे पर जारी करना

ख. ऋणपत्रों के निर्गम पर छूट/ बट्टे को रद्द करना

ग. ऋणपत्रों की क्षतिपूर्ति की विधियों के रूप में एक ऋणनिधि।

कृपया इस परिर्वतन को संबंधित शिक्षकों तथा छात्रों के ध्यान में लाया जाए। बोर्ड की परीक्षा 2010 के परिशोधित नमूना प्रश्न पत्र बोर्ड की वेबसाइट www.cbse.nic.in पर डाल दिए गए है। उनकी मुद्रित प्रतियां शीघ्र ही बोर्ड के प्रकाशन स्टोर में उपलब्ध होंगी।

भवदीय,

(सी गुरूमूर्ति)

निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016

02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, दिल्ली –110048

03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15 सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
18. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई
19. अनुभाग अधिकारी (लेखा), शिक्षा सदन सीबीएसई।

निदेशक (शैक्षणिक)

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM

शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई/ई ओ–एल/पंजाबी बीकेआरडब्ल्यू/2009 दिनांक: 10.07.2009

परिपत्र स0: 26

सीबीएसई से संबद्ध स्वतंत्र
विद्यालयों (पंजाबी पढ़ाने वाले) के प्रमुख

fo"k;% i:tkch ikB¸kØe lkfgrd ofx;ku d{kk **10**oh e: Mk-nyhi dkj fVokuk }kjk fyf[kr dgkuh *mg lkpnh* dk gVkukA

प्रिय प्रधानाचार्य,

यह आपके ध्यान में लाया जाता है कि कक्षा 10वीं के लिए निर्धारित पंजाबी पाठ्यक्रम साहितक वंगियान में डा.दलीप कौर टिवाना द्वारा लिखित कहानी 'उह सोचदी' को सत्र 2009–10 से हटाया जाता है और 2010 की परीक्षा में इस कहानी से कोई प्रश्न नही पूछा जाएगा।

भवदीय

(ए एच अहमद)
सहायक शिक्षा अधिकारी

वितरण :–

01. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
02. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
03. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
04. अपर महानिदेशक, सेना शिक्षा महानिदेशालय, ए–विंग, सेना भवन, डीएचक्यू–पीओ, नई दिल्ली।
05. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
06. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
07. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
08. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
09. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।

10. सीबीएसई के सभी विभागाध्यक्ष
11. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
12. सचिव, सीबीएसई के डेस्क अधिकारी
13. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारी।
14. सीबीएसई के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
15. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ

lgk;d f'k{kk vf/kdkjh

d`Unh; ek/;fed f'k{kk cksM
^^f'k{kk lnu** 17] jkmt ,osU;
ubZ fnYyh &110002

सं. ईओ(काम.)/एके./2009/ 					दिनांक 22 जुलाई, 2009
परिपत्र संख्याः 27

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थाओं के प्रमुख

विषय :– fo|ky;k esa cukoVh ¼ekWd½ vH;kl

प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), भारत सरकार, भारत में आपदा प्रबंधन के बारे में शीर्ष निकाय आपदा प्रबंधन नीति तैयार करने, विभिन्न प्रकार के आपदाओं के बारे में दिशा–निर्देश जारी करने और प्राकृतिक तथा कत्रिम आपदाओं के निवारक उपाय करने के लिए उत्तरदायी है।

विद्यालयों में तत्परता की संस्कृति को मन में बैठाने एवं आपदा प्रबंधन ढांचे को संस्थागत करने में उनकी क्षमता का निर्माण करने में उनकी सहायता करने के उद्देश्य से एनडीएमए ने विद्यालयों में प्राकृतिक एवं मानव प्रेरित आपदाओं के बारे में निःशुल्क बनावटी अभ्यास आयोजित करने के लिए पहल की है।

विद्यालयों में दो चरणों में बनावटी अभ्यास आयोजित किए जाते हैं। चरण एक में, विद्यालय आपदा प्रबंधन ढांचा संघटित करने और बनावटी अभ्यास आयोजित करने की प्रक्रिया की रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है। चरण दो में, बनावटी अभ्यास वास्तविक रूप में आयोजित किया जाता है जिसमें छात्र, शिक्षक, गैर शिक्षण स्टाफ के साथ भाग लेते हैं। चरण दो के अंत में एक व्यापक जांच पड़ताल सत्र के दौरान अंतरालों की पहचान की जाती है और अनुवर्ती कार्रवाई की जाती है।

जो विद्यालय इस पहल को अपनाने के इच्छुक हैं, ब्रिगे0 (डा0) बी.के. खन्ना, वरिष्ठ विशेषज्ञ (प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास) एनडीएमए से bkkhanna2@gmail.com अथवा उनके मोबाइल सं0 09911297972 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

भवदीय

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
18. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई
19. अनुभाग अधिकारी (लेखा) शिक्षा सदन, सीबीएसई

fun'kd ¼'kf{k.kd½

d`Unh; ek/;fed f'k{kk ckM
^^f'k{kk lnu** 17] jkmt ,oU;q
ubZ fnYyh &110002

सं. सीबीएसई /निदे.(शै.)/परिपत्र/2009/ दिनांक 23 जुलाई, 2009

परिपत्र संख्याः 28

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थाओं के प्रमुख

विषय :– lkd.Mjh Lrj ij xf.kr iz;ksx'kkyk& ifjif"V grq fuosnu

प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

के.मा.शि.बोर्ड ने वर्ष 2004 में कक्षा 9 एवं 10 में गणित प्रयोगशाला की धारणा को इस विचार के साथ लागू किया था कि ये क्रियाकलाप बच्चे की अच्छी संकल्पना के लिए सहायक होंगे। व्यापक स्वीकार्यता एंव गणित प्रयोगशाला के आरंभ करने की सफलता के साथ बोर्ड ने कक्षा तीन से आठवीं तक एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों में दी गई अवधारणाओं पर आधारित कुछ क्रियाकलापों को सूचीबद्ध करते हुए इसे दिनांक 29.06.2006 के परिपत्र संख्या 14 द्वारा प्राइमरी एवं उच्च प्राइमरी कक्षाओं तक बढ़ा दिया ।

आगे कदम बढ़ाने से पहले, वर्तमान व्यवस्था के बारे में प्रतिपुष्टि प्राप्त करने का प्रस्ताव है। अतः आपसे अनुरोध है कि यह पत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अंदर निम्नलिखित सूचना संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय को उपलब्ध कराएं :–

01. आपके विद्यालय में कक्षा 9 एवं 10 में छात्रों द्वारा प्रतिवर्ष कितने प्रयोग किये जाते हैं?
02. इन प्रयोगों में से कितने नये हैं और कितने सीबीएसई क्रियाकलाप पुस्तिका में प्रस्तावित में से हैं ?
03. प्रत्येक नये प्रयोगों में किन कौशलों की परीक्षा की जा रही है ?
04 ये प्रयोग संकल्पनाओं की समझ में किस प्रकार सहायक हैं ?
05. शिक्षक गणित प्रयोगशाला क्रियाकलापों को कक्षा शिक्षण के साथ कैसे सहयोजित करते हैं ?
06. क्या शिक्षकों ने सैद्धान्तिक मूल्यांकन में गणित प्रयोगशाला क्रिया–कलापों का प्रयोग करने का प्रयास किया है ?

अपने स्तर पर कार्रवाई करते समय निर्धारित समय सीमा का पालन किया जाये ।

भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :–

01. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को अपने क्षेत्र में प्रतिपुष्टि की कार्रवाई शुरू करने तथा जल्द से जल्द उसकी रिपोर्ट अद्योहस्ताक्षरी को भेजने के अनुरोध के साथ ।
02. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
03. आयुक्त नवोदय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग,नई दिल्ली –110048
04. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
05. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
06. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
07. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
08. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
09. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
10. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
11. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
12. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
13. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
14. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
15. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
16. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
17. निदेशक (शैक्षणिक) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
19. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
20. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd ¼'k{kf.kd½

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई / ई ओ–कॉम / एके / 2009 दिनांक: 07-08-2009

परिपत्र स0: 29 / 9

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

fo"k;% d{kk 12oh ekp 2010 ijh{kk d fy, lekt'kk= e ifj'kkf/kr i'u i= r;kj djuk

प्रिय प्रधानाचार्य,

आपका ध्यान बोर्ड के दिनांक 15-04-2008 के परिपत्र सं 14 / 08 की ओर आकर्षित किया जाता है जिसके द्वारा कक्षा 12वीं के शैक्षणिक सत्र 2008–9 और कक्षा 12वी बोर्ड परीक्षा 2010 से कक्षा 11वीं और कक्षा 12वीं के लिए समाज शात्र में प्रयोगिक परियोजना कार्य लागू करने के बोर्ड के निर्णय के बारे में बताया गया था।

तदनुसार 80 अंक के बोर्ड के सिद्धांत प्रश्न पत्र का परिशोधित डिजाइन निम्नानुसार होगा–

प्रश्नों का रूप	प्रश्नें की संख्या	प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक	कुल अंक
दीर्घ उत्तर (एल ए)	4 (एक उद्धरण आधारित प्रश्न सहित)	6	24
लघु उत्तर (एस ए)	7	4	28
अति लघु उत्तर (वी एस ए)	14	2	28
कुल	25 प्रश्न		80

इस ओर भी ध्यान दिया जाए कि उदधरण आधारित प्रश्न एनसीईआरटी पाठ्यक्रम पुस्तक से लेना अनिवार्य नहीं है। पैराग्राफ किसी पत्रिका / समाचार पत्र से भी लिया जा सकता है किंतु यह बोर्ड के पाठ्यक्रम में निर्धारित विषय वस्तु / अंर्तवस्तु पर अनिवार्य रूप में आधारित होगा।

इसके अलावा उद्धरण आधारित प्रश्न एक नियत प्रश्न होगा जिसका कोई निर्धारित उतर नहीं होगा। अंर्तवस्तु तथा संदर्भ को समझने वाले छात्र आपने तार्किक तर्क के आधार पर ऐसे प्रश्नों का उतर दे सकते है।

2010 बोर्ड परीक्षा के लिए कक्षा 12वीं समाज शात्र में परिशोधित प्रश्न पत्रों को बोर्ड की वेबसाइट www.cbse.nic.in पर डाल दिया गया है।

कृपया इसे सभी संबंधितो के ध्यान में लाया जाए।

भवदीय,

(सी गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षिणक)

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18,इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
18. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd ¼'kf{k.kd½

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ

^^f'k{kk lnu 17] jkmt ,osU;w ubZ fnYyh &110002**

सं. ए ई ओ(डी आर)/उड़िया/2009 दिनांक 07-07-2009

परिपत्र संख्याः 30/09

सेवा में,

सीबीएसई से संबद्ध सभी विद्यालयों के प्रमुख ।

विषय :– <u>'k{kf.kd l= **2009&10** rFkk **2010&2011** ds fy, d{kk **9** ds mfM+;k ikB~;Øe dk mUUk;u</u>

प्रधानाचार्य महोदय/महोदया,

उड़ीसा राज्य बोर्ड द्वारा किये गये परिवर्तनों के साथ सामंजस्य में शैक्षणिक सत्र 2009–10 और 2010–11 से कक्षा 9 (हमारे पाठ्यक्रम दस्तावेज 2010 तथा 2011 को देखें) खण्ड –2 के अविस्तृत वर्ग के संबंध में उड़िया भाषा के निर्धारित पाठ्यक्रम में निम्नलिखित परिवर्तन किये गये हैं ।

शैक्षणिक सत्र 2009–10 तथा 2010–11 के लिए परिवर्तित पाठ्यक्रम का विवरण :–

	विद्यमान पाठ्यक्रम	परिवर्तित पाठ्यक्रम
1.	डाकमुन्शी – फकीर मोहन सेनापति	डाकमुन्शी –फकीर मोहन सेनापति
2.	बैली रजकशोर के	मनसारा बिलाया –कालिंदी चरण पानीगढ़ी
3.	अलीबुर्थि –बसन्त कुमार सत्यथी	दी टोपा लुहा–गोपीनाथ मोहन्ती
4.	होली – बमा चरण मित्रा	होली – बमा चरन मित्रा
5.	दूरा पहरा – परना बन्धु कर	सुना बोहु –अद्वैत चन्द्र मोहन्ती
6.	शो– विश्वजीत दास	पंचायत –गोपाल छोटराय

इसे सभी संबंधित छात्रों एंव शिक्षकों के ध्यान में लाया जाए ।

भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि निम्नलिखित विभागाध्यक्षों को इस अनुरोध के साथ प्रेषित है कि इसका प्रसार उनके अधिकार क्षेत्र के सभी विद्यालयों में किया जाए :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।

02. निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. शिक्षा निदेशक, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर –744101
05. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर –791111
07. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम) –737101
08. परीक्षा नियंत्रक,सीबीएसई
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी विद्यालयों के प्रमुख को कार्रवाई तथा अनुपालन हेतु भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सभी शिक्षा/सहायक शिक्षा अधिकारी ।
11. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी के सूचनार्थ ।
12. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक के सूचनार्थ ।
13. परीक्षा नियंत्रक, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक के सूचनार्थ ।
14. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक के सूचनार्थ ।
15. विभागाध्यक्ष (एजूसेट) के वैयक्तिक सहायक के सूचनार्थ ।
16. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन, ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र, सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली –110085 ।
17. अपर महानिदेशक, सेना शिक्षा महानिदेशक, विंग सेना भवन, डी.एच.क्यू. पी ओ. नई दिल्ली ।
18. उप–निदेशक शिक्षा, सीमा सुरक्षा बल, ब्लॉक 10, सी जी ओ काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली –110003
19. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी), सीबीएसई, को परिपत्र वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ ।
20. सचिव, ए.डब्लू.ई.एस. सेना मुख्यालय, जनरल ब्रांच के समीप सी. डब्लू –4, आर्मी वेलफयर एजूकेशनल सोसाइटी, वेस्ट ब्लाक –3, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110022
21. जन संपर्क अधिकारी, सीबीएसई, दिल्ली ।

fun'kd¼'kf{kd½

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
^^f'k{kk lnu** **17**] jkmt ,osU;w
ubZ fnYyh &**110002**

सं. केमाशिबो / शि.अधि.(एसडी) / परिपत्र / 2009 दिनांक 18-08-2009

परिपत्र संख्याः 31 / 09

सेवा में,

सीबीएसई से संबद्ध सभी संस्थाओं
के प्रमुख ।

विषय :– lhch,lbZ dh u;h iqfLrdk'ku dh lwpuk esa A

महोदय / महोदया,

क्रिया–कलाप आधारित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को कक्षा में प्रोत्साहित करते हुये शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के हमारे सतत प्रयासों के क्रम में सीबीएसई ने विज्ञान और गणित में क्रिया कलाप पुस्तकों का विकास किया है । कक्षा–8 के लिए विज्ञान की क्रियाकलाप पुस्तक में एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक में दी गई संकल्पनाओं पर आधारित विभिन्न क्रियाकलाप दिए गये है जिससे संकल्पनाओं को अच्छी प्रकार समझने में छात्रों को सहायता मिलेगी । यह पुस्तक सीबीएसई द्वारा गत वर्षो में विकसित कक्षा 6 और 7 के विज्ञान की क्रियाकलाप पुस्तकों के अनुक्रम में है ।

गणित की क्रियाकलाप पुस्तक कक्षा 3 से 8 तक की एनसीईआरटी पुस्तकों में दी गई संकल्पनाओं पर आधारित है। ये क्रियाकलाप यदि मन लगा कर किये जाते हैं तो इससे छात्रों की मूल गणितीय संकल्पनाओं को अच्छी तरह समझने में और उनके दिमाग से डर दूर करने में सहायता मिलेगी।

ये दस्तावेज़ समूल्य दस्तावेज़ हैं और पूरे देश में सीबीएसई प्रकाशन स्टोरों में उपलब्ध हैं ।

भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :–

1. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-16
2. आयुक्त , नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
3. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054

4. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
5. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम) –737101
6. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
7. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
8. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
9. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी /सहायक शिक्षा अधिकारी ।
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) सीबीएसई, वेबसाइट पर परिपत्र डालने के अनुरोध के साथ ।
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एजूसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd¼'kf{kd½

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM
^^f'k{kk lnu** **17**] jkmt ,oU;
ubZ fnYyh &1**10002**

सं. केमाशिबो/शि.अ.(एसडी)/परिपत्र/2009/ दिनांक 18-08-2009

परिपत्र संख्याः 32/09

सेवा में,

सीबीएसई से संबद्ध सभी संस्थाओं
के प्रमुख ।

विषय :– सीबीएसई के नये प्रकाशन के संबंध में ।

प्रिय महोदय/महोदया,

परीक्षा एक साधन है जो विद्यार्थियों के निष्पादन का निर्धारण करने में न केवल हमारी सहायता करती है बल्कि हमें अपने निष्पादन के बारे में प्रतिपुष्टि भी मिलती है और कक्षा में शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए नई कार्यनीति का विकास करने में भी हमारी सहायता करती है ।

इस प्रयास में सीबीएसई ने कक्षा–10, 2008 परीक्षा के गणित में विद्यार्थियों के निष्पादन विश्लेषण की एक अध्ययन रिपोर्ट विकसित की है । यह सामग्री निःशुल्क है तथा पूरे देश में सीबीएसई के प्रकाशन स्टोरों में उपलब्ध होने के अतिरिक्त सीबीएसई वेबसाईट www.cbse.nic.in पर भी उपलब्ध है ।

आपसे अनुरोध है कि इस सूचना की जानकारी सभी संबंधितों के ध्यान में लाई जाए ।

भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।
02. आयुक्त , नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम) –737101

06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) सीबीएसई, वेबसाइट पर परिपत्र डालने के अनुरोध के साथ ।
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एजूसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd'kf{kd

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckMZ
^^f'k{kk lnu** **17**] jkmt ,oU;w
ubZ fnYyh &**110002**

सं. केमाशिबो/ई.ओ.(एसडी)/परिपत्र/2009/ दिनांक 18-08-2009

परिपत्र संख्याः 33/09

सेवा में,

सीबीएसई से संबद्ध सभी संस्थाओं
के प्रमुख ।

विषय :– 2011 की बोर्ड परीक्षा के लिए उच्चतरमाध्यमिक स्तर पर ''सूचना विज्ञान प्राचलन पद्धतियॉ'' के पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या के अद्यतन के संबंध में ।

प्रिय प्रधानाचार्य,

सूचना प्रैद्योगिकी की प्रगति और मुक्त त्रोत सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी के साथ वर्ष 2011 और उससे आगे आयोजित होने वाली बोर्ड परीक्षाओं के लिए सीनियर सैकेण्डरी कक्षाओं में इन्फोर्मेटिक्स प्रैक्टिस का पाठ्यक्रम संशोधित किया गया था और पाठ्यचर्या 2011 दस्तावेज में पहले ही सम्मिलित किया जा चुका है । प्रभावी परिवर्तनों की विशिष्टताएं निम्नलिखित है :–

d{kk&**11**

यूनिट–1 : कम्प्यूटर प्रणाली एवं व्यापार अनुप्रयोग (कम्प्यूटर सिस्टम एण्ड बिजनेस एप्लिकेशन) हार्डवेयर संकल्पना एवं सॉफ्टवेयर संकल्पना के साथ कम्प्यूटर प्रणाली की प्रस्तावना ।

यूनिट–2 : विज्यूअल बेसिक के प्रयोग सहित आईडीई आधारित प्रोग्रामिंग के स्थान पर जावा के प्रयोग सहित आई डी ई आधारित प्रोग्रामिंग ।

यूनिट–3 : ओरेकल के प्रयोग सहित एसक्यूएल के स्थान पर माईएसक्यूएल के प्रयोग सहित एस क्यू एल के साथ रिलेशनल डाटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम ।

यूनिट– 4: उपर्युक्त उपकरणों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए पाठ्यचर्या में एक नई यूनिट आई टी एप्लिकेशन्स को जोड़ा गया है ।

d{kk&**12**

यूनिट –1 : बिजनेस कम्प्यूटिंग के स्थान पर नेटवर्किंग एवं ओपन स्टेन्र्ड ।

यूनिट–2 : विज्यूअल बेसिक के प्रयोग सहित आईडीई आधारित प्रोग्रामिंग के स्थान पर जावा के प्रयोग सहित आई डी ई आधारित प्रोग्रामिंग ।

यूनिट–3 : ओरेकल के प्रयोग सहित एसक्यूएल के स्थान पर माईएसक्यूएल के प्रयोग सहित एस क्यू एल के साथ रिलेशनल डाटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम ।

यूनिट–4 : एक नई यूनिट ''आई टी एप्लिकेशन्स'' ।

सीबीएसई इसके लिए अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन माह अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर 2009 में करेगा । यह भी ध्यान रहे कि कक्षा–11 के लिए नया पाठ्यक्रम शैक्षिक सत्र 2009–10 से लागू होगा ।

आपसे अनुरोध है कि परिवर्तनों की सूचना सभी संबंधितों के ध्यान में लाई जाए ।

भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।
02. आयुक्त , नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम) –737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी /सहायक शिक्षा अधिकारी ।
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) सीबीएसई, वेबसाइट पर परिपत्र डालने के अनुरोध के साथ ।
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एजूसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd ¼'kf{kd½

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई / सीएम / एके / 2009 दिनांकः 24-08-2009
परिपत्र स0 :34

बोर्ड से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

fo"k;% Ldwy okVj ikVZuy& ty f'k{kk ds ckjs esa f'k{kdksa ds fy, ,d vnHkqr lk/ku

प्रिय प्रधानाचार्य,

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने भिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में प्राकृतिक संसाधनों के सरंक्षण से संबधित संकल्पना को बड़ी संख्या में शामिल किया है। 8 वर्ष पहले बोर्ड ने विद्यालयों को bdks Dyc स्थापित करने की भी सलाह दी गई थी। इसके अलावा कक्षा 1 से 8 के लिए शिक्षक नियम पुस्तिका लागत 30 रूपये है तथा कक्षा 9वीं के लिए जिसकी लागत 40 रूपये है प्रकाशित की गई जो प्रकाशन स्टोर सीबीएसई शिक्षा सदन 17 राउज एवेन्यू इंस्टिट्यूशनल एरिया नई दिल्ली–110002

इन नियम पुस्तिकाओं में प्राकृतिक रूप से जल के संरक्षण से संबंधित कई गतिविधियां हैं–

<u>d{kk 1 ls 8 f'k{kd fu;e iqfLrdk dk;Zdyki&</u>

1. कक्षा 3ः कार्यकलाप 4 – जीवन के लिए जल
2. कक्षा 4ः कार्यकलाप 5 – सुरक्षित पीने का पानी
3. कक्षा 5ः कार्यकलाप 6 – प्रकृति में जल चक्र
4. कक्षा 6ः कार्यकलाप 2 – सौर उर्जा द्वारा जल शोधन

<u>d{kk 9oha f'k{kd fu;e iqfLrdk dk;Zdyki&</u>

<u>अध्याय 1</u>

कार्यकलाप 1ः वाष्पोत्सर्जन और जल चक्र

<u>अध्याय 5</u>

कार्यकलाप 1ः जल संरक्षण

जल हमारे अत्यधिक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों में से एक संपोशणीय तथा बढ़ोतरी के लिए निर्णायक है। जल कुप्रबंधन आज एक प्रमुख चिंता है और हमारे युवाओं में बढ़ती जल चेतना का महत्व और मूल्यों को बढ़ा चढ़ाकर नहीं कहा जा सकता, विशेषकर जल संसाधनों का घटना, जल स्रोतों का प्रदूषण, पारम्परिक जल संचयन संरचना की उपेक्षा, बडे बांधों इत्यादि के मानवीय तथा पर्यावरणीय प्रभाव। यद्यपि अंतर्वस्तु के रूप में जल का, पाठ्यचर्या में प्रायः सभी विषयों में विस्तार है, बहुत से शिक्षक महसूस करते हैं कि इन अवधारणाओं को उनके आचरण प्रतिमानों और जीवनशैली में अंतरित करना लगातार एक चुनौती बनी हुई है।

क्या जल शिक्षा को आमोद–प्रमोद बनाया जा सकता है? विद्यालय जल पोर्टेल http://school.indiawaterportal.org निश्चित रूप से ऐसा सोचता है । राष्ट्रीय ज्ञान आयोजन (एनकेसी) तथा अर्ध्याय एक लाभ निरपेक्ष ट्रस्ट ने युवा पीढ़ी को जल क्षेत्र की समस्याओं के ज्ञान, उनके कारण तथा व्यावहारिक समाधानों से सज्जित करने के लिए इस राष्ट्रीय वेब पोर्टेल का सर्जन किया है । jk"Vªh; Kku vk;ksx ने शिक्षकों, छात्रों, विद्यालय प्रबंधन तथा माता–पिता के बीच जल के बारे में अधिगम साधनों को बांटने के लिए एक उत्कृष्ट मुक्त वेब आधारित प्लेटफार्म स्कूल वाटर पोर्टेल का सर्जन किया है ।

शिक्षा व्यक्तियों के चितंन को पुनः अनुकूल करने और अभिमुख करने का एक शक्तिशाली साधन है। बोर्ड का दृढ़ विश्वास है कि उसे प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित चुनौतियों और समस्याओं के बारे में न केवल जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है बल्कि विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में वांछित नैतिकता और मूल्य मन में बैठाना है।
इस सूचना को सभी शिक्षकों छात्रों तथा अभिभावकों के ध्यान में लाया जाए ताकि यह छात्रों में जल के महत्व को प्रबलीकरण और जागरूकता सर्जित करने में सहायता कर सके।

भवदीय
विनीत जोशी
अध्यक्ष

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016

02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048

03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054

04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017

05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101

06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111

07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101

08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र, सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।

09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।

10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी

11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ

12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी

13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी

14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक

15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक

16. निदेशक (शैक्षणिक) के वैयक्तिक सहायक

17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक

18. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक

19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

v/;{k

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM
^^f'k{kk lnu** **17**] jkmt ,oU;
ubl fnYyh &1**10002**

सं. केमाशिबो / शि.अधि.(एसडी) / गणित ओलि. / 2009 दिनांक 25-08-2009

परिपत्र संख्याः 35 / 09

सेवा में,

सीबीएसई से संबद्ध सभी संस्थाओं
के प्रमुख ।

विषय :– lhch,lbl x.i eFkefVDl vkyfEi;kM] **2009** dk vk;ktu A

प्रधानाचार्य महोदय / महोदया,

उपर्युक्त उल्लिखित विषय के संबंध में हमारे परिपत्र संख्या - 20 दिनांक 23 जून, 2009 के क्रम में आपको सूचित किया जाता है कि आयोजकों से प्राप्त सूचना के अनुसार इस वर्ष की कथित प्रतियोगिता रविवार, 22 नवम्बर, 2009 के स्थान पर jfookj] **29** uoEcj] **2009** को आयोजित की जाएगी ।

इस प्रतियोगिता का समय और स्थान वही रहेगा जो परिपत्र संख्या–20 दिनांक 23 जून, 2009 के साथ संलग्न फोल्डर में दिया गया है ।

इस संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए निवेदन नीचे दिए गए पते पर भेजा जा सकता है :

MkO l'tkrk nkl
f'k{kk vf/kdkjh ¼,l Mh½
dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM]
f'k{kk lnu] **17** jkmt ,oU;]
ubl fnYyh&**110002**
nijHkk'k& **011**&**23237779** ¼dk;ky;½

धन्यवाद,
भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :–

01 आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।

02. आयुक्त , नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048

03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम) –737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) सीबीएसई, वेबसाइट पर परिपत्र डालने के अनुरोध के साथ ।
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एजूसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd½'kf{kd½

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
^^f'k{kk lnu** **17**] jkmt ,osU;w
ubZ fnYyh &1**10002**

सं. केमाशिबो / शि.अ.(एसडी) / आर एम ओ / 2009 / दिनांकः सितम्बर 2009

परिपत्र संख्याः 36 / 09

सेवा में,

सीबीएसई से संबद्ध सभी संस्थाओं
के प्रमुख ।

fo"k; %& foKku esa iz;ksxkRed dkS'ky dk ewY;kadu ls lacaf/krA

प्राधानाचार्य महोदय / महोदया

वर्ष 2010 की बोर्ड परीक्षा के लिए कक्षा IX तथा X के विज्ञान के संशोधित प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम के अनुसार सीबीएसई ने हाल ही में "कक्षा X के लिए विज्ञान में प्रयोगात्मक कौशल का मूल्यांकन दस्तावेज को संशोधित किया है । दस्तावेज सीबीएसई वेबसाइट पर उपलब्ध है । मुद्रित प्रतियां सीबीएसई स्टोर में जल्द ही उपलब्ध करा दी जायेंगी।

यह सूचना सभी संबंधित व्यक्तियों के ध्यान में लायी जाये।

भवदीया,

(चित्रलेखा गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।
02. आयुक्त , नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम) –737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन, ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र

सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।

09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) सीबीएसई, वेबसाइट पर परिपत्र डालने के अनुरोध के साथ ।
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एजूसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

fun'kd¼'kf{kd½

dsUnzh; ek/;fed f'k{kk cksMZ
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई/एके/ईओ/पेंटिंग/2009 दिनांकः 10-09-2009

परिपत्र स0ः 37

सीबीएसई से संबद्ध
सभी संस्थानों के प्रमुख

fo"k;% mtkZ laj{k.k 2009 ij isafVax izfr;ksfxrk& ÅtkZ n{krk C;wjks] fo|qr ea=ky; Hkkjr ljdkj }kjk vk;ksftr

प्रिय प्रधानाचार्य,

ऊर्जा सरंक्षण की भावना को प्रोत्साहित तथा विकसित करने के लिए ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, विद्युत मंत्रालय भारत सरकार ने बच्चों को सम्मिलित करके एक राष्ट्रीय जागरूकता अभियान की शुरूआत की है। इसका उद्देश्य ऊर्जा संरक्षण मुद्दों के प्रति बच्चों को सुग्राही करना है। अभियान के मुख्य कार्यकलापों में एक विद्यालयी छात्रों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता है।

प्रतियोगिता तीन स्तर पर आयोजित की जाती है– विद्यालय, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर चार, पांच व छठी कक्षा के विद्यार्थी इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पात्र हैं।

रू 33000/– नकद ईनाम प्रति राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र (35 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए 11.55 लाख रूपये) 14 नवम्बर 2009 को राज्य स्तर के विजेताओं में वितरित किए जाएंगे। राष्ट्रीय प्रतियोगिता के विजेताओं के लिए विद्युत मंत्रालय द्वारा 7 लाख रू. के नकद पुरस्कार 14 नवम्बर 2009 को प्रदान करने का प्रस्ताव है जिसे भारत सरकार के उच्च पदाधिकारियों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

आपसे अनुरोध है कि अपने विद्यालय में चौथी, पांचवी तथा छठी कक्षा के छात्रों के लिए 30 सितम्बर, 2009 तक किसी भी कार्य दिवस को 2 घंटे की अवधि की एक पेंटिंग प्रतियोगिता के लिए निम्नलिखित में से कोई एक विषय चुन सकते हैं–

- बिजली बचाओ पैसा बचाओ
- अधिक घरों को ऊर्जावान करने लिए बिजली बचाओ
- ईंधन बचाओ पर्यावरण बचाओ

पेंटिंग प्रतियोगिता पूरी होने के बाद प्रधानाचार्य दो सर्वेत्तम पेंटेग का चयन करें और प्रतिभागियों की कुल संख्या की सूचना के साथ इन्हें 17 अक्टूबर 2009 से पहले नोडल अधिकारी के पते पर भेजें। पेंटिंग के पिछले पृष्ठ पर निम्नलिखित सूचना दी जानी चाहिए–

क. छात्र का नाम
ख. पिता/माता का नाम
ग. कक्षा
घ. अनुक्रमांक

ड. विद्यालय का नाम और डाक का पता
च. विद्यालय का टेलीफोन न. माबोइल न.
छ. राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
ड. विद्यालय प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर

सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक प्रतिभागिता प्रमाण भी जारी किया जाएगा। इसे एक बार फिर नोट किया जाए कि दो सर्वेत्तम प्रविष्टियां ही संबंधित राज्य के नोडल अधिकारी को भेजी जानी है। राज्य वार नोडल अधिकारियों की सूची www.bee.india.nic.in तथा ूयोजना www.engerymanagertraining.com पर उपलब्ध है।

विद्यालयों से प्राप्त प्रविष्टियों में से विशेषज्ञों की एक समिति 50 सर्वेत्तम पेंटिंग का चयन करेगी और चयनित छात्रों को 14 नवम्बर 2009 को नियत स्थान पर 2 घंटे की अवधि की राज्य स्तर ऑन दी स्पोट पेंटिंग प्रतिभागियों के लिए आमंत्रित किया जाएगा। चयनित छात्रों को राज्य स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता में भाग लेने के दिन नोडल अधिकारियों द्वारा 1000 रू. का नकद भुगतान किया जाएगा। उन्हें यात्रा खर्च की प्रतिपूर्ति भी योजना में उल्लेखित नियम अनुसार की जाएगी।

राज्य स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता के लिए 10000 रू. का प्रथम पुरस्कार, 8000 रू. का द्वितीय पुरस्कार, और 5000 रू. का तृतीय पुरस्कार तथा 1000 रू. के 10 सांत्वना पुरस्कार उसी दिन 14 नवम्बर 2009 को नोडल अधिकारियों द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में प्रदान किए जाएगें।

राज्य स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता का पहला, दूसरा तथा तीसरा इनाम जीतने वालों को 12 दिसम्बर 2009 को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए दिल्ली बुलाया जाएगा और 14 दिसम्बर 2009 को परिणामों की घोशणा की जाएगी। दो व्यस्क (अभिभावक, शिक्षक, माता–पिता) प्रत्येक छात्र के साथ आ सकते हैं। आवास तथा आने तथा जाने की यात्रा के खर्च हेतु प्रतिभागी को आकस्मिक व्यय के रूप में 1000 रू. दिए जाएगें।

राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं को एक प्रथम इनाम एक लाख रूपये का, 4 द्वितीय ईनाम 50–50 रूपये हजार के, तृतीय ईनाम 25–25 रूपये हजार के, 10 सांत्वना इनाम 10000 रू. के 14 दिसम्बर 2009 को दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस कार्यक्रम में प्रदान किए जाएगें।
राष्ट्रीय कार्यकलापों में आपके विद्यालय की तथा सक्रिय प्रतिभागिता स्कूली बच्चों, माता–पिता तथा शिक्षकों को ऊर्जा संरक्षण के महत्व के संबंध में सुग्राही बनाने तथा शिक्षित करने में सहायक होगी जो देश में ऊर्जा संरक्षण आंदोलन को दूर तक आगे ले जाएगी।

भवदीय,

(सी. गुरूमूर्ति)
निदेशक (शैक्षणिक)

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054

02. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
03. निदेशक, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
04. अपर महानिदेशक, सेना शिक्षा महानिदेशालय, ए–विंग, सेना भवन, डीएचक्यू–पीओ, नई दिल्ली।
05. शिक्षा उपनिदेशक, सीमा सुरक्षा बल, ब्लाक–10, सीजीओ काम्पलैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली–110003
06. सचिव, एडब्ल्यूईएस, सेना मुख्यालय, एडयुटेंट जनरल ब्रांच, सीडब्ल्यू–4, एडब्ल्यूईएस, पश्चिमी ब्लाक नं0 3, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110022
07. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
08. सचिव एवं शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
09. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
10. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
11. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
12. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
13. सीबीएसई के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
14. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
15. सीबीएसई के सभी विभागाध्यक्ष एवं अन्य अधिकारी
16. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
17. शिक्षा अधिकारी (मानविकी) सीबीएसई को इस अनुरोध के साथ की परिपत्र को सेनबोसेक के आने वाले संस्करण में मुद्रित कराया जाए।

fun'kd ¼'k{kf.kd½

d`Unh; ek/;fed f'k{kk cksMZ

शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र
प्रीत विहार दिल्ली–110092

सीबीएसई/एके/ईओ/एल/2009 दिनांकः 17.09-2009

परिपत्र स0ः 38

सीबीएसई से संबद्ध स्वतंत्र
सभी विद्यालयों के प्रमुख

fo"k;% Qjojh 2010 esa ,ulhbZvkjVh }kjk i;kZoj.k ij cky jk"Vªh; lEesyu esa Hkkx ysus ds fy, fuea=.k

प्रिय प्रधानाचार्य,

पृथ्वी की जलवायु उत्कृष्ट संतुलन का परिणाम है जिसमें सूर्य, वायुमण्डल, महासागर, जल प्रणाली, पाधे, जीव तथा स्थलाकृति सम्मिलित है। इनमें मिश्रित प्रतिक्रिया का परिणाम सही जलवायु संतुलन है। सैंकडों वर्षों पहले अत्यधिक तथा अविचारी मानवीय कार्यकलापों के कारण जलवायु में हो रहे शीघ्रगामी परिर्वतन गंभीर पर्यावरणीय चिंता के कारण हैं क्योंकि इसका असर पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी पर होगा। इसे कम करने के लिए तेजी से कार्य करने का यह सही समय है।

बोर्ड ने अपने पूर्व के परिपत्रों (सं. 08/2005, 24/2005, 8/2006) द्वारा विद्यालयों को अपने bdks Dyc (परिपत्र सं. 16 दिनांक 12-06-2001) के माध्यम से कार्यकलाप विधि में सभी कक्षाओं में पर्यावरणीय शिक्षा का पंबंध करने की सलाह दी गई है। बोर्ड द्वारा दो दस्तावेज अर्थात शिक्षक नियम पुस्तिका कक्षा 1 से 8 के लिए तथा शिक्षक नियम पुस्तिका कक्षा 9 के लिए प्रकाशित की हैं जिसमें कुछ महत्वपूर्ण कार्यकलाप समाहित हैं जो विद्यालयों द्वारा किए जाने चाहिए। ये प्रकाशन स्टोर, सीबीएसई, शिक्षा सदन, 17 राउज एवेन्यू नई दिल्ली 110092 में क्रमशः रु0 30/– तथा रु0 40/– की कीमत पर उपलब्ध हैं। शिक्षकों को नियम पुस्तिकाओं के आधार पर और अधिक ऐसे कार्यकलापों की युक्ति करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता तथा अतिसंवेदनशीलता उत्पन्न करने के लिए विद्यालयों द्वारा संचालित कार्यकलापों की विविधता के बारे में बोर्ड अवगत है जो कि परिवारों तथा समुदायों के लिए आवश्यक है । पर्यावरणीय मामलों पर युवा छात्रों के मतों तथा विचारों को वाणी देने के लिए एनसीईआरटी फरवरी 2010 में एक सप्ताह का 'बाल राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन' आयोजन कर रहा है। जिसका उद्देश्य छात्र समुदाय में पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में संवाद, सहभागिता तथा चर्चा के लिए एक मंच के रूप कार्य करना है। राष्ट्रीय सम्मलेन की विषय वस्तु है – 'वैश्विक जलवायु परिवर्तन तथा वैश्विक तापन' – आओ विचार करें और स्थानीय तथा वैश्विक रूप से कार्य करें।

सम्मलेन के दौरान चर्चा निम्नलिखित विषयवस्तुओं तथा उप विषयवस्तुओं पर केन्द्रित होगी :

विषयवस्तु	प्रस्तावित उप विषयवस्तु
जल	वर्षा जल संचयन, भूमिगत रीचार्जिंग, सभी के लिए पीने योग्य पानी, जल निकायों का संरक्षण, आर्द्रभूमि

वायुमण्डल	वायु प्रदूषण–तेजाबी वर्षा, विक्ति द्रव्य, ग्रीन हाउस गैसें तथा ओजोन परत क्षीणता
जैव विविधता	वनों की कटाई, स्थानीय वनस्पति सरंक्षण, विदेशी किस्में, वन्य जीवन संरक्षण, औशधीय पाधे, देसी किस्में, मनुष्य जानवर संघर्श की कमी
ऊर्जा	पारम्परिक तथा गैर पारम्परिक ऊर्जा के स्रोत – सौर ऊर्जा हरित ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जीवावशेष ईंधन का विवेकपूर्ण उपयोग।
कृशि	खाद्य सुरक्षा, कृशि में अभिनव प्रयोग, वानस्पतिक खाद, कृमि वानस्पतिक खाद, हरित खाद, जैव जंतुनाशक, जैव खेती।
परिवहन	कार पूलिंग, साईकिल परिवहन के साधन के रूप में, जन परिवहन का प्रयोग, हाईब्रिड वाहन।

बाल राष्ट्रीय सम्मलेन के बारे में नीतिगत दस्तावेज तथा दिशा–निर्देश सीबीएसई की वेबसाइट www.cbse.nic.in पर उपलब्ध हैं।

सम्मेलन में सहभागिता के लिए विद्यालयों द्वारा निम्नलिखित कार्रवाई करना आवश्यक हैं।

- भाग लेने वाले विद्यालय में सक्रिय रूप से क्रियात्मक bdk Dyc होना चाहिए।
- एनसीईआरटी सम्मेलन उन सभी छात्रों के लिए हैं जिनका जन्म जून 1996– जून 1998 के बीच हुआ हो।
- विद्यालयों को उनके स्थानीय क्षेत्र के अत्यधिक संगत अभिज्ञात विषय वस्तुओं पर परियोजनाएं बनाना अपेक्षित है । परियोजनाओं को पूर्ण अध्ययन तथा विचार– विमर्श के बाद विद्यालय तथा स्थानीय समुदाय को सम्मिलित करते हुए तैयार किए जा सकते हैं । एक बार परियोजनाएं पूर्ण होने पर, निष्कर्ष को एक रिपोर्ट के रूप में संकलित करना चाहिए।
- चयनकों, छात्रों तथा स्थानीय समुदाय में आगे चर्चा तथा विचार–विमर्श के लिए अपनी परियोजना निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए विद्यालय एक दिवसीय विद्यालय सम्मेलन का आयोजन करेगा । (5-10 अक्टूबर 2009)
- विद्यालय सम्मेलन के दौरान, चयनकर्ता राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि का चयन कर सकते हैं। जो सम्मेलन के दौरान प्रदर्शित प्रभावी नेतृत्व और सम्प्रेषण कौशलों तथा प्रस्तुत कार्य की गुणता के आधार पर होगा।
- सम्मेलन आधारित विचार–विमर्श के आधार पर भविष्य में कार्यान्वित करने हेतु विद्यालय के लिए कार्य योजनाएं तथा उत्तरदायित्वों के रूप में अपने परियोजना विषय वस्तु को विद्यालय आगे साकार बनाएगा।
- विद्यालय सम्मेलन कार्यवाही तथा परियोजना विकास की प्रक्रिया को उजागर करते हुए चित्रमय प्रदर्शन/ फ्लो चार्ट/पोस्टरों के एक कोलाज के साथ परियोजना पर विद्यालय एक आलेख विकसित करेगा।
- विद्यालय चयनित छात्रों का निर्धारित प्रपत्र में विवरण तथा आलेख व पोस्टर (केवल हिंदी और अंग्रेजी में) सीबीएसई को (15–30 अक्टूबर 2009) के बीच निम्नलिखित पते पर भेजेंगे–

  श्री अल हिलाल अहमद, सहायक शिक्षा अधिकारी
  केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा केन्द्र
  शिक्षा सदन, 17, राउज एवेन्यू, इंस्टिट्यूशनल एरिया,
  नई दिल्ली–110002

अधिक जानकारी के लिए विद्यालय सहायक शिक्षा अधिकारी, (ए एच), सीबीएसई को 011–23237780 पर सम्पर्क कर सकते हैं अथवा अपने प्रश्न sadhanap.cbse.@nic.in ई मेल कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सम्मेलन के सहभागियों से 10 प्रविष्टियां ब्राजील में जून 2010 में आयोजित होने वाले पर्यावरण पर बाल एवं युवा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन – 'आओ ग्रह की सुरक्षा करें' में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चयनित की जाएगीं।

भवदीय,

डा. साधना पराशर

शिक्षा अधिकारी

संलग्न– बाल राष्ट्रीय सम्मेलन के दिशा–निर्देश

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016
02. आयुक्त नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली –110048
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक जन अनुदेशन (विद्यालय) संघ राज्य क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर – 791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. सचिव, सेन्ट्रल तिब्बतन स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन,ईएसएसईएसएस प्लाजा, सामुदायिक केन्द्र सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली–110085 ।
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनसे संबंधित क्षेत्रों में बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के सभी शिक्षा अधिकारी तथा सहायक शिक्षा अधिकारी
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को यह परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ
12. पुस्तकालय तथा सीबीएसई के सूचना अधिकारी
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यकारी अधिकारी
14. परीक्षा नियंत्रक के वैयक्तिक सहायक
15. सचिव, सीबीएसई के वैयक्तिक सहायक
16. निदेशक (शैक्षणिक) के वैयक्तिक सहायक
17. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक
18. विभागाध्यक्ष (एडुसेट) के वैयक्तिक सहायक
19. जन संपर्क अधिकारी सीबीएसई

f'k{kk vf/kdkjh

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र, प्रीत विहार, दिल्ली

सं0 सीबीएसई / शैक्षि. / 2009 20 सितम्बर, 2009

परिपत्र सं0 39 / 20.09.2009

सी.बी.एस.ई से सम्बद्ध संस्थाओं के सभी प्रमुख

fo"k; % dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM ¼lhch,lb½ e ijh{kk l/kkj ,o lrr rFkk 0;kid eY;kdu A

प्रधानाचार्य महोदय / महोदया,

विस्तृत संदर्भ में शिक्षा का अर्थ एक वैश्विक समाज में सार्थक तथा फलदायी जीवन के लिए भावी नागरिकों को तैयार करना है। बहुलतावादी समाज में मिले–जुले समुदाय की जरूरत को पूरा करने के लिए शिक्षा के सशक्तीकरण की अत्यन्त आवश्यकता हे। मूल्यांकन यह जानने का एक साधन है कि ऐसी शिक्षा प्रदान करने में हम किस हद तक सफल रहे हैं। मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक अपरिहार्य अंग है क्योंकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की उपयोगिता निर्धारित करने तथा छात्रों द्वारा उनके समावेशन के निर्धारण की एक रीति आवश्यक है।

cká ijh{kk मुख्यतया 21 वीं शताब्दी के ज्ञान आधारित समाज के लिए अनुपयुक्त है और इसके लिए अभिनव समस्या–समाधानकर्ताओं की आवश्यकता है। यदि प्रश्न सही तरीके से नहीं बनाये जाते हैं, तो ये रटकर याद करने पर आधारित होते हैं और तर्क तथा विश्लेषण, पार्श्विक चिंतन, रचनात्मकता तथा निर्णयन जैसे उच्च श्रेणी के कौशलों की जांच करने में असफल साबित होते हैं। बाह्य परीक्षा विभिन्न प्रकार के अधिगमकर्ताओं एवं अधिगम वातावरण की अनदेखी करती है और चिंता एवं तनाव के अनावश्यक स्तर को पैदा करती है।

(एन सी एफ – परीक्षा सुधार पर स्थिति पत्र)

इसके लिए विद्यालय–आधारित मूल्यांकन की एक विश्वसनीय तथा क्रियात्मक प्रणाली की आवश्यकता है।

हमें छात्र के सम्पूर्णतावादी निर्धारण पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिसमें जीवन कौशल के सह–शैक्षिक क्षेत्र, अभिवृतियाँ तथा मूल्य, खेलकूद तथा खेलों के साथ–साथ पाठ्येतर क्रियाकलाप भी शामिल हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना का उद्देश्य इस ओर सम्पूर्णतावादी तरीके से ध्यान देने का है। कुछ समितियों तथा आयोगों ने पिछले वर्षो से लगातार इस संबंध में बाह्य परीक्षा के महत्व को कम करने तथा विद्यालय आधारित सतत तथा व्यापक मूल्यांकन द्वारा आंतरिक निर्धारण को प्रोत्साहित करने की संस्तुति की है।

इसलिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना परीक्षा से प्रभावी शिक्षा की ओर प्रतिमानात्मक परिर्वतन लाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा 2005 ने परीक्षा सुधार की उद्घोशणा करते समय यह भी कहा है – “वास्तव में, बोर्ड को दीर्घकालीन उपाय के रूप में कक्षा 10वीं की परीक्षा को वैकल्पिक बनाने पर विचार करना चाहिये, इस प्रकार विद्यार्थियों को उसी विद्यालय में अध्ययन जारी

रखने की अनुमति होनी चाहिए और जिन्हें बोर्ड के प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं है उन्हें इसके स्थान पर विद्यालय की आन्तरिक परीक्षा देने की अनुमति होनी चाहिए ।''

ekuuh; ekuo lalk/ku fodkl ea=h us Hkh ?kks'k.kk dh gS –''एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार परीक्षा सुधार प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जाए। इसमें कक्षा 10वीं की परीक्षा को वैकल्पिक बनाना और विद्यार्थियों को (जिन्हें बोर्ड के प्रमाण पत्र की आवश्यकता न हो) उसी विद्यालय में अध्ययन करने और बोर्ड की परीक्षा के स्थान पर आन्तरिक परीक्षा देने की अनुमति देना शामिल होगा।''

उपर्युक्त पृष्ठभूमि, सर्वेक्षण, देशभर में फैले विभिन्न स्टेकहोल्डरों के साथ परामर्श तथा सीबीएसई को दिये गये जनादेश के आलोक में, सीबीएसई ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सलाह से निम्नलिखित योजना को लागू करने का निर्णय लिया है ।

1- ckMZ dh ;kstuk %

1-1- lhfu;j lsdsaMjh Ldwy %

क. सीबीएसई से सम्बद्ध सीनियर सेकेण्डरी स्कूलों में अध्ययनरत छात्र, जो कक्षा 10वीं के बाद सीबीएसई प्रणाली से बाहर नहीं जाना चाहते हैं, उनकी 2011 से कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा नहीं होगी।

ख. तथापि, सीनियर सेकेण्डरी स्कूलों के ऐसे छात्र जो कक्षा 10वीं के बाद सीबीएसई प्रणाली से बाहर (प्री–यूनिवर्सिटी, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, बोर्ड का परिवर्तन) जाना चाहते हैं उन्हें बोर्ड की cká ¼fyf[kr@vkWuykbu½ ijh{kk देनी होगी।

ग. इसके अतिरिक्त, वे छात्र जो अपने समकक्षों की तुलना में स्वयं को आँकना चाहते हैं या अपना निर्धारण करना चाहते हैं, उन्हें उनकी माँग पर (लिखित/ऑनलाइन) दक्षता परीक्षा में शामिल होने की अनुमति होगी।

1-2 lsdsaMjh Ldwy %

सीबीएसई सेकेण्डरी स्कूलों में अध्ययनरत छात्रों को फिर भी ckMZ dh cká ijh{kk ¼fyf[kr@vkWuykbu½ esa 'kkfey gksuk dh vko';drk gksxh क्योंकि वे कक्षा 10वीं के बाद सेकेण्डरी स्कूल को छोड़ देंगे।

1-3 lHkh fo|ky;

1.3.1 सीबीएसई से lEc) leLr fo|ky;ksa esa vDrwcj] **2009** ls d{kk **9**oha esa lrr rFkk O;kid ewY;kadu (सीसीई) को सशक्त किया जाएगा।

1.3.2 सीबीएसई द्वारा विकसित एक वैकल्पिक अभिरूचि परीक्षा भी छात्रों के लिए उपलब्ध होगी। विद्यालय के अन्य रिकार्ड के साथ–साथ अभिरूचि परीक्षा कक्षा–11वीं के विषयों के चयन में छात्रों, अभिभावकों तथा अध्यापकों की सहायता करेगी। orZeku 'kS{kf.kd o"kZ esa d{kk

10 d lHkh Nk= lhch,lb ckM dh d{kk **10**oh dh **2010** dh ijh{kk nxA इस बोर्ड परीक्षा को सीबीएसई आयोजित करेगी। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा गणित में विद्यालय आधारित मूल्यांकन का भारांक पहले की तरह अर्थात 20 प्रतिशत होगा।

1.3.3 ubZ xzsMx i.kkyh dk **2009&10** d 'k{kf.kd l= l l d.Mjh Ldy Lrj ij ¼d{kk **9**oh ,o **10**oh½ ykxw fd;k tk,xkA गेडिंग योजना का पूर्ण विवरण अलग से सभी विद्यालयों को वितरित किया जा रहा है।

bl ;kstuk dk fooj.k rRdky lnHkZ d fy, ¼ifjf'k"V&1½ e lyXu gA

2- ;kstuk dsls lgk;rk djsxh\

उपर्युक्त कदम विद्यार्थियों तथा अभिभावकों की, जो विद्यालय शिक्षा के प्राथमिक साझेदार (स्टेकहोल्डर) हैं निम्नलिखित तरीके से सहायता करेंगे–

क. यह परीक्षा के पहले तथा बाद में पैदा होने वाले मानसिक तनाव तथा चिंता को कम करेगा, जो विशेष रूप से 13–15 वर्ष के आयुवर्ग के छात्रों पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है।

ख. यह विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों की दर को कम करेगा क्योंकि निष्पादन से संबंधित डर तथा तनाव कम हो जायेगा।

ग. पूर्व में प्रायः सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समय से काफी पहले समाप्त करने और प्री–बोर्ड परीक्षा तथा अध्ययन अवकाश के साथ इसका अनुसरण करने की परम्परा रही है । अब परीक्षा के लिए शिक्षण के बजाय अधिगम पर अधिक बल होगा।

घ. कक्षा में अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से संकल्पनाओं के स्पष्टीकरण पर बल दिया जाएगा क्योंकि पाठ्यचर्या के आदान–प्रदान के लिए अधिक समय उपलब्ध होगा।

ड. सतत तथा व्यापक मूल्यांकन योजना के एक भाग के रूप में सह–शैक्षिक पहलुओं पर बल देते हुये यह अधिगमकर्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होगा ।

च. छात्रों को शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क तथा भावनात्मक रूप से संतुलित बनाकर जीवन के लिए तैयार करने की आशा की जाती है।

छ. छात्रों के पास अब उनकी रूचियों, आदतों तथा व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अधिक समय होगा।

ज. यह छात्रों, अभिभावकों और अध्यापकों को कक्षा 11वीं के विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त विकल्प तैयार करने के लिए समर्थ बनाएगा ।

झ. यह भययुक्त स्थिति की बजाय अनुकूल वातावरण में अधिगम को प्रेरित करेगा।

ट. यह छात्रों को जीवन कौशलों, विशेष रूप से रचनात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन कौशल, सामाजिक कौशल, समस्याओं का सामना करने के कौशल से सुसज्जित करेगा और जब वे बाद में अति प्रतियोगिता वाले वातावरण में प्रवेश करेंगे तो उनके काम आएगा।

3- Çprkvk dk lek/kku &

सीबीएसई देशभर में फैले अपने स्टेकहोल्डरों से इस संबंध में विचार–विमर्श कर रही है। छात्रों/अभिभावकों द्वारा इस पहल से संबंधित अनेक मुद्दे उठाये जा सकते हैं क्योंकि यह भारत के किसी बोर्ड द्वारा पहली बार किया जा रहा है। ऐसे मुद्दों का संकलन तथा बोर्ड द्वारा एफ.ए.क्यू. (बार–बार पूछे जाने वाले प्रश्न) के रूप में दिये गये उसके समाधान सीबीएसई की वेबसाइट पर जल्द ही उपलब्ध होंगे। किसी भी स्पष्टीकरण की दशा में आप सीबीएसई वेबसाइट के माध्यम से लिख सकते हैं (विवरण नीचे हैद्ध या अपना पत्र अध्यक्ष, सीबीएसई को भेज सकते हैं। जिसके लिफाफे पर ''सीबीएसई परीक्षा सुधार'' लिखा हो ।

4- lrr ,oa O;kid eY;kadu fn'kk funs'k&

अधिकांश विद्यालयों को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के बारे में पहले से ही जानकारी है और वे उसे लागू कर रहे हैं। तथापि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन गुणवत्ता में सुधार के उद्देश्य से विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए जा रहे हैं जो विद्यालयों में पहुंच जाएंगे। यह सीबीएसई की वेबसाइट www.cbse.nic.in पर भी उपलब्ध होंगे।

5- izf'k{k.k dk;Z'kkyk,a

शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन साथ–साथ ही अक्तूबर 2009 से किया जाएगा। ये प्रशिक्षण कार्यशालाएँ Ldwyk ds iz/kkukpk;Z ,oa nks f'k{kd izfrfuf/k;ksa के लिए अनिवार्य होंगी । इनका ब्योरा सीबीएसई की वेबसाइट पर भी उपलब्ध होगा। प्रधानाचार्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक इसके बाद बोर्ड की योजना के बारे में जागरूकता पैदा करने और अभिभावकों की चिंता दूर करने के लिए अभिभावक–शिक्षक बैठकों में अभिभावकों के साथ बातचीत करेंगे।

6- Ldwy iz/kkukpk;ksZa ls vuqjks/k

सीबीएसई विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी गुणवत्ता मानदंड के बारे समझौता किए बिना छात्रों का निर्धारण करने के लिए विद्यालयों को सशक्त बनाने की इसकी योजना है। इसका अपने संबद्ध विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों पर पूर्ण विश्वास है और आशा है कि न्यूनतम संभव समय में निम्नलिखित कार्यवाही की जाएगी –

क. उपरोक्त योजना के बारे में अभिभावकों, शिक्षकों एवं छात्रों को जानकारी दें, विशेषकर जो कक्षा 9वीं एवं 10वी में हैं और tkx:drk mRiUu djus vkSj mUgsa lwpkxzgh बनाने के लिए इन छात्रों के अभिभावकों के साथ बात करें।

ख. orZeku 'k{kf.kd l= esa d{kk **9**oha के छात्रों की संख्या के बारे में सूचना एकत्र करें और उसे भेजें।

ग. ये आंकड़े संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय को संलग्न प्रपत्र ¼ifjf'k"V&2½ में **15 vDVwcj] 2009** rd fuf'Pkr रूप से भेजें।

7- vU; Li"Vhdj.k

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं के संबंध में व्यापक दिशा–निर्देश 'टीचर्स मैनुअल ऑन स्कूल बेस्ड एसेसमेंट' में जल्द ही उपलब्ध होंगे । यह सीबीएसई की वेबसाइट www.cbse.nic.in पर भी उपलब्ध होगा।

यदि इस संबंध में आगे किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो, तो कृपया www.cbse.nic.in पर लॉग ऑन करें और 'इंटरएक्ट विद चैयरमैन ऑन क्लास **X** बोर्ड एग्जामिनेशन' बटन पर क्लिक करें। इस विषय से संबंधित आपके प्रश्नों का उत्तर तत्काल दिया जाएगा।

सभी विद्यालयों के प्रमुखों को आवश्यक तैयारियॉ करने का निर्देश दिया जाता है ताकि उपरोक्त योजना को पूरी तरह लागू किया जा सके । बोर्ड को विश्वास है कि सभी प्रधानाचार्य उपरोक्त सुधारों को लागू करने में सहायता करेंगे।

शीघ्र प्रतिक्रिया के लिए प्रतीक्षारत।

भवदीय,

(विनीत जोशी)
अध्यक्ष एवं सचिव

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।

01. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली ।
02. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
03. निदेशक, जन अनुदेशन (विद्यालय), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सचिवालय सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
04. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्कम–737101
05. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791111
06. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर –744101
07. सचिव, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ई एस एस ई एस एस प्लाजा, कम्यूनिटी सेंटर 3, रोहिणी, दिल्ली –110085
08. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनके संबंधित क्षेत्र में बोर्ड से संबद्ध सभी विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ।
09. सीबीएसई के शैक्षिक शाखा के शिक्षा अधिकारी/सहायक शिक्षा अधिकारी।
10. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ ।
11. पुस्तकालय तथा सूचना अधिकारी, सीबीएसई ।
12. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यपालक अधिकारी
13. विभागाध्यक्ष (एआईईईई) के वैयक्तिक सहायक

v/;{k ,oa lfpo

ijh{kk l/kkj rFkk lrr ,o 0;kid eY;kdu dh ;ktuk

क. **d{kk&IX 2009&10 'k{kf.kd l=**

d{kk&IX e lrr ,o 0;kid eY;kdu dk l'kä cukuk ¼f}rh; l= väcj] 2009&ekp 2010)

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने प्राथमिक कक्षाओं में सतत तथा व्यापक मूल्यांकन वर्ष 2004 से आरम्भ किया था (परिपत्र सं0 5/18/25/04)। संपूर्णतावादी अधिगम के उद्देश्य से विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक के लिए उपलब्धि रिकार्ड तथा इसका प्रारूप वितरित किया गया था। इसका मुख्य बल अधिगम–कर्ता की क्षमताओं को पहचानने तथा उन्हें सकारात्मक निविष्टि(इनपुट) से समृद्व करने पर था। बोर्ड ने पाँच बिन्दुओं वाले निर्धारण स्केल की सिफारिश की इसने प्राथमिक कक्षाओं में उत्तीर्ण /अनुत्तीर्ण व्यवस्था को समाप्त करने की भी सिफारिश की (परिपत्र सं. 31/04/21/05)। बोर्ड ने इसका आगे अनुसरण करके इस योजना को कक्षा VI से VIII तक बढ़ाया है और इसके लिए विद्यालय आधारित निर्धारण पर आधारित एक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्ड विकसित किया है । (परिपत्र सं. 02/06)

2- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की योजना को सभी संबद्ध विद्यालयों में अक्तूबर, 2009 से और अधिक सशक्त बनाया जाएगा। कक्षा–IX के छात्रों का निर्धारण सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से विद्यालयों द्वारा अपने आप किया जाएगा। सशक्त सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना orZeku 'k{kf.kd o"k d f}rh; l= l d{kk&IX e ykx gkxhA ¼väcj] 2009& ekp] 2010½ A

3. lkekU;r% lrr ,o 0;kid eY;kdu d mn~n'; से एक शैक्षणिक सत्र को दो सत्रों में बॉटा गया है। पहला सत्र vily&flrEcj तथा दूसरा सत्र väcj&ekp होगा ।

4. कक्षा–IX एवं X में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अभिप्राय दो शैक्षणिक वर्षों में प्रत्येक दो सत्रों के समय विस्तार में शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक दोनों क्षेत्रों के मूल्यांकन द्वारा अधिगम–कर्ता की सम्पूर्ण रूपरेखा उपलब्ध कराना है।

4-1 'kf{kd {k=k dk eY;kdu %

शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन हेतु प्रत्येक सत्र में nk jpukRed fu/kkj.k तथा ,d ;kxkRed fu/kkj.k होगा।

4-1-1 jpukRed fu/kkj.k%

रचनात्मक निर्धारण एक साधन है जिसका उपयोग शिक्षकों द्वारा भयमुक्त एवं सहायक वातावरण में विद्यार्थी की प्रगति को निरंतर रूप से मानीटर करने के लिए किया जाता है। यदि प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जाए तो यह अध्यापक के कार्यभार को कम करते हुए और बच्चे का आत्म सम्मान बढ़ाते हुए छात्र के निष्पादन में विस्मयकारी ढंग से सुधार ला सकता है। रचनात्मक निर्धारण की कुछ मुख्य विशेषताएं हैं कि यह नैदानिक एवं उपचारी है, विद्यार्थियों को प्रभावी प्रतिपुष्टि प्रदान करता है, विद्याार्थियों को उनके अपने अधिगम में

सक्रिय रूप से सम्मिलित होने का अवसर देता है, निर्धारण के परिणामों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का समन्वय करने के लिए शिक्षकों को समर्थ करता है और विद्यार्थियों के आत्म प्रेरण तथा आत्मसम्मान पर पड़ने वाले गहन प्रभाव को स्वीकार करता है – इन दोनों का अधिगम पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है ।

इस बात की विशेष संस्तुति की जाती है कि विद्यालय को रचनात्मक निर्धारण को केवल पेपर–पेंसिल (लिखित) परीक्षा तक सीमित नहीं रखना चाहिए । परीक्षा के कई अन्य साधन हैं; जैसे– क्विज,संवाद, साक्षात्कार, मौखिक परीक्षा, दृश्य परीक्षा, प्रोजेक्ट, प्रयोगात्मक एवं आबंटित कार्य आदि ।

bl o"kZ d{kk&**IX** ds ¼'k"k½ f}rh; l= ds fy, doy nks jpukRed fu/kkZj.k gksxsA

;g lykg nh tkrh gS fd fo|ky; nks ls vf/kd ,sls fu/kkZj.k dj ldrs gSa vkSj mueas ls loksZŸke nks dks ys ldrs gSaA

आवधिक रूप से किए गए निर्धारण विद्यार्थियों/अभिभावकों को दिखाए जाएंगे ताकि सतत सहभागिता सुधार को बढावा दिया जा सके।

4-1-2 ;ksxkRed fu/kkZj.k %

योगात्मक निर्धारण अनुदेशन के अंत में निष्पादन का अंतिम निर्धारण है। l= dh lekfIr ij gksus okys ;ksxkRed fu/kkZj.k के तहत निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर छात्रों की आंतरिक रूप से परीक्षा ली जाएगी–

क. कक्षा–IX की पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम वही रहेगा जो बोर्ड द्वारा पहले ही परिचालित किया गया है।

ख. योगात्मक निर्धारण पैन–पेपर (लिखित) परीक्षा के रूप में होगा जो स्वयं विद्यालयों द्वारा किया जाएगा। यह प्रत्येक सत्र के अंत में किया जाएगा।

ग. मानक सुनिश्चित करने तथा निष्पक्षता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए विभिन्न विषयों में प्रश्न–बैंक बोर्ड द्वारा विद्यालयों को मार्च 2010 में भेजे जाएँगे।

घ. उत्तर देने की गति में अंतराल देने के उद्देश्य से अवसान सत्र योगात्मक निर्धारण के दौरान विद्यार्थियों को पर्याप्त समय देंगे।

ङ. bl o"kZ d{kk&**IX** ds Nk=ksa ds fy,] f}rh; l= ¼'k"k½ ds fy, doy ,d l=kar ;ksxkRed fu/kkZj.k gksxk tks ekpZ **2010** esa fd;k tk,xkA

च. उत्तर–पुस्तिकाओं का मूल्यांकन बोर्ड द्वारा उपलब्ध कराई गई अंकन योजना के आधार पर स्कूल अध्यापकों द्वारा अपने आप किया जाएगा।

छ. विद्यालयों द्वारा अपनाई गई निर्धारण प्रक्रिया का यादृच्छिक सत्यापन बोर्ड पदाधिकारियों/बोर्ड द्वारा नियुक्त नामिति व्यक्तियों द्वारा किया जाएगा।

रचनात्मक fu/kkZj.k ,oa ;ksxkRed fu/kkZj.k का भारांक निम्नानुसार होगा :–

l=	fu/kkZj.k dk izdkj	'kSf{kd l= esa Hkkjkad izfr'kr	l=okj Hkkjkad	;ksx
izFke l= (अप्रैल–सितम्बर	रचनात्मक निर्धारण –1	10%	रचनात्मक निर्धारण 1+2 = 20%	रचनात्मक=40% योगात्मक= 40% dqy **100%**
	रचनात्मक निर्धारण –2	10%		
	योगात्मक निर्धारण–1	20%	योगात्मक निर्धारण–1 =20%	
f}rh; l= (अक्तूबर– मार्च)	रचनात्मक **निर्धारण –3**	10%	**रचनात्मक निर्धारण** 3+4= 20%	
	रचनात्मक निर्धारण –4	10%		
	योगात्मक निर्धारण–2	40%	**योगात्मक निर्धारण–2** =40%	

ukV% इस वर्ष, चूंकि योजना का आरंभ केवल द्वितीय सत्र से हो रहा है, रचनात्मक निर्धारण का भारांक 20 प्रतिशत और योगात्मक निर्धारण का भारांक 60 प्रतिशत होगा ।

4-2 lg&'kSf{kd {ks=ksa dk ewY;kadu %

4.2.1 शैक्षिक क्षेत्रों के अतिरिक्त, सह–शैक्षिक क्षेत्रों जैसे –जीवन कौशल, अभिवृति एवं मूल्य, क्रियाकलापों में सहभागिता एवं उपलब्धि जिसमें साहित्यक एवं सृजनात्मक कौशल, वैज्ञानिक कौशल, सौंदर्यबोधी कौशल तथा मंचीय कलाएं एवं क्लब तथा स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का भी मूल्यांकन किया जाएगा। अधिकांश विद्यालय इन क्षेत्रों से संबंधित क्रियाकलापों को पहले ही लागू कर रहे है । जीवन कौशल पर बल देते हुए किशोर शिक्षा कार्यक्रम के तहत विद्यालयों को प्रशिक्षित किया गया है। वर्ष 2006 में (परिपत्र सं. 9/06/29/07, 27 एवं 48/08) में आरंभ किए गए व्यापक विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के बारे में भी विद्यालयों को जानकारी है । तथापि विद्यालयों की सुविधा एवं तत्काल संदर्भ हेतु सह–शैक्षिक क्षेत्रों के तहत क्रिया–कलापों और उसके मूल्यांकन को भी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (नीचे पैरा देखें) के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तृत दिशा–निर्देशों में शामिल किया गया है ।

5. इस वर्ष, जैसा कि उपर बताया गया है, कक्षा–IX के छात्र केवल द्वितीय सत्र के लिए, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अनुसरण करेंगे। इसके लिए विद्यालय ekWMy QkeZsV ij fjiksVZ

dkM देंगे जो बोर्ड द्वारा अपने दिशा–निर्देशों के साथ भेजा जाएगा। रिपोर्ट कार्ड शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक क्षेत्रों में कक्षा–IX के द्वितीय सत्र के दोनों रचनात्मक एवं योगात्मक निर्धारणों को दर्शाएंगे।

6. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं के बारें में विस्तृत दिशा–निर्देश जल्द ही Vhpl euvy vku Ldy cLM ,lleV में उपलब्ध होगें। इसे सीबीएसई की वेबसाइट www.cbse.nic.in पर भी डाला जाएगा ।

7. यह योजना vkx 'k{kf.kd l=k e Hkh tkjh jgxhA

ख. d{kk&IX 2010&2011 'k{kf.kd l=

ये छात्र उपर वर्णित अनुसार दो सत्रों में फैले सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को पूरा करेंगे। पहला सत्र अप्रैल, 2010 से सितम्बर 2010 तक तथा दूसरा सत्र अक्तूबर, 2010 से मार्च, 2011 तक होगा। जैसा कि पैरा 4.1.1 एवं 4.1.2 में वर्णित है, रचनात्मक निर्धारण एवं योगात्मक निर्धारण विद्यालय आधारित निर्धारण का हिस्सा होगा तथा योगात्मक निर्धारण प्रत्येक सत्र के अंत में उस प्रश्न बैंक पर आधारित होगा जो बोर्ड द्वारा भेजा जा रहा है ।

ग. d{kk&X 2009&2010 'k{kf.kd l=

1. orZeku 'kf{kd o"kZ e d{kk&X d lHkh Nk=k dh lhchlbZ ckMZ dh d{kk&X **2010** ijh{kk yh tk,xh A सीबीएसई इस बोर्ड परीक्षा का आयोजन करेगा।

2. स्कूल आधारित निर्धारण का भारांक पहले की तरह वही रहेगा अर्थात विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं गणित के विषयों में प्रत्येक के लिए 20 प्रतिशत।

3. **2009&2010** 'k{kf.kd l= l ld.Mjh Ldy Lrj ij ¼d{kk&**IX** ,o **X**½ ubZ xzsfMx i).kkyh 'k: dh tk,xh A ग्रेडिंग योजना का विवरण जल्द ही विद्यालयों को अलग से परिचालित किया जाएगा।

4. सभी विषयों का पाठ्यक्रम एवं परीक्षा विनिर्देशन वर्तमान सत्र के दौरान परिपत्रों के माध्यम से स्कूलों को सूचित मामूली संशोधनों के साथ सेकेण्डरी स्कूल पाठ्यचर्या दस्तावेज 2010 (बोर्ड द्वारा मुद्रित) में दर्शाए अनुसार ही रहेगा । पाठ्यचर्या दस्तावेज एवं परिपत्र सीबीएसई की वेबसाइट (www.cbse.nic.in) पर भी उपलब्ध है।

?k- d{kk&X 'k{kf.kd l= 2010&2011 l vkx ½

1- lhfu;j ld.Mjh Ldy½

सीनियर सेकेण्डरी स्कूलों में कक्षा–X में कोई बोर्ड परीक्षा नहीं होगी क्योंकि विद्यार्थी उसी स्कूल में कक्षा–XI में प्रवेश करेंगे।

bu Nk=k dk fu/kkj.k l'kä lrr ,o 0;kid eY;kdu ;ktuk d vuqlkj lrr ,o 0;kid eY;kdu d ek/;e l fo|ky; }kjk vkrfjd :i l fd;k tk,xkA

tSlk fd Åij d{kk&IX (अक्तूबर, 2009 से मार्च, 2010 से द्वितीय सत्र के लिए) rFkk d{kk&X (दो सत्रों के लिए, अप्रैल, 2010 से सितम्बर, 2010 तक प्रथम सत्र और अक्तूबर–मार्च, 2011 से द्वितीय सत्र) ds fy, of.kZr है ।

शैक्षणिक वर्ष 2010–2011 के अंत में, छात्रों को बोर्ड द्वारा प्रेषित की जाने वाली पूर्व–मुद्रित स्टेशनरी में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा। ;g lrr ,oa O;kid ewY;kadu izek.k i= lHkh rjg ls ,d ckj iwjk gksus ds ckn ¼d{kk&IX rFkk X nksuksa ds fy,½ cksMZ inkf/kdkfj;ksa ds gLrk{kj gksrs {ks=h; dk;kZy;ksa dks Hkstus gksaxs A

तथापि बोर्ड lhfu;j lsds.Mjh fo|ky;ksa ds fuEufyf[kr Nk=ksa dks cká (लिखित/ऑनलाईन) ijh{kk (अलग से नीचे वर्णित) में शामिल होने के लिए लचीलापन अपनाएगा –

- जो छात्र प्री–यूनिवर्सिटी, व्यावसायिक कोर्स आदि में प्रवेश के लिए अपना अध्ययन समाप्त करना चाहते हैं।
- जो छात्र स्थानीय कारणों से अन्य राज्य बोर्डों के अन्य स्कूलों में जाना चाहते हैं।

इसके अतिरिक्त जो छात्र अपने समकक्ष छात्रों की तुलना में अथवा स्व पेरणा हेतु अपना निर्धारण कराना चाहते हैं, उन्हें 'ऑनलाइन डिमांड' (लिखित/ऑनलाइन) दक्षता परीक्षा में शामिल होने की अनुमति दी जाएगी।

2. lsds.Mjh Ldwy %

चूंकि छात्र इन स्कूलों से बाहर जा रहे होंगे इसलिए सेकेण्डरी स्कूल स्तर तक के सभी विद्यालयों में कक्षा–X के अंत में बोर्ड की बाह्य (लिखित/ऑनलाइन) परीक्षा होगी जिसका ब्योरा नीचे पैरा 3 में वर्णित है

ukV : सेकेण्डरी स्कूलों में कक्षा–IX एवं X के छात्रों को उपर्युक्त अनुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अनुसरण भी करना होगा। कक्षा–X के अंत में छात्रों को बोर्ड द्वारा उपलब्ध कराई गई पूर्व–मुद्रित स्टेशनरी पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।

3- cká ¼fyf[kr@vkuykbu½ ijh{kk%

- मुख्य रूप से अनुप्रयोग–उन्मुखी ये बाह्य (लिखित/ऑनलाइन) परीक्षाएं पाठ्यचर्या दस्तावेज 2011 में निर्दिष्ट उसी पाठ्यक्रम पर आधारित होंगी।
- ये सीबीएसई द्वारा प्रमाणित की जाएंगी।

M- vU;Fkk l{ke fo|kfFkZ;ksa ds fy, nh tk jgh NwV%

कक्षा–x की वर्तमान बोर्ड परीक्षाओं के लिए अन्यथा सक्षम बच्चों के लिए प्रदान की जा रही सभी रियायतों जैसे दृष्टि दोश के लिए लिपिक, वैकल्पिक विषयों का चयन, दृष्टि

दोश के लिए कम्प्यूटरों का प्रयोग, रचनात्मक के अतिरिक्त योगात्मक स्तर पर भी स्कूल आधारित निर्धारण में जारी रखने की आवश्यकता है। सह–शैक्षिक मूल्यांकन में भी इन छात्रों पर ध्यान दिया जाएगा।

p- vfHk:fp ijh{kk

1. बोर्ड अन्य स्कूल रिकार्ड के साथ एक अभिरूचि परीक्षा (वैकल्पिक) का प्रस्ताव करेगा जिसमें विद्यालय के रिकार्ड के साथ–साथ सतत एवं व्यापक मूल्यांकन होगा और जो कक्षा–XI में विषयों का चुनाव करने में छात्रों, अभिभावकों तथा शिक्षकों की सहायता करेगा।

2. छात्रों को दो बार अभिरूचि परीक्षा देने का अवसर प्रदान करने का बोर्ड का प्रस्ताव है, एक बार कक्षा–IX के अंत में, उसके बाद कक्षा–x के अंत में ।

N- d{kk&XI e: i:o:'k ¼'k{kf.kd l= 2011&2012½

1. कक्षा–XI में प्रवेश लेने के लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रमाण पत्र पर भरोसा किया जाएगा।

2- यह भी सिफारिश की जाती है कि कक्षा–XI में विषय आवंटित करने के लिए सह–शैक्षिक पहलुओं, विशेष रूप से जीवन कौशल तथा खेलकूद में उत्कृष्टता के लिए कुछ भारांक नियत किया जाए। विषय निर्धारित करने के लिए एक बहुप्रयोजनी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। vfHk:fp ijh{kk] 'kf{kd fu"iknu rFkk lg&'kf{kd miyfC/k;k&lHkh dk egRo nu dh vko';drk gA

3. कक्षा–XI में प्रवेश के लिए अन्य किसी विद्यालय से आने वाले छात्रों की अपेक्षा उसी विद्यालय के छात्रों को वरीयता दी जाए।

परिशिष्ट–2

dUnh; ek/;fed f'k{kk ckM

'k{kf.kd l= **2009&2010** d fy, d{kk&**IX** d MkVk lxg.k gr ii=

विद्यालय का नाम...

पूरा पता...

विद्यालय कोड (परीक्षा कोड)..

संबद्धता संख्या...

संबद्धता स्थिति (सेकेण्डरी / सीनियर सेकेण्डरी)...

सम्पर्क टेलीफोन (कार्या.)....................निवास.................मोबा0............

ई–मेल आई.डी. (विद्यालय) ....

ई–मेल आई.डी. (प्रधानाचार्य / प्रधानाचार्या)..

कुल संख्याः क. कक्षा–IX में अनुभाग (सेक्शन).....३..............३.

ख. कक्षा–IX में छात्र संख्या............................३.

ग. कक्षा–IX को पढ़ाने वाले शिक्षकों की संख्या ....

कोई विशिष्ट रूप से योग्य छात्र हो, तो विशेष ब्योरा ....
(कृपया अलग शीट संलग्न करें)

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त सूचना सही है।

दिनांक सहित हस्ताक्षर..............................

प्रधानाचार्य का नाम...............................

विद्यालय की मोहर..................................

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2, सामुदायिक केन्द्र, प्रीत विहार, दिल्ली

सं0 सीबीएसई / शैक्षि. / 2009 | 29 सितम्बर, 2009
परिपत्र सं0 40 / 29-09-2009

सी.बी.एस.ई. से संबद्ध सभी संस्थाओं के प्रमुख ।

fo"k; %& orZeku 'kS{kf.kd o"kZ 2009&10 ls d{kk IX ,oa X ds fy, lrr ,oa lexz ewY;kadu Lrj ij xzsfMx vkjEHk djuk A

प्रिय प्रधानाचार्य,

विद्यार्थियों की गुणवत्ता को आंकने के लिए मूल्यांकन एक आवश्यक मानदण्ड प्रदान करता है। यह शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यह अध्यापकों एवं विद्यार्थियों दोनों को नियत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु एक उद्देश्य अनुभूति एवं प्रेरणा भी प्रदान करता है ।

सत्र परीक्षा चिन्ता एवं तनाव के साथ आती है । शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया जो छात्र के लिए अर्थपूर्ण समझी जाती है परीक्षा के इन नकारात्मक अर्थे के कारण अपना आनंद खो देती है ।

1- lanHkZ fuf'Pkr djuk

1.1 विद्यालय विद्यार्थियों के अंकों के आधार पर उनके पूर्व प्राथमिक वर्षो के प्रारम्भ से ही श्रेणीकरण करना शुरू कर देते हैं । ऐसी प्रवृति से अधिगम पर अनेक नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं । विद्यार्थी, अभिभावक और समाज कुल मिलाकर परीक्षा में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने के लिए चिंतित रहते हैं जो उन्हें अत्यधिक तनावपूर्ण अस्तित्व की ओर ले जाता है । इसके अतिरिक्त, यद्यपि परीक्षा की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए तमाम प्रयास किए जाते हैं, किंतु मानव भूल से नहीं बचा जा सकता है । इस कमी को तभी दूर किया जा सकता है जब विद्यार्थियों को अंकों की श्रेणी को चित्रित करने वाली योग्यता श्रेणी में रखा जाए ।

1.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (एनपीई) तथा कार्य योजना 1992 (पीओए) ने भी परीक्षा प्रणाली के सुधार पर विचार किया है और अन्य बातों के साथ–साथ अंकों के साथ पर ग्रेड का प्रयोग करने का सुझाव दिया है ।

1.3 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (एन. सी. एफ.) 2005 ने एक ऐसी मूल्यांकन प्रणाली पर विचार किया है जो कक्षा में विद्यार्थियों के नियमित क्रियाकलापों के आधार पर उनका श्रेणीकरण करेगी एवं विद्यार्थियों को रचनात्मक निर्धारण के एक अंग के रूप में इनके माध्यम से सीखने और उनके अधिगम भेदों पर फोकस करने एवं समझने में समर्थ बनायगी ।

1.4 परीक्षा में ग्रेड को आरंभ करने के बारे में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड़ (सीबीएसई) में पिछली कई विभिन्न समितियों और मंचों के माध्यम से चर्चा हो चुकी है । सीबीएसई ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आई.आई.एम.), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद् (एन.सी.ई.आर.टी.), भारतीय सांख्यिकीय संस्थान (आई.एस.आई.) एवं सीबीएसई से संबद्ध विद्यालयों तथा सीबीएसई के विशेषज्ञों सहित देश भर के प्रसिद्ध शिक्षाविदों के साथ परामर्श एवं विचार विमर्श किया है।

2. xzsMx dh ;kstuk

2.1 बोर्ड स्वयं तथा सभी स्टेकहोल्डर वास्तव में पिछले कुछ वर्षो से अनुकूल वातावरण उत्पन्न करके संख्यात्मक अंकन प्रणाली से ग्रेडिंग प्रणाली अपनाने के परिवर्तन की तैयारी कर रहे हैं । बोर्ड पहले ही चरणबद्ध ढंग से कक्षा 8 तक पूर्ण अंक आधारित ग्रेडिंग प्रणाली आरंभ कर चुका है ।

2.2 अब, इस प्रकार, सीबीएसई ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार से विचार विमर्श कर नौ बिन्दु ग्रेडिंग प्रणाली आरंभ करने का निर्णय लिया है ।

2.3 इस प्रणाली में, विद्यार्थियों के निष्पादन का निर्धारण पारम्परिक संख्यात्मक अंकन विधि का प्रयोग करते हुए किया जायेगा तथा बाद में उसे नीचे दिये गये ब्योरे अनुसार पूर्व निर्धारित अंक श्रेणी के आधार पर ग्रेडों में रूपान्तरित कर दिया जायेगा :–

vad dh Js.kh	xzsM	xzsM vad
91–100	,1	10-0
81–90	,2	9-0
71–80	ch1	8-0
61–70	ch2	7-0
51–60	lh1	6-0
41–50	lh2	5-0
33–40	Mh	4-0
22–32	bZ1	....
20 और कम	bZ2	....

2-4 cksMZ us orZeku 'kS{kf.kd o"kZ **2009**&1**0** ls d{kk **9** vkSj **10** ds fy, lsd.Mjh Lrj ij mi;qä xzsMx ;kstuk vkjEHk djus dk fu.kZ; fy;k gS A rnulkj cksMZ }kjk tkjh ^^fo"k;okj fu"iknu dk fooj.k** ds vuqlkj d{kk&1**0** ijh{kk **2010** ls doy xzsM gksxsA

2-5 mlh iadkj] fo|ky;ksa dks Hkh funsZ'k fn;k tkrk gS fd ifji= la[;k **39** fnukad **20** flrEcj] **2009** esa fn;s x;s C;kSjs vuqlkj lrr ,oa O;kid eY;kdu ¼lhlhbZ½ dh ;kstuk ds rgr d{kk **10** esa viuk Nk=ksa ds eY;kdu esa mi;qä xzsMx ;kstuk vkjEHk dh tk;s A

3- ;g dSls lgk;d gS\

3.1 ग्रेडिंग का प्राथमिक कार्य विविध स्टेकहोल्डरों को एक छात्र की उपलब्धि की मात्रा को प्रभावी ढंग से सम्प्रेषित करना है । विद्यार्थियों की ग्रेडिंग परीक्षा में प्राप्त अंकों की निर्णयन गुणवत्ता के भय को दूर कर देगी जिससे विद्यालय में तनावमुक्त एवं आनन्दयमय अधिगम का वातावरण बनेगा । इससे प्राथमिक स्तर से सेकेण्डरी स्तर तक निर्धारण पैटर्न में अर्थपूर्ण निरन्तरता बनाए रखने में सुविधा होगी ।

3-2 or'eku e: dk;kfUor dh tk jgh ;ktuk d: fuEufyf[kr ykHk gkx: (

- o यह अविश्वसनीय अंकों के आधार पर छात्रों के गलत वर्गीकरण को न्यूनतम करेगी ।
- o यह उच्च लक्ष्य प्राप्त करने वालों में हानिप्रद कटु प्रतियोगिता को दूर करेगी ।
- o यह समाजिक दबाव को कम करेगी और अधिगमकर्ता को अधिक लचीलापन प्रदान करेगी ।
- o यह उत्तम अधिगम वातावरण पर फोकस करेगी ।

4- ifjpkyu : ikRedrk

4.1 छात्रों के निष्पादन का मूल्यांकन l:[;kRed v:du की पारम्परिक विधि से किया जायेगा।

4.2 विषयवार निष्पादन का उल्लेख करते हुए ग्रेड प्रदान किए जाएंगे।

4.3 पैरा 2.3 की कि सारणी के अनुसार नौ बिंदु मापक्रम के आधार पर ग्रेड प्रदान किये जायेंगे।

4.4 सभी छात्रों को जारी किये जाने वाले ''विषयवार fu"iknu dk fooj.k** में केवल विषयवार ग्रेड दर्शाये जायेंगे।

4.5 विद्यालय की माँग पर राष्ट्रीय स्तर पर विषयवार प्रतिशत **प्राप्तांक/श्रेणी** उपलब्ध कराई जाएगी।

4.6 पूरक/अनुत्तीर्ण की घोषणा का चलन बन्द कर दिया जाएगा।

4.7 उन छात्रों को जो अध्ययन योजना के अनुसार अतिरिक्त विषय को छोड़कर सभी विषयों में अर्हता ग्रेड (डी या उसके उपर) प्राप्त करते हैं, vgrk i:ek.ki= प्रदान किया जायेगा।

4.8 वे छात्र जिन्होंने विषय में ई1 या ई2 ग्रेड प्राप्त किया हो, उन्हें अनुवर्ती 5 प्रयासों के माध्यम से अपने fu"iknu e: l/kkj करना होगा।
उदाहरणार्थ, एक छात्र जो मार्च 2010 की बोर्ड परीक्षा में शामिल हुआ वह केवल उन विषयों में जिसमें उसे ई1 या ई2 ग्रेड प्राप्त हुआ है, जुलाई 2010, मार्च 2011 और जुलाई 2011, मार्च 2012 और जुलाई 2012 में परीक्षा में शामिल हो सकता है जब तक कि वह अध्ययन की योजना के अनुसार अतिरिक्त विषय को छोड़कर सभी विषयों में अर्हता ग्रेड(डी या उससे उपर के) प्राप्त नही कर लेता और अर्हता प्रमाणपत्र प्राप्त करने का पात्र नहीं हो जाता।

4.9 जो अर्हता प्रामणपत्र प्राप्त करते हैं वे उच्च कक्षाओं में प्रवेश के लिए पात्र होंगे ।

4.10 वे छात्र जो अध्ययन की योजना के अनुसार अतिरिक्त विषय को छोड़कर सभी विषयों में अर्हता ग्रेड(डी या उससे उपर) पाने मे असमर्थ होगे उन्हें कक्षा 11 मे प्रवेश की अनुमति नही होगी।

4.11 सीबीएसई नियमों के अनुसार विशिष्ट रूप से योग्य छात्रों के लिए उपलब्ध छूट लागू रहेगी।

4.12 योजना कक्षा 9 के अंत में छात्रों को सम्प्रेषित शैक्षणिक निष्पादन के निर्धारण में सभी यथावश्यक परिवर्तन सहित लागू रहेगी।

5 <u>fpUrkvksa dk lek/kku</u>

सीबीएसई देश में अपने सभी साझेदारों (स्टेकहोलडर) से इस मामले में विचार–विमर्श कर रही है। छात्रों/ अभिभावकों द्वारा इस पहल के सम्बन्ध में कुछ मुद्दे उठाये जाने की संभावना है । ऐसे मुद्दों का संकलन बोर्ड द्वारा ,Q , D;¼ बार–बार पूछे जाने वाले प्रश्न) के रूप में किया जाएगा जो शीध्र ही बोर्ड की वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे। आगे किसी भी स्पष्टीकरण की दशा में आप अपना पत्र अध्यक्ष सीबीएसई को भेज सकते हैं जिसके लिफाफे पर ^^lhch,lbZ ijh{kk lq/kkj** लिखा हो। आप www.cbse.nic.in पर भी लॉग आन कर सकते हैं और ''इन्टरएक्ट विद चेयरमैन ऑन ग्रेडिंग इन क्लासेस'' IX-X बटन पर क्लिक करें। इस संबंध में आपके प्रश्नों के उत्तर तुंत दिये जायेंगे।

स्कूलों के सभी प्रमुखों को सलाह दी जाती है कि tkx:drk mRiUUk djus ,o lqxkgh cukus grq इस योजना के बारे में अभिभावकों, अध्यापकों और विशेषतः कक्षा IX और X के छात्रों को विस्तार से बताएं। väcj 2009 esa lrr ,oa 0;kid eY;kadu dks ckjs esa vk;kftr gksus okyh f'k{kd ifj'k{k.k dk;Z'kkyk esa xqÇMx ;kstuk dks dk;kZUo;u dks lcU/k esa foLrkj ls crk;k tk,xkA

भवदीय

¼fouhr tks'kh½

v/;{k ,oa lfpo

प्रतिलिपि :– नीचे निर्दिष्ट किये गये संबंधित निदेशालयों/केवीएस/एनवीएस/सीटीएसए के प्रमुखों को उनके अधिकार क्षेत्र के सभी संबंधित विद्यालयों को सूचना का प्रसार करने के अनुरोध के साथ प्रेषित :–

01. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, 18, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली –110016 ।
02. आयुक्त, नवोदय विद्यालय समिति, ए–28, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली ।
03. शिक्षा निदेशक, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली –110054
04. निदेशक, जन अनुदेशन (विद्यालय), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सचिवालय सेक्टर–9, चण्डीगढ़–160017
05. शिक्षा निदेशक, सिक्किम सरकार, गंगटोक, सिक्किम–737101
06. विद्यालय शिक्षा निदेशक, अरूणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर–791111
07. शिक्षा निदेशक, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सरकार, पोर्ट ब्लेयर –744101
08. निदेशक, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय प्रशासन, ई एस एस ई एस एस प्लाजा, कम्यूनिटी सेंटर सैक्टर 3, रोहिणी, दिल्ली –110085
09. सीबीएसई के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को उनके संबंधित क्षेत्र में बोर्ड से संबद्ध सभी विद्यालयों के प्रमुखों को यह परिपत्र भेजने के अनुरोध के साथ ।
10. सीबीएसई की शैक्षिक शाखा के शिक्षा अधिकारी/सहायक शिक्षा अधिकारी ।
11. संयुक्त सचिव (सूचना प्रौद्योगिकी) को इस परिपत्र को सीबीएसई की वेबसाइट पर डालने के अनुरोध के साथ ।
12. पुस्तकालय तथा सूचना अधिकारी, सीबीएसई ।
13. अध्यक्ष, सीबीएसई के कार्यपालक अधिकारी

14. सीबीएसई के सभी विभागाध्यक्षों के निजी सहायक

v/;{k ,oa lfpo